आचार्य श्री प्रवचन

(11.11.2016 से 12.01.2017 तक)

भाग-4

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

संकलन
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

11-11-16 "पकड़ो मन" प्रात: 9.15

इकबाल मैदान - चौकमन्दिर

तालाब में एक छोटा से छोटा कंकड भी फेंका - वह ऊपर नहीं आता, नीचे की ओर चला जाता है, यह सर्व विदित है। डूबता ही है, छोटा कंकड़ जिसका वजन नहीं के बराबर है। अब एक बड़ा लट्ठ है, कंकड़ की अपेक्षा लाखो गुना वजन

है, वह पानी में डूबेगा नहीं । क्यों? पहले से ही उत्तर दे रहे हो । लाखों गुना वजन है उस लकड़ी का एवं उसमें बहुत सारी गांठ भी है। उन गांठो को फोड़ नहीं सके अतः वह ईंधन के काम भी नहीं आ सकी। थोड़ा सा गौर करो / चिंतन करो । छोटा सा कंकड़ तो डूब गया और गांठ वाला लक्कड़ नहीं डूबा।

ऐसा क्यों हुआ ? वह हल्का नहीं । तराजू के एक पालड़े में वह कंकड़ तथा दूसरे में लट्ठ रखकर देख लो कि कौन भारी है। लम्बा - चौड़ा से कोई मतलब नहीं- गांठ इत्यादि से भी कोई मतलब नहीं । भीतर से पकड़ नहीं है तो लम्बा - चौड़ा व्यक्ति भी डूब जाता है और पकड़ हो तो छोटा व्यक्ति भी तैर जाता है।आप तालाब के किनारे रहते हो सोचलो।

दूसरी दृष्टि से पानी में सामान्य नहीं- विशेष लकड़ी डालते हैं तो वह गलती नहीं।सालों-साल भी पानी में ही डूबी रहती है ,जब की पत्थर गल जाता है क्यों? लकड़ी ने पानी को पकड़ा नहीं और पत्थर ने पानी को पकड़ लिया। पानी के जहाज के नीचे बड़ी- बड़ी लकड़ी के स्लीपर रख देते हैं, वह जहाज उनके सहारे तैरता रहता है। समुद्र में वह लकड़ी सदैव ही डूबी रहती है, पर पानी को भीतर नहीं आने देती।

आप लोग सोचो पेट में थोड़ा सा भी पानी ज्यादा हो जाये तो तुरंत अस्पताल ले जाते हो। इस तरह की वस्तुओं को मत पकड़ो की चिकित्सालय की ओर जाना पड़े। सड़-गलकर मिटना पड़े। दिया जलाने के उपरान्त भी दिया का प्रभाव नहीं पड़ता ।उदाहरण आपके सामने दिया।अभी कह रहे थे की महाराज! ऊपर देखकर आशीर्वाद दे दें। ऊपर देखता हूँ, कोई दिखता भी तो नहीं है। ऊपर तो वो हैं जो भगवान बन गये हैं,

नीचे देखता हूँ तो मुझे होनहार भगवान दिख रहें है। अभी तो होनहार भगवान की चिंता है। आप भरोसा पक्का करो। एक-आधा रूपांक मांगते है। हम बाद में रूपांक के पक्षधर नहीं है। अपने को स्वयं ही अध्ययन करना है, स्वयं ही लिखना है, और स्वयं ही निर्णय लेना है।

अभी हम विहार में है। विहार में नहीं। इनलोगों को लग रहा था- जाते समय भी चौक रह गया था, अबकी बार ऐसा न हो। हमने भी सोचा कि देखते है चौक कहाँ तक पूरा है। लेकिन कल इतनी भीड़ थी कि नीचे चौक कहाँतक पूरा है दिख ही नहीं रहा था। जो कोई भी उपासना के केन्द्र है, आस्था के साथ अपने जीवन की यात्रा पूर्ण करेंगे, इसी भरोसे के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

सांय 3.00 विहार भानपुर के लिये

12-11-16 "विधान नहीं संविधान् रचो" प्रातः 10.00

भानपुर मन्दिर, आज का यह सुअवसर। भोपाल का ही एक मोहल्ला समझना चाहिये। आकस्मिक ही सब लोगों के सामने यह कार्य आ गया। चक्रवर्ती की दिग्विजय यात्रा होना था। नगर प्रवेश के पूर्व ही रुक गये। नगर प्रवेश होने से पूर्व ही रुक गये। चक्ररत्न ने प्रवेश के लिये मना कर दिया। नगर प्रवेश होने से पूर्व बहुत सोच विचार कर करना पड़ता है।

अभी बाहुबल के आधारपर भेंट करना बाकी है। चौक से विहार किया। भानपुर प्रवेश-द्वार था वहां चक्रव्यूह की रचना कर दी। आगे नहीं जा सकते है। किसने रोका। भगवान ने रोका। अगवानी के लिये। भोपाल वालो तैयारी करो, भगवान आने वाले है। प्रायःकर मुनिमहाराज या आर्यिका

संघ कहते हैं अभी नहीं आना हमें अगवानी करना है। यहाँ वेदी खाली है- भगवान आ रहे हैं, पूरा भोपाल तैयार हो जावें। सभी मोहल्ले वाले शुभ-द्रव्य लेकर तैयार रहें। बारात के आने से पूर्व तैयारी करनी पड़ती है।

अन्यत्र कमेटी पहले बन जाती है, वेदी बन जाती है, श्री जी आ जाते हैं। यहाँ सब क्रम से हमारे ही सामने होगा। हबीबगंज में कह रहे थे विधान के लिये। वहाँ विधान करते यहाँ संविधान रच रहे हैं। वहाँ की कमेटी भी है, यहाँ की कमेटी भी है। गजरथ महोत्सव होना है- सब हो जायेगा। नियुक्तिकरण हो रहा है। भगवान जी भी आने वाले हैं। मांगलिक कार्यक्रम के लिये मंगल वातावरण होना जरूरी है। हम भी इसी में शामिल होने जा रहे हैं। ज्यादा तो अभी नहीं कह सकता, समय अधिक हो गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

13-11-16 "आओ माँजे दृष्टि" प्रातः 9.15

एक व्यक्ति प्रयास करके देखता है- देखने से चन्द्रमा पीला दिख रहा है। मित्र ने कहा मैं भी आजमा लेता हूं, उसको पीला नहीं दिखा। बहुत परीक्षा कर भी उस व्यक्ति ने एक-दो बार नहीं बार-बार देखा पर चन्द्रमा पीला ही दिख रहा है। हमारी निगाह सदैव पर को देखने में ही लगी है। उसमें सृष्टि ही आती है, दृष्टि नहीं आती। दृष्टि में आते ही है, सृष्टि आ जाती है। वह व्यक्ति चन्द्रमा पीला है, सबलोगों को बताने लगा।

वैद्य जी के पास पहुँचा। उनसे बोला चन्द्रमा पीला दिख रहा है। वैद्य जी ने कहा तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। आपकी आँखें पीला बता रही हैं। आँखों को ठीक करना होगा। जो मैं देख रहा हूं, वह आपको नहीं दिख रहा है।

अब पार्टी बदल दो। ये कुछ समय के लिये परिवर्तन है। स्थायी न हो जाये इसलिये आपकी चिकित्सा की आवश्यकता है। इन शेष लोगों को बाद में देखेंगे पहले आपकी चिकित्सा करना अनिवार्य है।

एक रोग होता है, उसमें रोगी को पहले पता नहीं लगता है, वह धीरे-धीरे अपना अड्डा जमा लेता है। धीरे-धीरे अपना साम्राज्य फैला लेता है। सामने वाले व्यक्ति को कमजोर करना प्रारम्भ कर देता है। भूख-प्यास आदि पर भी प्रभाव डालता है बढ़ता-बढ़ता आंखो पर आ जाता है। डा. राजेश - पीलीया कहते है। आयु.-वैद्य जी होते तो पहले ही समझ लेते, ऐलोपैथी वाले हैं - जोन्डिस बोलते हैं। हमारी दृष्टि में रोग है। जो इसे मान लेता है उसी को सम्यग्दृष्टि कहते हैं। आज ऐसे तैयार नहीं होते हैं।

पिलीया वाले को तो वस्तु पीली ही दिखेगी। स्वयं ने पीलिया को अच्छे ढंग से पी लिया। आंखो तक बाद में आता है पहले नीचे एड़ी से चढ़ना प्रारम्भ करता है। नाखुन-हथेली जहाँ-जहाँ ललाई दिखती है वहाँ-वहाँ पीलापन आ जाता है। बाद में कोई भी भोजन आदि रुचेगा नहीं। अब हम जो बताते हैं वो करते जाओ।

हल्दी नहीं लेना वो तो पीली पहले से ही होती है। घी नहीं लेना- पहले ही टपक रहा है। दुग्ध आदि चिकनाई की कोई वस्तु नहीं लेना। केवल गन्ने का रस ले सकते हैं, गन्ना चुस ले तो और अच्छा होगा। आंखों में रोग है पर अपनी आंख स्वयं को देख ही नहीं पा रही है। डॉक्टर अपनी चिकित्सा स्वयं नहीं कर सकता। डा. साहब सुन रहे हैं? मेरे पास नहीं आना। आंखे अपने को नहीं पकड़ पाती। इसके अतिरिक्त बाद में आने वाले रोगी

को भी पहले पकड़ लेती है, वही दृष्टि सम्यक् कहलाती है। वही ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहलाता है और उसी अनुसार आचरण करने को सम्यक् चारित्र कहा जाता है। मोक्षमार्ग को सुधारना है तो दृष्टि को सुधारना है, सृष्टि को नहीं।

दृष्टि सुधारने हेतु भगवान को देखो। उन पर श्रद्धान जमाओ। उन्हें देखकर हम भी शुभ्र / शुद्ध और प्रभु बन सकते हैं। प्रभु को देखने से ये विश्वास हो जाता है। आप लोग पंचकल्याणक का संकल्प लेने आ रहे हैं। संकल्प कितना दृढ़ है ये आप लोगों को देखकर ज्ञात हो जाता है। बुंदेलखण्ड का किला काँपी हो गया। हमें भी बुंदेलखण्ड में रहते काँपी दिन हो गये।

सृष्टि को माँजना है यह संकल्प अच्छा है किन्तु पहले अपना माँजना है। अपने पात्र को पहले मांजना है। मंजन लगाकर शुद्ध बनाने की प्रक्रिया करना ही भावों को शुद्ध करने का प्रयास करना है। इस समझने का प्रयास करो। जहाँ से उत्पन्न होता है - वहीं से अशुद्धि है। अतः वहाँ पर ही शुद्धि होना अनिवार्य है। हवा की गंध जहाँ से चालु हो वहाँ जैसी होगी - आगे वैसी ही रहेगी। जैसा खायेंगे डकार वैसी ही आयेगी। खीर खायी है या महेरी खायी है, आपको जानना होगा।

अपने भावों को मांजने से पूर्व जहाँ से भाव उत्पन्न होते हैं, उसे शुद्ध करने का संकल्प करें। पंचकल्याणक के लिये भी शुद्ध भावों की जरूरत होती है। फिर यहाँ तो एक व्यक्ति द्वारा नहीं अनेक व्यक्तियों द्वारा यह सम्पन्न होना है। अब मन बना लो। मन बनाओ का मतलब अब तैयार हो जाओ। चौके में भी सुनता हूँ, ग्रास बनाओ मतलब रोटी है उसके ग्रास बनाओ। दलिया बनाओ, दलिया बनाना नहीं है, जो बना है उसे संशोधित, घी आदि डालकर ले आओ।

बाद में यह भाषा हमें समझ में आ पायी। मन बना लो। मन नहीं बनाओगे तो महमान तैयार नहीं होगा। घर है सीमित, भोपाल से लगा हुआ है, फुदलाद कर लो। महमान आ जायें आप कहाँ - कहाँ जाओगे। बारात आती है। महमान कहता है, आपको कुछ नहीं करना, आप तो निमन्त्रण भर देओ। शेष सब तो फोकट में हो जायेगा।

जाना और बुलाना ये निमन्त्रण की पद्धति है। इसी को सामाजिक, रिति - रिवाज कहते हैं। आज यह आपका तीसरा दिन हो गया। बीच में चौक मिल गया था। हमें लाने के पूर्व तो आप कह रहें थे महाराज भोपाल चलो - ३, यहां आने पर अब चौक चलो, टी. टी. नगर चलो, साकेत नगर के संकेत करने लगे। ये महानगर है। नगर में जायेंगे तब कहोगे महाराज इते - इते ही हमारे घर पर चलो। भावना तो करना ही चाहिये। इस भव में न मिले तो आगे सही।

पीलिया हो गया उसे याद रखो। वैद्य जी ने उसे अच्छे से निरोग करके शुद्ध बनाया। हम सभी को भी अनादिकाल से वह पीलिया रोग हो गया। हमारे राजवैद्य तो प्रभु है, वे ही हमारी स्थायी चिकित्सा करेंगे। ऐलो पैथी में स्थायी इलाज नहीं। वे तो कहते हैं बस हमारी दवाई लेते रहो - कभी भी अमर नहीं बन सकते। हमारे यहाँ ऐसा नहीं है। एक बार दवा लेना प्रारम्भ कर दिया तो अब निश्चित रूप से रोग को ठिक करके ही रहेंगे। सभी का रोग ठिक हो इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

14-11-16 "गन्ना नहीं करेला" प्रातः 9:15

मेघो से वर्षा होती है, सामान्य रूप से उस वर्षा में मिठास होती है। पानी तपकर के गया जो लवणदार था, जिसमें नमक रहता है, किन्तु सूर्य के प्रताप से लवण समाप्त हो जाता है, मीठापन आ जाता है। वह जल नीचे धरती पर आया और एक गन्ने के पेड़ में समा गया। अब लवण तो दूर हो गया उसमें ऐसी क्षमता आ गयी अब वह उद्दण्ड (डंडा) होता है, वह बहुत बुरा होने पर भी मीठा अच्छा बन जाता है।

बूढ़े के दांत नहीं होते फिर भी गन्ना खाना चाहते हैं। दूसरी तरफ वही पानी नीम अथवा करेला में चला गया। आपको रोगी किसने बनाया। मीठे के कारण डायबीटिज हो गयी। रक्त-रक्त में वह जम गयी। आपकी प्रकृति ही बन गयी - स्वभाव ही ऐसा हो गया। वह मीठा था इसलिये करेला के पास पहुँच गया। उसे देखकर करेला कहता है- चिंता की जरूरत नहीं हम सब ठीक-ठाक कर देंगे। मधुमेह की बिमारी है आपको। हमारी प्रकृति देखो लोग कटू कहते हैं, पर हम सबको मीठा बना देते हैं।

बोलते समय वचन कटू लगते हैं, पर बाद में काम कर देता है। कार्यकर्ताओं को संयम रखना चाहिये, अन्यथा पुलिस की भांति सबको ठिक कर देते हैं। मैं चाहता था जल्दी हो जाये, पर सब समय पर ही होता है। सब तरफ से बांध दिया गया है। दो तरह की दूरी होती है - जमीन (क्षेत्र) की दूरी एवं समय (काल) की दूरी। जमीन की दूरी तो आप चाहे जितने अल्प समय में पुरी कर सकते हैं किन्तु काल की दूरी के लिये प्रतिक्षा करनी होगी। काम करेंगे तभी काल की दूरी पुरी होगी। अब आप सबको एकता में काम करना है। पुरा भोपाल एकता में बंधने के लिये संकल्पित हो गया।

प्रेम-वात्सल्य के साथ चलेंगे तभी दूरी पूरी होगी। कोई गन्ना बन जाये तो कोई करेला बन जाये। केवल मीठा-मीठा से ही काम नहीं होता। हमेशा-हमेशा मुस्कान की भूख मत रखा करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

15-11-16 "संगत हो वितराग की" प्रात:9.15

कल विकार के बारें में बात कही थी। एक ही बूंद किस तरह विकृति पैदा करती है तथा वही बूंद विकृति दूर भी करती है। हमारे परिणामों से ही विकार पैदा होते हैं तथा हमारे ही परिणामों से विकार दूर भी होते हैं। दुनिया के बारें में सोचोगे तो विकारों का संसार ही आयेगा जबकि जो दुनिया से ऊपर उठ गये हैं सिद्धशिला पर जाकर बैठ गये उनका ध्यान लगाओगे तो संसार कम होता चला जायेगा।

भावों की गरीमा होती है, भावोंकी कीमत होती है। भाव कम हो जाते हैं माल अधिक होने पर भी घाटा लगता है जब कि भाव बढ़ जाते हैं तो थोड़ा माल भी अधिक लाभ देता है। अपने भावों में उदारता लाइये - भावोंका मूल्य समझिये। जैसे दूध है। दूध से विधीवत् घी बनाया। विधिवत् का मतलब दूध को तपाया फिर जमाया दही बनाया। दही का मंथन किया उससे नवनीत प्राप्त किया, नवनीत को भी तपाकर घी बनाया।

जो घी खाता है, वह पहलवान बनता है, किन्तु घी पच जाये तो अस्पताल जाना पड़ेगा। पचाने एवं बचाने की प्रक्रिया अलग-अलग है। भानपुर वालों को भी विकृति एवं संस्कृति क्या है? इसका भान हो गया, ऐसा लगता है। अकेला घी कभी भी पचाया नहीं जा सकता है, पहलवान भी नहीं बन सकता है। अनुपात का

भी ध्यान रखना जरूरी है। किसके साथ कितना लेना इसका भान होना जरूरी है। पंगत में बैठे हैं, निमन्त्रण से आये हैं लेकिन अपनी शक्ति अनुसार ही खा सकते हैं। भानपुर वालों को यह भी भान रहे कि ज्यादा न खिलायें।

वह बहुत पौष्टिक है, पौष्टिक को सीधा नहीं पचाया जा सकता है। पचाने की प्रक्रिया पहलवानों के पास होती है - दण्ड बैठक करते हैं। पसीना भी बहता है और सीना भी चौड़ा हो जाता है। इधर दण्ड बैठक और इधर घी के कटोरे को यूं ही उड़ा देता है। विकृति पैदा कर दी क्यों? घी था वह भी शुद्ध एवं पौष्टिक था। यदि बुखार के साथ सेवन करते हैं, तो बुखार बढ़ेगा। ऐसा बढ़ सकता है कि इलाज भी मुश्किल हो जाये।

अब वह वैद्य जी के पास गया और बोला बस वैद्यजी थोड़ा सा लिया था। वैद्य जी ने कहा - भूलने के उपरान्त थोड़ा सा भी जहर होता है। दूसरे को जहर हो तो पुलिस वारंट आ जाये, स्वयं अपने हाथ से जहर खा रहे हैं - भान तो रखो। इसी को "प्रज्ञापराध" कहते हैं। विषयों एवं प्रमाद के कारण ऐसा होता है, अब कोई बात नहीं है, जिससे यह घी निकला है उसको लाओ। वैद्य जी ने उस रोगी से कहा।

उसे तक्र / छाछ कहते हैं। शास्त्रकारों ने उसे निर्विकृति कहा है। निर्विकृति का मतलब वितरागता। उसी से निकलेगा। बाकी सब विकृति पैदा करेंगे। जब की वह तक्र विकृति को खायेगा / रोग को खायेगा / उसको पेट में पहुँचा दो वह सब बाहर निकालेगा। जो वितराग की उपासना करेगा वह वितराग बन जायेगा तथा जो राग की उपासना करेगा वह रागी बन जायेगा।

रोगी बने हुये हो। राग से बचकर आये हैं तो रागी से भी बचना होगा किन्तु रागियों से बचना बहुत कठिन है। दूर रहने के लिये कहा है। वैराग्य में बाधक होता है।

जैसे सोला पहनने के बाद दूर हो जा-2 अर्थात और सोले वालों से बचते हैं वैसे ही रागीयों से बचने की आवश्यकता है। आप तो दूर हो गये - हम कहाँ जायेंगे। तक्र कहता है मेरे पास आ जाओ सब ठिक-ठाक हो जायेगा। बस और कुछ भी नहीं लेना, दो बार तक्र लेना है। जैनाचार्यो ने अन्तिम घड़ियों में जो अभी पानी पर नहीं आया है उसे तक्र पर रखने को कहा। इस तक्र से योग शुद्धि होती है। अमृतवत् कहा इसे घी को अमृत नहीं कहा।

यह तक्र पौष्टिक एवं बलशाली नहीं फिर भी सभी विकारों को दूर करने वाला कहा है। गरीब के पास भी मिलता है। गरीब इसलिये बिमार नहीं उसे भान है। अमीर को तो रखने का ही भान है। इसलिये तक्र को निर्विकृति कहा क्यों कि वह अन्य से अपने गुणधर्म अलग ही रखता है। अस्वस्थ को भी स्वस्थ बना देता है, अपने परिणामों में वितरागता बनाये रखो, इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

16-11-16 "मैं नहीं हम को देखें" प्रातः 9.15

यह मंगलमय अवसर, एक-एक दिन कम होते जा रहे हैं। प्रतीक्षा की घड़ियाँ चल रही हैं। समय कम होता जा रहा है, काम कितना हो रहा है यह आपको देखना है। जब कभी व्यैक्तिक कार्य की जगह सामुहिक पुण्य का उदय होता है उसमें सब लोग समाहित हो जाते हैं। एक राजा के मात्र से कार्य नहीं होता पूरी प्रजा शामिल हो जाती है तब कार्य होता है पर

कहने में आता है कि राजा के द्वारा कार्य होता है। ये सामुहिक पुण्य ऐसा पुण्य है जिसका अनुमान लगाना कठिन होता है, सब लोगों का पुण्य विराट रूप से सामने आ जाता है।

नदी बहती है अपने विशाल रूप में किन्तु वह छोटी-छोटी नदीयों से मिलकर ही विराट रूप में हो पाती है। यह कार्यक्रम भोपाल नगर में हो रहा है - भानपुर उपनगर में सम्पन्न हो रहा है। सब लोगों ने श्रीफल चढ़ायें थे। सुनने में आ रहा है और आ रहे हैं। पुना से भी भगवान की प्रतिष्ठा हेतु ला रहे हैं। वर्षो से वहाँ के लोग प्रतिक्षारत थे। एक-दो श्रावकों ने ही मिलकर मन्दिर बनाया। कल ही आ गये उन्होंने कहा महाराज हम तो यही करना चाहते हैं। 4-5 feet की प्रतिमा जयपुर से आने वाली है।

कहाँ से पुण्य एकत्रित होकर समुद्र में मिल रहा है। अब बहती गंगा में आप भी..... हाथ नहीं धोनाडुबकी लगाना है। ऐसा अवसर मिला है। मैं सोच रहा था मैं भी इसमें शामिल होऊं। निमन्त्रण देंगे तब तो। ये लोग कह रहे हैं। सभी लोग जो भी शामिल हो रहे हैं आपके कारण हो रहे हैं। मूल कारण कोई और है जो जनता समझ नहीं पा रही थी। हमने कहा था - चातुर्मास समापन नजदीक आ रहा है। इन्होंने कहा दिवाली को कार्य Complit (पूर्ण) कर लेंगे।

शिखर पूर्णता की ओर है, वेदी पूर्णता की ओर है अब ये तो वो ही जाने। प्रतिमा कब आयेगी आने वाली है। इस प्रकार कह-कह कर गाड़ी को यहाँ तक ले आये। ऐसे में पुण्य कम भी हो तो पुण्य बढ़ जाता है। वर्तमान के भाव एवं पुण्य गाढ़ हो तो पुराने पाप का क्षय एवं नया पुण्य और बांध देता है।

भावों के उत्कर्ष से ही ये कार्य होता है। आप सभी अपने-अपने भावों को बढ़ाइये। प्रदेश बहुत लम्बा-चौड़ा है। भावों लेश्या नहीं सब कुछ हुआ है। भावों में ढिलापन कभी न लायें। संक्लेश कभी न करें।

मैं को कुछ समय के लिये तो गौण ही कर दें, मैं के स्थान पर हम लगा दो। हम के रूप में आने पर मैं तो इसमें लगा ही है। सामूहिक में तेजी अलग से ही आती है। मैं में संकीर्णता आ जाती है हम विराट रूप में रहता है। मैं वाला लोकतंत्र में कोई काम नहीं कर सकता है। हम वाला बड़े-बड़े काम भी चुटकी बजाते-बजाते पूर्ण कर लेता है। मैं में स्वार्थता होती है, हम वाला दूर-दूर तक चला जाता है।

बहुत जल्दी-जल्दी आपकी तिथी आ रही है। जोर लगाकर काम करने से ही पूर्णता होगी। महयाल की बात रखी- इन्हीं से दोबारा युद्ध होना। जो बड़ा होता है, उसे कर दिया जाता है, वह होना नहीं चाहता। और साथियों को भी लेकर आगे तक बढ़े इसलिये उसे बड़ा बना दिया जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

17-11-16 "करो पुरुषार्थ ऊपर उठने का" प्रात: 9.15

कुछ ऐसे क्षण हैं जिसमें कुछ अनुपात से पानी को लेकर मिलाकर एक घोल तैयार होने के उपरान्त एक रबर की थैली में भर दिया फिर उसको रखा। कुछ ही मिनटों में उसकी रसायन प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी। चुंकी वह रबर की थैली है, भीतर ही भीतर प्रक्रिया हो रही है, ऐसी जल्दी-जल्दी हो रही है। मन एकाग्र हुआ, देखते-देखते वह मिश्रण पानी में घुल गया पता तक नहीं चल रहा है, देखने में केवल पानी था

रहा है। कुछ और आगे बढ़ते हैं- क्या परिवर्तन होता है। उस रबर शैली में सक्रियता आ गयी। धीरे-धीरे वह एक कोने की तरफ से उठने लगा। उठते-उठते इतना जो आड़ा था वह खड़ा हो गया। जो नीचे की ओर था वह फूलने लगा, उसे रंग/वर्ण, आकार में परिवर्तन आता गया।

भीतर का जो रंग का अपने-आप ही बाहर आने लगा फिर फूलकर काँफी बड़ा आकार ले लिया। अब खिलौना हो गया वह। जमीन से एक-आध इंच ऊपर उठ गया, आप वहीं की वहीं बैठे हैं। कमाल हो गया। उठता-उठता गया, उसकी गति बढ़ती गयी और छत तक पहुँच गया। उससे आगे जा सकता था किन्तु बाहर जाने का रास्ता ही नहीं था, क्यों की उसमें ऐसा तत्व जो आंखो से देखने को उपलब्ध नहीं होता। और कुछ नहीं चुना वगैरह था।

ऐसी गैस जो ऊपर की ओर जाती है, बहुत विरलता होती है। यह दृश्य आपके सामने आ गया। भगवान कल शाम को आपके सामने आ गये। अभी गाड़ी में है। उठेगी तो सो नहीं सकोगे। आगे का देखना है। समय घोषित करवाया है। सब गतिविधियाँ हो रही हैं- अब रात नहीं-दिन नहीं भान भी नहीं हो रहा भानपुर वालो का। कहाँ-क्या हो रहा है मालुम नहीं भानपुर में। हो रहा है किन्तु करने से होता है।

देखने की बात नहीं। आत्मा की बात भी इसी प्रकार है। जो प्रयोग करेगा उसी को अनुभव में आने वाली है, बाकी को नहीं। इतना ही पर्याप्त समझता हूं, ज्यादा आपका समय लेना उचित नहीं मानता।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

18-11-16 "पकाओं संयम रूपी अग्नि में" प्रातः 9.15

पशुओं का भी आहार और आपका भी आहार होता है। उनके सामने कुछ भी घास-फूस रखा होता है उस खा लेते हैं किन्तु आपके सामने घास-फूस नहीं रखा जाता है। आपका आहार ज्वार, बाजरा, मुंग-मोठ, चना, गेहूं इत्यादि है। आपने सामने इनकी बोरी की बोरी रख दें तो भी नहीं खा पायेंगे। मनुष्य की आहार प्रक्रिया अलग है। वह उसे पीसकर या दलकर खाता है। पीसने पर भी आटा सीधे नहीं खा सकता है।

अग्नि के माध्यम से पकाया जाता है, तभी सेवन योग्य होता है। अब पकाने की शैली भी अपनी अलग है ऐसे सीधे ही मुंग-मोठ-ज्वार आदि को अग्नि में नहीं डाला जाता। उन्हें चूल पर रखा जाता है। कैसे? चूल पर एक बर्तन में पानी रखा होता है, अब पकेगा ध्यान देने की बात है। अनुपात से यह कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। ऊपर से जीव जन्तु न गिर जाये इसलिये एक तस्तरी से ढक देते हैं। अग्नि के कारण पानी गरम होना प्रारम्भ होता है। किन्तु वह अनाज पानी के कारण नहीं, न ही अग्नि के कारण पकता है वह तो पानी गरम होने पर जो वाष्प पैदा होती है, उससे पकता है।

ऊपर तस्तरी रखी है, भीतर वाष्प बन रही है, धीरे-धीरे वाष्प बढ़ती है तब तस्तरी अपने आप हिलने। नाचने लग जाती है। अब थोड़ी सी तस्तरी खिसका देते हैं, उसकी वाष्प निकल जाती है ताकि सड़नली (अचानक) कोई घटना न घट जाये। तस्तरी से बंद ही न करो तो वाष्प बनकर एकत्रित ही नहीं हो पायेगी वह युं ही उड़ जायेगी। पुरा का पुरा रख लो सरल नहीं होता। इसी प्रकार कल नहीं परसो पात्रों का चयन होगा। तैयार हो

जाओ। इन्द्र बनने वाले हो तुम लोग। एक ही बार भोजन मिलेगा। वाष्प बनेगी - तश्तरी धुं-धुं हिलेगी किन्तु चिन्ता की जरूरत नहीं है। ब्रह्मचारी जी ले पुछ कर किन्हीं- किन्हीं को थोड़ी जलपान की छुट कर सकते हैं।

संयमी बनाना है तो स्वयं को संयमी बनना होगा। ऐसा नहीं मेले में कभी भी, कुछ भी ले लो और खालो। पात्र बनना है तो सूक्ष्म से सूक्ष्म बात भी समझ में आ जायेगी। भले ही घर में रहते हो किन्तु संयम धारण करने से कष्ट सहने की क्षमता आ जाती है। कर्मों से लड़ने की ताकत आती है। जो कच्चा डाला था उस वाष्प के माध्यम से पककर आ जाता है। इतना ही नहीं जब कर्म पकता है और उदय में आता है तो आपको सुख देकर जाता है अन्यथा सुख नहीं होगा।

ज्वार - बाजरा - मूंग आदि ऐसे कच्चे ही खाने से बिमार पड़ जायेंगे। कर्म उदय से ही सुख एवं दुःख का संवेदन कर सकते हैं। दुःख को भी सहते हैं। रोकर सहन नहीं करना है। भगवान का जन्म सामान्य नहीं होता है। जन्म तो हमारी ही तरह होता है, बाद में संयम को धारण करते हैं तो भगवान् बन जाते हैं। आप सब मनुष्य पर्याय में आये हैं, यह बड़ी दुर्लभ पर्याय है। इस पुरे ६ पुरे महोत्सव में आपको देखने के लिये, सुनने के लिये और चिंतन करने के लिये विषय मिलेगा। आपको कैसे भाव के साथ जीना है, ये ज्ञात होगा, अनुभव मिलेगा।

बच्चों के साथ कैसे जीयें, कैसा व्यवहार करें? बच्चे आप पर भरोसा नहीं ला पाते हैं। उनका भी अपना आत्म चिंतन है, तभी वे भरोसा करते हैं। आग्नि को कैसे काम में लिया जा सकता है - पहले इसका मालुम होना जरूरी है। अहित से

बचते हुये हित का संपादन करना है। यह वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। जो शरीर को ही अपना मान रहे हैं, उनके लिये इस कार्यक्रम से प्रेरणा लेनी होगी।

अग्नि खाई नहीं जाती पर अग्नि के बिना भी नहीं खा सकते हैं। वह अग्नि ज्वार-मोठ-मूंग इत्यादि में चली जाती है तभी खाने योग्य होता है। आत्मा को शरीर से कैसे पृथक किया जाता है, इसका पाक शास्त्र आपको 5-7 दिन में मिलेगा। ऊपर-ऊपर से नहीं निकलता से चिंतन करेंगे तभी मिलेगा। समय पर ही काम होगा। समय पर आयेंगे, समय पर जायेंगे तभी पूरा लाभ मिलेगा। ब्रह्मचारी जी संकेत दें उसी अनुसार इस प्रतिष्ठा के कार्यक्रम को सम्पन्न बनाना है। इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

19-11-16 "श्री फल की सुनो" प्रात: 9.15

[अजमेर से लगभग 400 लोग बसों द्वारा आये]

अभी आपने आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज की जय बोली। सुनो! गुरुजी बार-बार कहा करते थे सुनो तो-सुनाना सीखो, बोलो तो-पहले बोलना सीखो। मार्मिक बात है, हम सुनते कम चिल्लाते ज्यादा हैं। गुरु जी कहते थे - तुम जवान हो, हम बूढ़े हैं।

एक दुकान पर आप गये, आपको श्री फल खरीदना है। दुकानदार ने कहा जो आपके भाव हैं वही मेरे भाव हैं। आप लेना चाहते हो - मैं देना चाहता हूँ। तीसरा कोई व्यक्ति है ही नहीं। हम बोलेंगे नहीं। वह कहता है बिना बोले सौदा कैसे होगा। खरीदना चाहते हो तो भावों को पहचानो। मैंने तो हजारों-लाखों श्री फल खरीदे हैं, आप

एक खरीदना चाहते हैं। भारत पर विश्वास नहीं - एक पर कैसे विश्वास करें। एक श्री फल उठा लिया। अपना भाव नहीं बताओ श्री फलको देखो। कान है तो सुनो - गुरुजी कहा करते थे। क्या कहता है श्री फल - अच्छे ढंग से बजाओ। इसमें दो चीज बजती है। पहले बोलता है पानी। युं युं करके पानी टकराता है कहता है मैं पानी बोल रहा हूँ। अब पानी कैसा है क्या पता। गले हुये श्री फल की भी आवाज तो आती ही है।

अब दुसरा भीतर से कहता हैं, मैं भीतर में हूँ तपस्या कर रहा हूँ। पुरुषार्थ करो बाहर आ जाऊंगा। सफेद झक। खरीदना चाहते हो - हमें पैसा नहीं चाहिये। पुरुषार्थ करना होगा। आपकी खोपड़ी में क्या भरा है - उससे वह कहेगा। आपकी खोपड़ी में बोलनेवाला हैं वह खोपरा। इस खोपरे से खोपड़ी की चिकित्सा हो जाती है। पुरुषार्थ के बिना वह फलेगा नहीं। सम्यग्ज्ञान की तो बहुत बात करते हो, सम्यग्दर्शन के साथ-साथ सक्रियता को अपनाओ।

चार पहिया के माध्यम से चलती है वहा. राजस्थान की बात है। गाड़ी - ठेला नहीं। जुगाड़ कहते है उसे। एक ऊँट खेंचता है। चारों ओर से उसमें सामान / बोरा लाद देते है। फिर ऊँट खेंचता है। छकड़ा / लड्डा भी कहते है उसे। ऊँट पर सवारी करना बड़ा कठीन होता है - हाथी नहीं है वो ऊँट है। खाया - पीया सब पच जाता है।

मरुभूमी में वह ऊँट ही सब काम में लेते हैं। सिंचाई आदि भी करते है उससे। बैठने से ही समझ में आता है - एक बार में नहीं आता। पसीना आना चाहिये, पुरुषार्थ करना पड़ता है। तैयार हो जाओ।

अहिंसा परमो धर्म की जय जै

20-11-16 "आत्मा सोती नहीं" प्रातः 9-15

अग्नि को देखकर सब लोग अपनी रक्षा पहले कर लेते हैं, कहीं ऐसा न हो. .... । किन्तु जब अग्नि का दर्शन नहीं होता, मन में यह भाव कभी भी नहीं आता कि यहाँ अग्नि छिपी हुई हो सकती है। जिसे ज्ञात होता है वह अपनी रक्षा करता रहता है। जो अज्ञानी होता है उसका पैर उस अग्नि पर जाते ही चटका लग जाता है। बिना किसी के कहे ही वह तुरंत अपने पांव को वहाँ से हटा लेता है।

तुरंत हटाने पर भी चटका तो लग ही गया तथा फोला भी आ जाता है। हमारे आचार्यों ने शौचादि के निमित्त जब जाते हैं तो ऐसी राख जिसमें से धुंआ था उठता निकल रहा हो पांव नहीं रखें अतः सोच-समझकर ही राख पर पांव रखें। अग्नि की संभावना हो सकती है। पहले चूल्हे होते थे तो कभी भी आग बुझाई नहीं जाती थी क्यों कि यदि आग एक बार बुझ गयी तो फिर दूसरे से आग मांगना पड़ेगा।

आप सुन रहे हो। हव...। बुंदेलखण्ड की निशानी है। पहले आग को सुरक्षित रखा जाता था, भले ही उस पर राख रख दो। राख रखते ही वह अग्नि काम करना बंद कर देती है, लेकिन रक्षा तो करती रहती है लकड़ी है ऊपर से राख रख दो तो भी वह अग्नि बता देती है कि मैं भीतर हूं। धुंआ उठ रहा है उस राख में से तो स्पष्ट है कि भीतर अग्नि है। धूमकेतु कहा। धुंआ ही जिसकी ध्वजा/पताका हो। केतु का मतलब ध्वजा। दिख नहीं रहा पर फिर भी वहाँ अग्नि है क्यों की धुंआ उठ रहा है। पहले देख लो। अग्नि के बाद तो पास से नहीं दूर से ही देख सकते हैं। इसी प्रकार आप बैठे हैं - क्रिया हो।

रही है। आत्मा भीतर है - सोई नहीं है। आत्मा कहती है मैं जीवित हूँ। यह बता रही है। भले ही वह कोई भी इन्द्रिय का जीव क्यों न हो। इसके अस्तित्व के साथ ही चल रहा है। यह छोटे का यह बड़े का है - ऐसा नहीं है। बड़ा मतलब = Hight (ऊँचा) बुंदेलखण्ड से सीधे इंग्लिश पर आ गये।

पराये से अपना महत्व नहीं, स्व का लक्षण, स्व की संवेदनशीलता से ही काम होता है। भोपाल में बहुत सारे उपनगर / मोहल्ले हैं पर एक नाम बड़ा ही विशेष है, वह है पंचशील / पांच प्रकार का शील रहा। शील का अर्थ स्वभाव होता है। आत्मा का शील स्वभाव कहीं भी छुपता नहीं, चाहे वह छोटे कद का हो या बड़े कद का हो, बालक हो या बुड्ढा हो।

उस स्वभाव को भूलने के कारण ही ऐसा होता है, उसकी पहचान को भुलाना नहीं चाहिये। पहले के लोग कंडे अथवा लकड़ी की अग्नि को राख में रखकर काम ले लेते थे। कुछ भी काम करो अपने भीतरी स्वभाव को भूलिये नहीं, वही हमारे पास है। यहाँ पर तो कोई ठिकाना नहीं है। एक ठिकाना तो फिर भी ठीक है किन्तु अभी तो इधर - उधर घूमकर आये हैं, कहीं नहीं मिला इसलिये कहते हैं - "सब जग देख्यो छान"।

पता ही नहीं लग पाया। प्रभु की स्थापना आप लोग कर रहे हैं। अपना ठिकाना क्या है। प्रतिकात्मक। स्थापना निक्षेप से इस योजना की भूमिका / मंगलाचरण के रूप में आप लोग करने जा रहे हैं। सबकी बोली नहीं होती। बोली सामने दिखते ही पैसा दिखने लगता है अतः कुछ विशेष पात्र (माता-पितादि) बिना बोली के ही बनाये जाते हैं। मध्याह्न में पात्रों का चयन करके जल्दी - जल्दी पंचकल्याणक की भूमिका बनती जा रही है। अग्नि

तो अग्नि है वह तो समान ही होती है। कहीं भी चले जाओ। बबुल की लकड़ी की हो या कंडे की हो, सफेद हो या काली हो अग्नि तो सब में एक ही है।

अब बाहरी वेष-भूषा गौण करके भीतरी आत्म तत्त्व को पहचानने का प्रयास करें। यह हमारी आत्मा है, यह पर की आत्मा है। चित्र-विचित्रता इसलिये एव आत्म तत्त्व को नहीं पहचान पा रहे हैं। वितरागता ही मुख्य लक्ष्य हो, उसी की उपासना की जाती है। वह बिल्कुल सहज एवं स्वाश्रित उपाय है। जो हमें महान पुण्य के कारण उपलब्ध हुआ है उसका सही-सही सदुपयोग करना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय है

२१-११-१६, अष्टमी - केशलोंच

२२-११-१६ "कांटे से निकालो कांटे को" प्रातः ९.१५

सावधानी से चलने पर भी असावधानी कैसे होती है। कहीं जा रहे हैं - पैर पर कांटा पड़ गया तो ये गलती है किन्तु नीचे देखने के उपरान्त भी ऐसा हो जाता है। कई प्रकार के कांटे होते हैं। कहते हैं न कांटा गड़ गया। गड़ना का मतलब कांटा लग गया। लगा नहीं गड़ा है। बड़ा है बाद में धीरे-धीरे दर्द करने लगता है।

कुछ समय उपरान्त पूछने वाला पूछता है - कहाँ गये थे। वह कहता है बाहर तो मैं गया ही नहीं, न ही जंगल गया फिर भी न जाने यह कांटा कहाँ से गड़ गया। अब उस कांटे को भी कांटा से ही निकालना होता है। वह कांटा बहुत समय बीत गया तो और भीतर से भीतर चला जाता है। क्यों की उस कांटे का मुख भीतर

भीतर की ओर है। वह जैसे ही पांव पर जोर पड़ता है और भीतर ही जायेगा। जैसे कील ठोकी जाती है तो कैसे ठोकते हो? उसके मुख पर चोट मारते हैं? भूल न करीयो। मुख पर नहीं ठोका जाता। ऐसे तो सुबह से शाम तक भी नहीं ठोक पायेगें।

अब वह कांटा गड़ गया है, ऐसे नहीं निकलेगा। सुई लाओ। दूसरे नं. पर सुई मंगाई जाती है। फिर उसके सपोर्ट हेतु दूसरी सुई और तीसरी सुई भी ले आते हैं। इतने करने पर भी वह कांटा अभी नहीं निकला है। यह कांटा कितना निर्दयी है, निकल भी नहीं रहा और जैसे ही वह सुई कांटे से जाकर छूती है मानो प्राण ही निकलने को हो रहे हो ऐसा लगता है।

वो कहता है ऐसे नहीं चुभाया जाता। वैद्य जी- तो कैसे चुभाते हैं। हमें आता तो आपको क्यों याद करतें। वैद्य जी कहते है - चुप बैठो। वह कहता है दर्द इतना है कि चुप नहीं बैठा जाता है। वैद्य जी - हमें क्यों बुलाया, वह कहता है हमसे नहीं निकल पा रहा है। अब वैद्य जी उस कांटे के आजु-बाजु में थोड़ा स्थान बनातें हैं और उस कांटे डुबे स्थान पर कुछ औषध डाला जाता है। तरल होने के कारण औषध वहाँ भीतर तक पहुँच जाता है, जिससे वह कांटा ऊपर आ जाता है।

अब आसानी से उस कांटे को निकाल सकते हैं। थोड़ा सा सुई से धक्का देने पर वह हिलने लग जाता है। जगह करना / बनाना पहले आवश्यक है। अपने पैर पहले मजबूत करना आवश्यक है, तभी दूसरे को मदद दे सकोगे। उस स्थान पर औषध डालने से वह कोमल हो जाता है, तनाव नहीं रहा, क्यों की औषध भीतर तक पहुँच गया अब अपने आप ही

ही हिलने लगा। उसे काटने पर कुछ खुन भी आयेगा, कुछ मांस भी कटेगा। अब पीड़ा हो रही है।

असावधानी थी इस कारण से यह दशा हो रही है। दर्द सहन नहीं हो रहा अब बेहोश किया जाता है। आप लोग होश से सुन रहे हो? बेहोश तो नहीं हो। सहन करने की क्षमता नहीं तो थोड़ा सा बेहोश किया जाता है। महीनों तक जब तक ठिक नहीं होगा तब तक दर्द करेगा। पूर्ण ठीक करना चाहते हो। एक महीने तक तो उसकी परीक्षा होगी। ऐसा ही आप लोगों (भानपुर वाली) के साथ परीक्षा हो रही है। हम अपनी भाषा में बोल रहे हैं आप लोग अपनी भाषा में उसको समझने का प्रयास करें।

परेशानी सबको होती है। किसको नहीं होती, सहन करने की क्षमता होनी चाहिये। अपने कर्म के उदय के कारण ही ऐसा हो रहा है, सहन करने की चेष्टा तो होना ही चाहिये। आप लोग सुन रहे हो। हव! एक डॉक्टर होता है उसका काम है- बेहोश करना। दूसरो को बेहोश करता है, किन्तु स्वयं पूर्ण होश-हवाश में रहता है। तभी अन्य किसी को बेहोश कर सकता है। पहले शल्य चिकित्सा वाले डॉक्टर साहब से पुछ लेता है कितनी देर लगेगी वे कहते हैं 12 घण्टे तो उसी अनुपात से सावधानी के साथ देना होता है।

रस्सी चुक गया तो दूसरा बचाने वाला कोई नहीं। बस फिर तो डूबो। बहुत गम्भीर मामला है। डॉक्टर हो या गुरु, हो या शल्य हो वे क्या कर सकते हैं। वे उपाय बता सकते हैं। उपाय कार्यकारी नहीं हुआ तो उसमें आपका ही दोष है उनका कोई दोष नहीं। रोग का उपाय ही नहीं ऐसा कहना

भी ठीक नहीं। उपाय है हमारे पास किन्तु आपके ऊपर उसका कोई प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

आप लोग कह रहे थे- महाराज का प्रवचन मिल जाये। प्रवचन का सार यही है कि औषध मिल जाने पर वह लागु हो ही जाये ऐसा नियामक नहीं है। पूर्व के किये कर्मो के कारण भी ऐसा होता है। परन्तु आज दवाई (औषध) लेकर जा रहे हो यह व्यर्थ नहीं जायेगी। आगे भव- भवान्तर में इस दवाई का प्रभाव अवश्य पड़ सकता है। सुरक्षित रखना इस दवाई को, कर्म का उदय होगा तो निश्चित दवाई लागु होगी ही। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ दवाई लागु हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

23-11-16 "कैसे लगायें सही स्टेशन पर मनको" प्रातः 9.15

एक व्यक्ति है, जिसके हाथ में कुछ सुनने का यंत्र है, वह सुनना भी चाहता है किन्तु समस्या यह है कि किस स्टेशन से चालु करें, निर्णय आपको लेना है। कौनसे स्टेशन से प्रारम्भ करे, रेडियो आपके पास है। दिमाग भी आपके पास है। वह सोचता है, कहाँ से चालु करें मेरा भी दिमाग खराब हो जायेगा। उन्होंने लगाना प्रारम्भ कर दिया। उसमें क्रमांक रहते हैं उसके अनुसार सम्पर्क करने का उद्यम हुआ। सुनने के लिये बैठ गये।

उस रेडियो में स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा है। कुछ इधर की भी बातें कुछ उधर की भी बातें सुनाई पड़ रही है। एक साथ दो स्टेशन भी लग जाते हैं। आप सोचो तो। दुविधा दिमाग की होती है, स्टेशन पर कोई दुविधा नहीं है। वह उठकर रेडियो के पास गया - वहाँ जाकर देखा। एक बाल का भी अंतर

रहता है तो एक साथ विविध भारती भी और BBC लंदन लग जाता है। उसके साथ जो सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं, वह आप हैं स्टेशन के आधार नहीं। इसमें न ही रेडियो की कोई गलती है, न ही कांटे की, न ही स्टेशन की, न ही हवा इत्यादि की गलती है। मेघ - गर्जना आदि पर भी नहीं अपितु एरियल पर आधारित है।

अपने-अपने एरियर को ठीक करो। हमारी ओर क्या देख रहे हो। ब्र० कह रहे थे हमारी ओर देखो। मैं कोशिश करता हूँ कि जल्दी समझ में आ जाये। एक बाल का भी अन्तर हो तो पूर्व एवं पश्चिम का अन्तर आ जाता है। आप अपनी क्षमता (कूबत) बतलाओ। वो भी हमारे आशीर्वाद पर छोड़ देते हो, हमारे आशीर्वाद पर कूबत आधारित नहीं है।

दवाई हमारे पास है, किन्तु रोग कैसा है ये आपको बताना होगा। सब कुछ मेरे ऊपर थोप देंगे तो मैं चिकित्सा नहीं कर सकता। दिमाग को ढिक-ढाक रखा करो। मैं बोलता हूँ उस समय मन को एकाग्र कर सुनना प्रारम्भ करो। अन्यथा एक स्टेशन की जगह चार-पांच स्टेशन लग जायेंगे। जैसा इन्टेंशन होता है, उसी प्रकार का स्टेशन लग जाता है। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि अपने स्टेशन की क्षमता अनुसार उपयोग करें।

मोबाइल आदि भी स्टेशन से काम करते हैं। Range भी बोलते हैं इसे। इसी प्रकार आप भी अपनी कूबत/क्षमता अनुसार स्टेशन लगाओ तभी हमारी बात समझ में आयेगी नहीं तो नहीं आयेगी। बाल बराबर अन्तर भी नहीं होना चाहिये। सम्पर्क सूत्र तो है किन्तु लगाना भी आना

चाहिये। भिन्न-भिन्न स्टेशनों के भिन्न-भिन्न नम्बर दिये होते हैं। धार्मिक अनुष्ठान करते हुये भी आप लोगों को सब काम सम्पन्न करना है।

एक-एक दिन कम कम होकर कार्यक्रम के नजदीक पहुँचते जा रहे हैं। आप जो करेंगे उतना ही होगा। आज ही पत्रिका निकलनी है अभी कहा जा रहा था। पत्रिका तो रोज निकलती है। ब्र. ने लोभ दिया कि ये वो पत्रिका नहीं पंचकल्याणक की पत्रिका है जिसमें आपके नाम ही नहीं फोटो भी होगी। अब स्टेशन दो हो गये। एक स्टेशन फोटो का दूसरा स्टेशन पात्र/पद का। कौनसा स्टेशन लगाना है, निर्धारण आपको करना है।

धर्म के मामले में हम स्थिर नहीं हो पाते। स्थिरता की अपनी अलग ही मौलिकता है- उसका अपनाना आवश्यक है। कांटा जब सही दिशा में सही स्थान पर आता है तो स्टेशन लग जाता है। बहुत सूक्ष्म अन्तर है। मन का काम ऐसा ही है। धन्य हैं वे लोग जो हमेशा अपने मन को सही स्थान पर ही रखते हैं, दूसरे कहीं ले जाते ही नहीं हैं। उन महामना को देखकर हम सीख सकते हैं। कैसे अपने मन को स्टेशन पर लगायें, अपने आस-पास ही सब कुछ है।

हमारी धारणा - सोच नकल पर आधारित है। पर नकल में भी अकल की जरूरत है। समय ज्यादा हो गया अवश्य। हमने सोचा मोह कम हो रहा है, होने दो। लेकिन फोटो के कारण मोह कम नहीं हो। अभी भोपाल के अनुरूप काम करो - भानपुर के अनुरूप करो। अयोध्या नगर वाले आये - भानपुर को ही अयोध्या बना दिया है हमने। जहाँ ब्याव होता है बारात वहीं जाती है। पंचकल्याणक की गोठ नहीं कर सकते। मन को स्थिर करके ही प्रेक्षा करना वही सब कुछ है। अहिंसा परमो धर्म की जय हो

२५-11-16 "**आओ सीखें** सही प्रबन्धन" प्रातः9.15

आज गुरुवार हो गया और रविवार का कार्यक्रम (पाण्डाल में प्रवचन) आपके सामने आ गया। कोई भी कार्य होता है अथवा किया जाता है तो उसमें क्रम होता है। क्रम रखा जाता है जिसका अर्थ है व्यवस्था। व्यवस्था का मतलब होता है अवस्था के अनुसार प्रबंधन। आजकल प्रबन्धन का ही बोलबाला है। क्रम होता है तो ठिक होता है, व्युतक्रम से ठीक नही होता है।

पहले भोजन कर लो फिर बाद में स्नान कर ले। किसने कहा ये ठिक नहीं है। आज का युवा तो यही कहता है, पहले अच्छे से खाओ और फिर नहाओ। अब उस व्यक्ति को क्या समझायें। इसमें साइंस याद आ गया। एक व्यक्ति को भूख बहुत तेज लग रही थी। साइकिल से बहुत तेज आया था। उसने पुछा भोजन तैयार है क्या? उसका इष्ट पदार्थ ही भोजन में था उसने अच्छे ढंग से खा लिया। गरम-गरम खा लिया। पसीना आ ही रहा था। अब स्नान करना है, पानी गरम नहीं ठण्डा है। बस उसी दिन से उसे भारी-भारी होने लगा। अब उसे किसी काम का प्रभारी बनाओ।

वो प्रभारी क्या बनेगा। कुछ आता है नहीं। सुनना है नही, प्रभारी है हमारी सुनो। अब ये व्यवस्था है, प्रबंधन नहीं। व्यवस्था विवेक से होनी चाहिये। वह कहता है मैंने तो जब भूख लग रही थी तभी खाया, गर्मी लग रही थी तभी स्नान किया पर ये सही प्रबन्धन नहीं। साइंस इसका विरोध करेगा - साइंटीस्ट नहीं। इच्छा के अनुसार काम नही विधी के अनुसार काम होता है। पहले स्नान

करो फिर भोजन करो, इससे जीवन भर के लिये आरोग्य प्राप्त हो जाता है।

उस व्यक्ति से हमारी बात हुयी थी। उसने कहा मैंने जब से ऐसा किया तब से आज तक पसीने की एक बूंद भी नहीं आयी। सुन रहे हो। हवा। चिकित्सालय खोलने वालो। आप लोग कहते हैं, ये रोग अब लाइलाज हैं हमारी दवाई तो खाना ही होगा। आज प्रभारी भारी पड़ रहा है। हर काम मे व्युतक्रम से (उलटे) चल रहे हो। हमें बोलने को कहते हैं - माइक सामने रख देते हैं - मैंलो जो दिख रहा है वो ही बोलुंगा, भले ही आप लोगो को बुरा लग रहा होगा।

हम गलती मान ही नहीं रहे हैं। आज भारत भी ऐसे ही उलटे सूत्रों से चल रहा है। हवा कहीं और से आ रही है। हम हवा का प्रबन्धन न करें, अपने जीवन का प्रबन्धन करलें। जीवन का प्रबन्धन चाहते हो तो गलती स्वीकार करें। जो हवा आ गई है वह कैसे आई? क्योंकी आपने अपनी खिड़कियाँ खोल रखी है। आज हर क्षेत्र मे ऐसा ही हो रहा है।

शीतकटीबंध प्रदेश का प्रबन्धन यहां कैसे लागु होगा। यहाँ का आहार वहाँ खा नहीं सकते तो वहां का आहार यहाँ क्यों सेवन कर रहे हो। उनका और हमारा क्या संबंध है। पहले रिश्ता सोच लो कि ये निभेगा कि नही निभेगा। लड़की लेकर आयेगा, यहीं रहना है। दामाद भी ऐसा ही होता है। आप लोग दामाद को बहुत ऊपर उठा देते हो। दाम भी देते हो और लड़की भी देते हो। किन्तु वह परिवार का सदस्य नहीं है। उसको शोर-सूतक नहीं लगता, न ही उसके परिवार का शोर-सूतक इस परिवार को लगेगा। यह आज भी अनुवर्ती से चला आ रहा है। घर का

कोई भी काम हो, विचार-विमर्श हो तो परिवार के सदस्य आपस में चर्चा करते हैं, दामाद से कहते हैं - ये हमारा काम है। ये मर्यादा है। किसी भी परिस्थिति में दामाद को घर की मिटिंग में शामिल नहीं करना चाहिये। विदेशी है, आइये-आइये या जाइये-जाइये बस इतना ही। रुकना नहीं है। आजकल की गाड़ियाँ भी अधिक समय रुकती नहीं। चल रही हैं। समय को बचाते हैं।

गर्मी है तो उसी अनुसार आहार व्यवस्था होना चाहिये, तम्बाकू सूंघाया भी, खाया भी और पीया भी जाता है। जहाँ शीत कटीबंध प्रदेश है वहाँ तो ये बिमारी आ गयी पर यहाँ, जहाँ तापमान 80 को छू रहा ऐसे में चैन स्मोकर बना बैठा है, बिमार नहीं होगा तो क्या होगा। चाय और आ गयी। विदेश में जो चाय पी जाती है उसे यहाँ पीना तो दूर देखना भी नहीं चाहेगा। उकाली बोलते हैं। काढ़ा जैसा होता है। उसमें न दूध होता है न ही मीठा। वहाँ के लिये अच्छा पेय है। यहाँ दूध मिला दिया, मीठा मिला दिया। वे कहते हैं अच्छा होना चाहिये।

आपने इसे व्यसन बना लिया, ये जहर हो गया। वहाँ चल जायेगा किन्तु यहाँ नहीं चलेगा। ये प्रबन्धन होना चाहिये। इनने ऐसी आदत डाल दी जिससे आज भी हमारा प्रबन्धन कर रहे हैं। ये व्युत्क्रम है प्रबन्धन नहीं है। ऐसे बच्चों को हम कुछ नहीं समझाना चाहते हैं। सारी आँते कमजोर कर रहे हैं। आज यहाँ न ही दवाई का प्रबंधन रहा न ही चिकित्सा का प्रबन्धन रहा। शिक्षा - दिक्षा - चिकित्सा सब चौपट हो चुका है, ये किसकी देन है। प्रवचन के पहले एक पंक्ति बोली थी - इण्डिया नहीं भारत। लोग कह रहे हैं - हमारा संदेश है। इधर न आते तो क्या होता। आप

समय हो रहा है, हमारे पास तो समय है ही नहीं। शिक्षा एवं चिकित्सा को सुधारना चाहते हो तो सुधार लो और अन्य कोई उपाय नहीं है। आज विद्यालय में ही इस तरह के गलत संस्कार डाले जा रहे हैं।

पहले गंगा में चवन्नी डालते थे, लोग कहते ये क्या कर रहे हो। अरे! गंगा में चवन्नी ही क्या अपने जीवन पर्यन्त की कमाई डाल दो तभी आप और देश सुरक्षित रह पायेगा। अन्यथा धन विदेश जा रहा है। रूढ़ीवाद नहीं महारूढ़ीवाद है। पानी नहीं मिलेगा, बोतल का पानी मिलेगा। Re-cycle है। आज पानी भर देते हैं- शीशी का भी रंग वैसा ही है। खोलो नहीं - गंध भी मत लो। मिनरल बोलते हैं - ये क्या है? पढ़े लिखे हैं। आज बोतल ही दिख रही है, लोटा तो दिखता ही नहीं।

हमारे संस्कार तो ऐसे थे कि जहाँ कहीं भी पीना नहीं, जहाँ-कहीं भी खाना नहीं, जहाँ कहीं भी बैठना नहीं। आज कभी भी खाओ, कुछ भी खाओ, कहीं भी खाओ। इसका नाम संस्कार नहीं है। आप लोगों को मेरी बात कटू लग रही होगी। कटू लगे तो हम क्या करें? अच्छा लगे तो देख लेना। बहुत ही दयनीय दशा हो गयी है। हम तो रास्ता बता सकते हैं, चलना आपका काम है। "आप लोगों का पुण्य तो था जो आपको ऐसे बच्चे मिले पर बच्चों का पुण्य नहीं था जो आप जैसे माता-पिता मिले"

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

कुछ हटके......

- प्रज्ञापराध से बचना बहुत अनिवार्य है, अन्यथा कोई भी स्वस्थ नहीं रह पायेगा।
- "घुटने टेक, और घुटने दो ना, बोलते जाओ"

२५-११-१६, "दूर ही रहना सिद्धि से" प्रातः ९.१५

एक ने एकाग्रता के साथ विद्या को सम्पन्न कर लिया अर्थात विद्या सिद्ध कर ली। अब इसके माध्यम से वह अपने घर, अड़ोस-पड़ोस आदि सभी को सम्पन्न बनाना चाहता है। विद्या सामने आकर खड़ी हो गयी - सेवा बताओ। वह कम समय में काम करके आ गयी, उसे खुशी हुयी। दूसरा काम - तीसरा काम बता दिया। इस प्रकार करते-करते सम्पन्नता बढ़ती गयी। अब आज्ञा बताओ। उसने कहा - मैं सोच लेता हूँ। विद्या कहती है - मैं कहाँ जाऊँ। ऐसा नहीं चलेगा, आपने निमन्त्रण दिया है, काम नहीं बतायेंगे तो तमाम कर दिया जायेगा।

कुछ समय दे दो। पांच दिन समय मिला। वह घबड़ा गया। आप होते तो क्या करते, किसके पास जाते। वह अपने मित्र के पास गया। मित्र ने पूछा - क्यों आये? बहुत बड़ी समस्या है। जिंदगी के खेल का स्वभाव है। आप सभी लोग जिंदगी को खेल में दांव लगाये हुये हैं। पंचेन्द्रिय के विषयों के खेल में लगाये हुये हैं, जुआ खेल रहे हो। मित्र कहता है - चिन्ता मत करो, मैं भी रहूँगा बात कर लूँगा। वह कहता है - एकान्त में ही काम बताया जाता है। मित्र ने कहा मैं भीतर में रहूँगा।

उसने अबकी बार कहा मैं काम न बता सकूं तब तक ये काम करना। चार खण्ड का मकान है, उसमें नसैनी लगा दी। ऊपर जाना - नीचे आना। जब काम न मिले तो ये काम करना। वो आया तो ये काम करने में लग गया।

मनुष्य जीवन यदि देवता के अधीन हो तो मृत्यु निश्चित है। देवता को अपने अधीन रखें आप देवता के अधीन न हों। पंचेन्द्रियों के विषयों के अधीन भी नहीं होना, नोटों के अधीन तो कभी होना ही नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

26-11-16 "चलो बनायें गन्दोदक" प्रातः 9:15

आपके लोटे में जल है और आप गन्दोदक चाहते हैं। उस लोटे में गंद्य मिला दो - गंदोदक हो जायेगा। उदक यानि जल गंद्य आपने मिला ही दी। अब निर्मल निर्मली करणं, पवित्र पाप नाशनं जल गंदोदकं.... । ऐसा नहीं हो सकता। देखो तो सही अन्तर कहाँ आ रहा है। इतने सारे व्यक्ति मिलकर जल को गंदोदक नहीं बना सकते हैं।

इसलिये क्यों की ये लोग धर्म-कर्म से ऊपर उठे हुये हैं, पश्चिम की हवा इसी को बोलते हैं। ऐसा थोड़े ही होता है। सारा Raw Material हो सकता है किन्तु कर्म को दूर कैसे कर सकता है? अपने मन को अपवित्र से पवित्र कैसे कर सकते हैं? हमारे दिल में आस्था होना जरूरी है। दिल शब्द इसलिये बोला दिमाग नहीं बोला। दिमाग लम्बा-चौड़ा हो सकता है। बोलो ना सही कहा या नहीं, अभी बोली तो बोल रहे थे।

बड़ा महत्वपूर्ण है यह। संसार में सब कुछ खरीदा जा सकता है, आस्था कभी खरीदी नहीं जा सकती। लोन पर ज्ञान उपलब्ध होने लगा। यहाँ पर ऐसा नहीं, जितनी श्रद्धा होगी उतनी ही मात्रा में बना सकते हो। तीनो ताप जन्म - जरा - मृत्यु के नाश लिये जलं निर्वपामिति स्वाहा बोलते हो। हम इन तीनों से घिरे हुये हैं, आप ऊपर उठ गये हैं। हमारी भटकन है, हम नासमझ हैं इसलिये सब कुछ आपके चरणों में समर्पित करते हैं। अपवित्र से पवित्र बनाने वाले हो आप अतः हमारे जीवन की सारी गंदगी को दूर करदें भगवन्।

आपने अपने जीवन की समस्त गंदगी दूर करली इसलिये अपवित्र जल भी आपको छु कर पवित्र बन जाता है।

अब गंदगी को साफ करने का अवसर आ गया है। (ये कौनसी तालियाँ बजायी है आपने)। वस्तुतः अनेक प्रकार की गंदगीयाँ होती है। तन के कारण ही नहीं मन के कारण भी गंदगी आती है।

जिनका मन निर्मल हो गया है, उनके चरणों में जल सुगन्धित होकर मात्र तन को ही नहीं मन को भी पवित्र बनाने वाला हो जाता है। सौधर्म इन्द्र भी आकर जिनके चरणों नतमस्तक हो जाता है। धूल धुसरीत चरण हैं वह अपने रत्न जड़ीत मुकुटो पर उस रज को लगाकर अहोभाग्य मानता है। जैसे आप लोग तिलक लगाते हो।

भारत में ऐसी ही शिक्षा होती थी। यह पुनः लौट आये उसी की प्रतिक्षा है। जैसे आप अतिथी की प्रतिक्षा करते हैं। वैसे ही वह कला - शिक्षा पुनः प्रतिक्षारत है। वह पुनः भारत में लौटे इन्ही शुभ भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

27-11-16 "रखें समय का ध्यान" प्रातः 9:15

समुद्र का जल सूर्य प्रताप से गरम हो जाता है। जैसे पारा ऊपर चढ़ता है वैसे ही गर्मी के कारण जल वाष्प बनकर ऊपर उठता है। आकाश में पहुँच जाता है, बस यहीं तक यात्रा कर सकते है। वह वाष्प काले बादल में परिणत हो गये। अब जो बादल थे वे पिघलना प्रारम्भ कर दिये। सुनते हैं धरती पर जितनी जल की मात्रा है उससे कहीं अधिक ऊपर जल की मात्रा है। जैसे ही पिघलना शुरु हुआ, अब वह रुक नहीं सकता। सुन रहे हो आप। हव। हाँ पुछकर किया करो। सुनो। पीघल कर नीचे आ गया। कौन - कौन बैठा है, उसे क्या

पता ? हमारा काम तो अभिषेक करना है। नीचे आ गया ऐसा वातावरण बना, कैसा बना ? एक चित्र देखा था। व

वह जल वर्षा का नीचे आता गया - आता गया और वृक्षों की टहनी पत्ती पर जा गिरा, वहीं थम गया। नीचे नहीं गिर सकता क्यों की पिघलना बंद जम गया, बर्फ रूप हो गया। उस पत्र के भी अग्र भाग पर ऐसा की गिर जायेगा किन्तु नहीं गिर सकता क्यों की द्रव्यता नहीं बर्फ रूप ठोस हो गया।

इसी प्रकार भावों का खेल है।

आप लोग मेला देखने आये हैं। समय का ध्यान रखीयो। आप लोग मेरे सामने घड़ी रख देते हैं - किसलिये (काहे के लाने)। आज पादप्रक्षालन नहीं हुआ, हम तो पूजन भी रुकवा सकते थे और उठ के चले जाते क्यों की समय हो गया किन्तु उपदेश भी देना था इसलिये भजन तो कर ही ली। कर्मों के उदय में ऐसा होता है। आगे ध्यान रखें। सभी कार्यक्रम समय पर सम्पन्न हो, मध्याह्न में फिर रखा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। वें

28-11-16 "मन की बात" प्रातः 9.15

आप लोग जानते हैं कि प्रायकर मन चंचल होता है। मन को बांधना कठीन होता है। जैसे किसी नदी पर पूल बांधना असम्भव जैसा होता है। क्यों की पूल बांधने से नदी का रुख जिस दिशा में था उससे दूसरी ओर हो जाता है। मन को बांधो - ये कैसे सम्भव है। कोशीश करने पर होता है। "ये मन की बात है।"

मनुष्य अपने आपको ज्यादा चंचल नहीं मानता, सबसे ज्यादा चंचल तो बंदर है। बंदर कहता है, हमारे ही वंश में होकर मुझे बदनाम करते हो। (तुम नर हो हम वानर हैं।

इतना ही तो अन्तर है। कितना अंतर आ गया, किसी कवि ने एक पंक्ति लिखी थी - कितना अंतर है नर और वानर में, और कोई नहीं, केवल एक दुम (दुम) की कसर है।

उसके पास दुम रह गयी, आप सुसंस्कृत हो गये, आगे के युग में आ गये। पर उस दुम की ही करामात है। बंदर कहता है - मुझे लोगों ने "चंचल बाला" कहा। है पर मनुष्य को मेरी चंचलता समझ में नहीं आ पायी। चंचल वह जो हर बात में बिगाड़ देता है, मैं जो भी कर रहा हूं, वह स्थिर चित्त से ही करता हूं। मानव कोई भी काम करने जाये तो अस्थिर होता है, बहाना है। सही-सही करने जाये उसे बदल दे, वही बहाना है।

मन का ठिकाना नहीं है। बंदर कहता है ठिकाना चाहते हो तो दुम पर थीसीस लिखना होगा। केवल बातें करने से कुछ नहीं होगा। उस दुम के समान बात नहीं होती। बंदर के पास भी 2 हाथ 2 पैर हैं परन्तु उसके हाथों में ऐसी शक्ति है जो पांवो का काम भी करते हैं वह चौपाया है। 4 पहिया वाला पूर्ण बेलेन्स रहता है, 3 पहिया कम बेलेन्स और दो पहिया बेलेन्स ही नहीं रख पाते। वह बंदर इन दायों को दोनों काम में लेता है।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदता है। छलांग लगाता है, प्लान बनाता है, किसी को मालुम नहीं। आप लोग प्लान ही प्लान में पूरा समय गुजारते हो। अनेक प्रकार की मिटिंग (सभायें) होती हैं। मिटिंग तो बहाना है। वह बंदर सही प्रबंधन करता है, जल्दी निर्णय लेता है, खबर नहीं लगाता। आप लोग चित्र कला में चित्र बनाते

है कुछ आता - जाता ही नहीं रबर पहले लगाते हैं। पेंसिल पतली और रबर मोटा होता है। लकीर पर लकीर कोई खेंच नहीं सकता पर वह बंदर खेंच सकता है। प्रशंसा नहीं वस्तुस्थिति बता रहा हूं। एक टहनी से दूसरी टहनी पर कूदता है, परम्परा एवं नीति का ध्यान रखता है।

गलतीयाँ होती है, परन्तु पुरी की पुरी आप जैसे नही - लोगो की गलतीयाँ निकालने बैठे हैं। अभी 5 मीनिट और है। एक विश्व प्रसिद्ध किताब है, अशुद्धि पत्र के साथ आयी। कागज बहुत अच्छा, प्रिन्ट भी अच्छी, विमोचन भी अच्छी जगह अच्छे हाथो से, प्रकाशन करने वाला भी शुद्ध - सब शुद्ध है फिर अशुद्धि कैसे रह गयी। दुसरा संस्करण छप गया। एक पृष्ठ लग जाता है अशुद्धि पत्र। शुद्धि पत्र ठीक है या नहीं। जितने शब्द उससे ज्यादा अशुद्धि है।

पुस्तक विश्व प्रसिद्ध है, पर अशुद्धि क्षमता से ज्यादा है। बंदर कहता है - अपने वंश को सुरक्षित कर अलग कर लिया है। दुम में गुरुत्वाकर्षण है इतना ही नहीं उसकी वह पूंछ कभी भी No (9) नहीं कहती, नेगीटीव बात नहीं करती है। उसकी दुम सारा S (यश) ही कहती है। उस दुम में ये महत्वपूर्ण गुण है। कहावत भी है- सारी कसर लंगुर की, पर दुम की बसर है।

वह स्वयं कहता है कि मैं कूदता हूं तो ऐसा निशाना लगाकर की कभी चूकता नही हूं। चूक जाये तो उसी वक्त उसे वंश से ही बाहर निकाल देते है। इसलिये वह अचूक निशाना साधता है। मनुष्य उसे चंचल बाबा कहता है, वह चंचल होकर भी अचूक काम करता है। सबसे ज्यादा व्यवस्था की जरूरत आपलोगों के लिये होती है। व्यवस्था ज्यादा होगा

भी अव्यवस्था फैलाने के लिये कारण हो जाती है। कहावत आज भी बुन्देलखण्ड में - आषाढ़ का चूका किसान एवं डाल से चूका बंदर कहीं का नहीं रहता है। अरे किसानों ! सुनो वह हमेशा - हमेशा अप्रमत्त रहता है, आषाढ़ में जब तपा चलता है, उस गर्मी में भी काम करता रहता है। किसान की तरह काम करता है - दिवाली दिखती है उसे।

इस प्रकार आपके मन की बात कही। जब कभी नहीं कही जाती। संधी देखकर ही लकड़ी पर कुल्हाड़ी की चोट मारी जाती है, अन्यथा वह काम नहीं करेगी। मन संभालने वाला इधर- उधर देख नहीं सकता, इधर-उधर देखने वाला मन को संभाल नहीं सकता। मन को संभालकर चलियो।

अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

29-11-16 " छोड़ो को सही - जरूर मिलेगा " प्रात: 9.15

लड़का छोटा था, वह बार- बार कहने के उपरान्त भी इमली नहीं छोड़ रहा था। भोजन के समय पर आया। माँ ने भी देख लिया। बोली देखो भोजन उन्हीं को परोसेंगे जो इमली का त्याग करेगा। अब वह बालक संकोच करने लगा, विशेष व्यंजन भी बनाये गये हैं वो भी दिये जायेंगे और नियमित रूप से व्यंजन नाश्ता आदि में मिलेंगे, वो सब तुम्हारे ही लिये हैं, किन्तु पहले इमली का त्याग करना पड़ेगा।

उसने हाथ में जो था उसका त्याग कर दिया लेकिन अभी जेब में है, दोनों तरफ से जेब भरे हुये हैं; उसको छिपा रहा है- बुशर्ट भी छोटी थी सो जेब उससे ढक भी नहीं पा रही थी। जेब भी खाली करना पड़ेगा। इधर-उधर मत देखो। इस इमली से तुम्हारा स्वास्थ्य खराब हो रहा है, घरभर में सब परेशान है। व्यंजन तभी देंगे जब त्याग करोगे, प्रतिदिन

निकालकर दिये जायेंगे। तुम्हारे हाथ में डब्बा नहीं दिया जायेगा। चढ़कर भी नहीं निकाल सकते, प्रतिदिन देंगे विश्वास तो कर लो। एक बार 'हव' भी कहता है, जेब खाली भी नहीं करता है। आज तो गई जेब की ओर देखता है।

बिमारी होती है। नादान बच्चों को ज्ञात नहीं होता है, ऐसा ही हमने सुना है। यह उदाहरण आप लोगों के लिये थोड़े ही है, आप छोटे बच्चे नहीं हैं। ऐसे ही आप निकालते जायें - 2. आपके ही हित में किया जायेगा। आपने कौनसा धन दिया - जलधन अथवा काला धन। आपके ही काम आयेगा। जिसने इमली का त्याग किया उसे ही मिलेगा, दूसरे को उसके नाम से भी नहीं मिलेगा। यह विजय मंत्र की तरह काम हो गया।

सभी संसारी प्राणी ऐसे ही करें। अपने धन का न तो ख्याल ही है, न ही काम आ रहा है। रत्नत्रयी रत्नत्रय धन पाकर के भी कंगाल बना फिर रहा है। रत्नत्रय के सामने तीन लोक की सम्पदा की कोई कीमत नहीं। ये ध्यान रखना जानकारी न हो तब तक ऐसा ही है। अपनी सम्पदा नहीं मानने पर दुनिया की सम्पदा की चिंता नहीं करता है। इमली की तरह धन को मान रखा है। ऐसे में खांसी तो ठीक होगी ही नहीं और दांत भी खट्टे हो जायेंगे।

जो बच्चे छिप - छिपकर इमली खाते हैं, वे जब रोटी खाने की बात आती है, तब सामने आ जाता है। दांत खुटलाये गये। वह कहता है पेट भर गया - काहे से - इमली से। इस प्रकार जैसे इमली खाने वाले व्यक्ति के दांत खुटलाये हो ही जाते हैं वैसे ही धन की हालत है। ये उदाहरण याद रखोगे न। "हव"। धीरे- धीरे कुंदलता अमर

आ रहा है। इन मंत्रो के साथ चलोगे तो मांगने की बात ही नहीं। अपनी चीज है, आपने दुसरो के हाथों में दे दिये अब मांगते फिर रहे हैं, ऐसे में क्या होगा। महत्व तो समझो।

मूल की तो बात ही नहीं, ब्याज से ही काम हो जायेगा। कर्ज (ऋण) की बात तो दूर-दूर तक नहीं। अपने धन का यह महत्व नहीं समझने के कारण ऐसा हो रहा है, पहचानों अपने धन को तभी उऋण हो पाओगे। अभी नहीं पहचान पा रहे हो, तो कोई बात नहीं किन्तु देव-शास्त्र-गुरु की बात पर विश्वास करो। मन को मनाना पर मन नहीं मानता तो मन की आप मत मानना। एक ही घण्टे में सब ठिक-ठाक हो जायेगा।

ज्यादा तो मैं नहीं बोलना चाहता भाग्य रहा तो आपको प्रतिदिन 10 मीनिट तो मिलता रहेगा, जब तक हम हैं, ज्यादा तो नहीं। इसी में तृप्ति हो जाती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

30-11-16. "देव असंख्यात फिर भी व्यवस्थित" प्रातः 9:30

पंचकल्याणक हो रहा है, मैं सोच रहा था- मनुष्य की संख्या कभी भी असंख्यात नहीं हो सकती है, देवों की संख्या हमेशा-हमेशा असंख्यात ही रहती है। सभा को देखने से लगता है, यहाँ पूरा पाण्डाल इन्द्रों से भरा मनुष्यों के लिये तो स्थान ही नहीं छोड़ा। देव असंयमी होते हैं। कल नहीं परसों देखेंगे। आप लोग भी सोचेंगे की कहाँ आकर हम भीड़ में फस गये (हँसना) दूर तक देव ही देव दिख रहे हैं। पहले सोच रहा था- देवों के पास विक्रिया की शक्ति होती है। विक्रिया के माध्यम से यहाँ आकर बैठ गये हों। पूजन-भक्ति में देव भी विक्रिया से नहीं अपने योग्य भावों को लेकर आते हैं। यहाँ से सीधा मोक्ष॥

मार्ग था पर सप्लीमेन्ट्री आ गयी सो अब पुनः परीक्षा देनी होगी। आगे ऐसा न हो। पुनः-पुनः इसी कक्षा में बैठने से महत्व कम होता है। ये छोटा है, मैं इससे बड़ा हूँ आदि-आदि विकल्प भी होते है।

भगवान की ओर जाने से सबकी गर्दन नत मस्तक हो जाती है। भगवान कोई क्रिया नहीं करते फिर भी सबको अपने स्थान से दर्शन होते है। समोशरण में आप सभी ने देखा होगा। पाण्डुकशिला पर उनका जब अभिषेक किया तो सुमेरु के पूर्व में - दक्षिण में - पश्चिम में - उत्तर में उन-उन क्षेत्रों के देवों ने आकर पाण्डुकशिला पर अभिषेक किया। समोशरण में एक ही भगवान होते है किन्तु अतिशय के कारण चारों दिशा में मुख दिखता है।

व्यवस्था के लिये जैसे आप लोगों ने अभिषेक के लिये अलग-अलग दिशा में भगवान पाण्डुकशिला पर विराजमान किये। लोगों को बीच-बीच में अनुभव में आ सकता है - सोच सकते है कि ये भगवान भले ही बन गये पर उनके मन में कोई न कोई मंत्र चल रहा होगा जो इस प्रकार की व्यवस्था हो जाती है। किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है, उनका पुण्य इतना की दूसरों से इसकी तुलना नहीं कर सकते। आदेश देने की कभी उन्हें जरूरत ही नहीं होती।

जब हम यह देखते है कि राग की दशा की तुलना वितरागी से करते हैं तो सारी हकीकत पता चल जाती है। आत्मा की दशा देखने पर सारी बातें बौनी लगने लगती है। हमें अपने परिणामों में नियन्त्रण लाने एवं कर्मों की दशा को संतुलित करने का पाठ भगवान

NOTES DATE

से ले सकते हैं।

आज यह गर्भकल्याणक का पूर्वरूप है कल उत्तर रूप होगा। कल ध्वजारोहण के साथ पूर्व पीठिका थी किन्तु आज आप लोग सब अपने आप ही व्यवस्थित हो गये। सबलोग अपनी- अपनी कक्षा में बैठे हैं। अपनी- अपनी समस्याओं के साथ बैठे हो। कुछ लोग आनंद से बैठे रहते हैं बिना प्रश्न के क्यों की भगवान को देखते ही सारे प्रश्न गायब हो जाते हैं।

भारत में भिन्न- भिन्न प्रदेश है जहाँ प्रश्न ही प्रश्न है पर एक प्रदेश ऐसा जिसमें प्रश्न नहीं है- वह उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश में रहने वाले अनुत्तर प्रभु को देखो और अपने को भी प्रश्न से रहित कर लो। "प्रश्नों से परे, अनुत्तर हैं उन्हें, मेरे प्रणाम!"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

२९-११-16 से 5-12-16 तक के प्रवचन अलग डायरी में भानपुर पंचकल्याणक के सन्दर्भ में see other

6-12-16 "प्राथमिकता तय करें" प्रातः 9.15

युग के आदि में भरत चक्रवर्ती ने 60,000 वर्ष तक दिग्विजय यात्रा करके पुनः लौटे। तीन घटना एक साथ हुयी - जैसे ही लौटे तो आयुधशाला में चक्ररत्न प्रकट हुआ, दूसरा उसी समय पुत्ररत्न की प्राप्ति हुयी और वृषभनाथ भगवान को केवलज्ञानोत्पत्ति हुयी। उन्होंने भगवान के केवलज्ञान की प्राथमिकता दी तथा समवशरण में जाकर सर्वप्रथम पूजा की।

उन्हीं वृषभनाथ भगवान को जब निर्वाण की प्राप्ति हुयी तब वह फूट-फूट कर रोने लगा। प्रभु को अविनश्वर पद

NOTES

की प्राप्ति क्या चक्रवर्ती को अच्छा नहीं लगा? ऐसा नहीं उन्हें तो स्वयं को इसी भव में निर्वाण पद प्राप्त करना है, रो इसलिये रहे है कि अभी तक प्रभु की दिव्य-देशना सुनने को प्राप्त होती थी, अब कौन देगा मुझे उपदेश - चक्रवर्ती भी यही मन में सोच रहा है।

आप लोगों को सोचना चाहिये कि इतनी दुर्लभ वस्तु आपको मिली है, उसे भोगों में उलझकर व्यर्थ ही गंवा रहे है। चक्रवर्ती का इस तरह रोना भी धर्मध्यान है, आप लोगों का भी रोना मैं देखता हूँ तो समझ जाता हूँ कि यह रोना कितना सही है। धर्मध्यान के लिये हमारा एक-एक क्षण निकले और तुलना करें की आज इस हुण्डावसर्पिणी काल में भी ये लाभ हमें प्राप्त हो रहा है। ये तो जितना करें, उतना ही कम है क्यों की दुर्लभ वस्तु मिलती है, उसे इधर-उधर के कार्यों में नहीं गंवाना।

एक-एक क्षण इस पर्याय का उपयोग करें। यह प्रसंग आचार्य जिनसेन महाराज ने आदिनाथ पुराण में लिखा (उल्लेख किया)। चक्रवर्ती रो रहा है ये बहुत महत्वपूर्ण है। हम सब संसार की बात तो करते रहते है किन्तु परमार्थ की बात करेंगे तभी ये उपलब्ध होता है। ज्यादा तो नहीं कहूंगा क्यों की कहने से महत्व कम ही होता है। याचना तो करना ही चाहिये, मिल जाये तो अच्छा। माँ भी समझती है कि बच्चा रो रहा तो सच में दुख लगा है या उसही-उसही कर रहा है। आप लोगों की बात नहीं कर रहा है। माँ की बात कर रहा हूँ। भावना तो रखना ही चाहिये पर ये नहीं की समोशरण मेरे घर में ही लगे। जहाँ समोशरण लगे वहाँ आ जाना चाहिये। हम तो कभी मना नहीं करते कि हमारे पास नहीं आना।

अहिंसा परमो धर्म की जय है

NOTES DATE

भोनपुर से विहार 6 दिसम्बर दोपहर, विश्राम - झुरकी सैकीयाँ, आहार - दिवानगंज, विश्राम सलामतपुर

8-12-16 सत्यस्वरूपी है आत्मा = सांची प्रातः 9.45

आहारचर्या - सांची विदिशा वृद्धाश्रम के लोग उपस्थित

जो सत्यस्वरूपी होता है, वही सही होता है। आत्मा सत्यस्वरूपी है, इसीलिये इसका नाम सांची रखा। इस सांची में ऐसा सांचा बन जाये जिसमें सारे के सारे व्यक्तियों को ढाल दिया जावे। सत्य कभी मरता नहीं, वह हमेशा जीवित रहता है। असत्य ऐसा नहीं है। शरीर जनम एवं मरण करता है, पर आत्मा कभी जनम-मरण नहीं करती है। इस भीतरी स्वरूप को भूलकर हम कायर बैठे हैं।

उस कायरता को छोड़कर अब भीतर स्वरूप को जानना अति आवश्यक है। सूर्य के सामने दिन में भी यदि बादल आ जावे तो अंधेरा छा जाता है। पर रात जैसा अंधकार तो नहीं किन्तु प्रकाश कम हो जाता है। रात इसलिये नहीं कह सकते क्योंकि दिन में भले ही बादल हो पर सूर्य के प्रताप को महसुस करते हैं। उस स्वरूप को जानने का अभ्यास करो।

अभी सर्दी का मौसम है, आप लोग क्या-क्या ओढ़कर बैठे हो। आत्मा को न सर्दी लगती है, न गरमी। ज्यादा तो नहीं संक्षेप में यही कहना चाहूंगा की यह आत्मा ही सत्य स्वरूप है, यही शिव स्वरूप है और यही सुन्दर स्वरूप है। आनंदमय नहीं है। आनंद पाना चाहते हो तो प्रयास करो। वह आनंद सत्य की पुष्टि से ही प्राप्त होता है। आज तक हम इस असत्य स्वरूप के पीछे अपने सत्य स्वरूप को भूल बैठे हैं, हमने असत्य को ही स्वरूप मान लिया है।

अभी मार्ग में एक गांव आया था। भोपाल जाते समय वहां रात्रि-विश्राम किया था। नाम है ढकना-चपकना। आपके भी आत्मा का स्वरूप ढक गया इसलिये सब चौपट हो गया। वह आत्मा

NOTES DATE

अन्यत्र कहीं नहीं - यही है किन्तु हमें महसुस नहीं होती। संवेदन में आने पर अवश्य ही उसको महसुस किया जा सकता है। वह आत्मा अखण्ड रूप से हमारे भीतर ही है। उसे पहचानने की जरूरत है, इसके लिये शरीर को पड़ोसी मानना प्रारम्भ कर दो। शरीर को सत्य नहीं मान बैठना। इस शरीर में तो परिवर्तन होता है, जब की सत्य में परिवर्तन नहीं वह तो सांचा है।

जो अपना है पराया है वह सांचा हो सकता है, पर सम्यक नहीं हो सकता। सत्य रूप ज्ञान आज लुप्त हो गया है। वह आत्मा एड़ी में भी है - चोटी में भी है। आचार्यो ने "अंगुष्ठपमाण" कहा। जितना शरीर मिलता है बस उतने में ही वह संवेदन करता रहता है, इसी को पूर्ण समझ लेना है, यही गलत है। शरीर को सत्यस्वरूप आत्मा मानना भूल है। आप सभी उस परम सत्य स्वरूप को प्राप्त करें। इन्हीं भावनाओं के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय। नूँ

9-12-16 "चिरस्थायी विधान है मन्दिर निर्माण", वि दिशा, प्रातः 9.15

आप बगीचा में गये हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधे वहाँ पर लगे है। वहाँ के फल की बात नहीं कहना चाह रहा हूँ, किन्तु उद्देश्य की अपेक्षा वह भी एक फल है। उन पौधों में कुछ पर फूल खिले है, कुछ पर नहीं खिले एवं कुछ पर खिलना प्रारम्भ ही हुआ है। आप लोग हमें बतायें की फूलों की पांखुड़ियाँ खिलना प्रारम्भ होती है तो पहले भीतर की होती है या बाहर की होती है। पहले बाहर की पांखुड़ियाँ खिलती है भीतर की गिन नहीं सकते कितनी है, देख भी नहीं सकते।

जब पांखुड़ियाँ खुल जाती है तो बाहर वाली पांखुड़ियाँ नीचे की ओर देखने लगती है और भीतर

की पांखुड़ियाँ आप लोगो को आकृष्ट करती है। अभी आप लोगों की बाहर की पांखुड़ियाँ थोड़ी-थोड़ी खुलना प्रारम्भ हो चुकी है, भीतर की प्रतिक्षा में है, वह प्रतिक्षा अपेक्षित भी है। एक साथ कोई काम नहीं होता। स्थायी एवं दीर्घ काल के लिये जो काम होता है उसमें समय लगता ही है।

आप लोग यह ध्यान रखियें की भीतर की पांखुड़ियों में कोई दिक्कत तो नहीं हो रही। यह जानकारी रखना जरूरी है और यह कोई अच्छा बागवान ही कर सकता है। आप लोग बाहर में ही आकृष्ट हो जायेंगे तो बाहर से ही बागवान भी बुलाना पड़ेगा। आप सभी प्रभु से प्रार्थना करीये की हमारी सारी पांखुड़ियाँ समय पर खुल जाये। दिनो-दिनों उन पांखुड़ियों में विकास हो, किन्तु आकुलता करेंगे, जल्दी करेंगे, अति विश्वास करेंगे तो वह आकर्षण का केन्द्र नहीं बन पायेंगे। इस हेतु सतत निगाहें बनायें रखना है जिसके लिये अच्छे बागवान की आवश्यकता है।

एक बागवान से काम नहीं चलेगा, जितना बड़ा काम है उतने ही बागवान चाहिये। भगवान को तो भगवान ही रहने दो, उन्हें बागवान मत बनाओ। हमसे कह रहे है - आप ही बागवान बन जाओ। भगवान तो केवल आशिर्वाद देने वाले होते है। आप लोगो को हमारी भाषा समझ में आ रही है न? हव। हजारों वर्ष तक उपयोग में होना है तो जल्दी में काम नहीं होता है। इस क्षेत्र में जो ज्ञाता (जानकार) होते है, वही त्रुटि दे सकता है। थोड़ी सी भी गलती होने पर आपको अन्दर ही अन्दर अखरेगा कि ये नहीं होना चाहिये। उत्साह तो होना चाहिये, सक्रियता भी होना चाहिये इनके साथ-साथ धैर्य

का कर्त्तव्य विवेक भी होता है। उस विवेक का विशेष ध्यान रखना चाहिये। एक सृजन होती है, दूसरा विधान होता है। आप लोगों का ये भी एक विधान है। मात्र 7-8 दिन का विधान नहीं, अपितु जीवन भर का विधान है।

ये अवसर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन काल में नहीं आता, आपके जीवन में यह योग बना है। ये विधान आपका बहुत दिनों तक जीवित रहने वाला है। आने वाले समय में इसे निकट भव्य जीव देखकर वितरागता का पाठ पढ़ेंगे। इसे देखकर गद्‌गद् होंगे और पूर्व के जितने भी कार्यकर्ताओं ने काम किया उन्हें याद करेंगे।

जब एक छोटे से 7-8 दिन के विधान में कितनी तैयारियाँ की जाती है, तो फिर ये विधान कुछ घण्टो का नहीं, कुछ दिन का नहीं, कुछ महिनों का नहीं कई वर्षों का विधान है। भवों - भवों में इस प्रकार का कार्य करना आपेक्षित होता है। ये महान् कार्य शीघ्रता से परिपूर्ण हो, आप सभी इसमें तन-मन-धन से सहयोग कर, आने वाले बच्चों को इससे पाठ दें इन्हीं भावनाओं के साथ!

रात्रि विश्राम - हौसुमा

अहिंसा परमो धर्म की जय।

10-12-16 "साधु है बहता पानी" अहमदपुर, प्रात: 9.20

जब साधु लोग किसी स्थान पर आ जाते हैं तो हर्ष का पार नहीं होता, और जब विहार हो जाता है तो वैराग्य आ जाता है। जहाँ से जाते हैं वहाँ किसी को अच्छा नहीं लगता लेकिन जहाँ पर जाते हैं, वहाँ उत्सव मनाते हैं। हम एक व्यक्ति को क्यों देखें। पहले भोपाल से चले वे युं (कुम्हलाया) हो गये, विदिशा वाले युं (खिले फूल की तरह) अब वे भी उदास हो गये। सभी लोग यों ही सोचते हैं कि महाराज किधर से भी आयें हमारे ही पास पड़ेगा। इससे

NOTES DATE

स्पष्ट है कि सब लोगों का नगर अथवा गांव बीचों बीच ही है। छोटा सा गांव भी क्यों न हो वे भी अपने को बीचों बीच ही मान रहे हैं। बहुत अच्छा है। भूलियें नहीं। आप लोग अपना-अपना पता मत बताओ, हमें अपना पता मालुम है। — — — — — — — — — —

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

रात्रि विश्राम - खैरखेड़ी

11-12-76 — "प्रकृति बिन मांगे देती" — जड़ी, प्रात: 9.40

— हम कोई मांग करें या न करें, वहाँ पर भी बदलीयाँ आ ही जाती है। लोग सोचते होंगे की हमने प्रार्थना की है। पूजन की है अतः हमारे नगर की ओर बदलीयाँ आ जायेगी, किन्तु सूर्यनारायण, चन्द्रमा, बदलीयाँ किसी की प्रार्थना पर आने-जाते नहीं है, ये पक्का है, फिर भी हमारा कर्त्तव्य है कि प्रार्थना करें। — —

— — — — — — — — इस ग्राम में आते समय भी और जाते समय भी आना हुआ, जब विदिशा जा रहे थे तब एवं एक बार महावीर जयन्ती पर आ रहे थे तब आना-जाना हुआ। बात ये है कि छोटा गांव होते हुये भी सात्विक जीवन के साथ, संतोष के साथ अपना जीवन यापन कर रहे हैं, नगरवालों को इनसे सीख लेना चाहिये। गांव वाले सदैव संतोषी देवी की आराधना करते रहते हैं। संतोष जब तक नहीं रखते तब तक शान्ति नहीं मिलती। संतोष रखने वाला ही साहस, सहनशीलता रखता है, संघर्ष नहीं करता है। — — — — — — —

— — — — इन्हें विश्वास होता है कि ऊपर वाला वर्षा करता है, धूप-छांव करता है, आप लोग जल की व्यवस्था करते है, इन लोगों ने ऊपर वाले से ही नल फिट कर रखा है। ऋतु मान के अनुसार ये गेहूँ, चावल आदि धान उपजाते हैं, बाद में आपको दर्शन होंगे

है। माई आपकी है पर वहाँ इतें से ही माल पहुँचाते हैं। इन्हीं पर तो भरोसा करते हैं, ये नहीं पहुँचायें तो देखलें आप लोगों की गत क्या होत है। फिर भी आप लोग रोब दिखाते रहते हो।

आप लोगों के पेट में कुछ है नहीं, मूल कुछ है ही नहीं फिर भी आज युग पलट रहा है। जिसे आप लोग अर्थ मानते हो, सब व्यर्थ में जा रहा है। मूल तो खाने - पीने की सामग्री का उत्पादन है। अभी आ रहे थे मार्ग में गौशाला का निर्माण हो रहा है। आप समझ नहीं पा रहे हैं, एक महिने में क्या गत हो रही है। पैसे फेकेंगे सब खरीद लेंगे इस सोच को छोड़ दीजिये।

किसी ने कहा था पहले गंगा में चवन्नी डालने के लिये भी आगे - पीछे सोचता/देखता था पर आज। ये क्या हो रहा है। समय - समय की बात है। इसलिये जीवनोपयोगी वस्तु ही मुख्य है, इन्हीं का उत्पादन करना श्रेष्ठ है, ये ही तो धर्म है। हमारे तीर्थंकरों ने भी यही उपदेश दिया - उत्पादन करना, संग्रह नहीं करना, चोरी - चपाती नहीं करना। इसी को अपरिग्रह का सिद्धान्त कहते हैं।

गाँव में रहने वाले सभी अहिंसा का पालन करते हैं। रात में भगवान का भजन करते हैं, दिन में खेती - किसानी कर लेते हैं। वैर - वैमनस्य का कोई काम नहीं यही सबसे बड़ा धर्म है। शहर वालों की और मांग है - वह व्यर्थ ही है। जीवोपयोगी वस्तुयें जैसे प्राप्त हो उसी में अपना ध्यान रहना चाहिये। यहाँ थोड़े ही घर हैं पर शिखर - बंद मन्दिर का व्यवस्थित निर्माण किया है। बहुत अच्छे से तैयार कर रहे हैं। ज्यादा तो कुछ नहीं कहना है, चातुर्मास करके आये हैं। सान्निध्य भी दे दिया, रविवार भी हो गया, बोलियाँ भी अभी हो गयी। 10 बजने को हो गया, पर्याप्त समझता हूँ। इसी प्रकार आप लोगों का उपासना के साथ व्यवस्थित जीवन व्यतीत हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

NOTES DATE

रविवार - वेदी शिलान्यास समारोह - गढ़ी
11-12-16 "कम समय में काम बड़ा" दोपहर 3.00

कभी-कभी सोचते हुये भी कार्य धूमधाम के साथ नहीं हो पाते और कभी-कभी बिना सोचे भी इस प्रकार की धूमधाम मच जाती है। छोटा सा यह गांव किन्तु बिच में होने के कारण इधर-उधर से सब लोग आ गये और ऐसा वातावरण बन गया। हमारे भी इस कार्य में आने का योग होगा। ब्रह्मचारी के अनुसार तो प्रतिमा भी निश्चित करने जा रहे हैं। आप लोगो की तो 6। इंच ही थी ये 85 इंच बड़ी बता रहे हैं।

इसी अनुसार ये वेदी बनेगी, भव्य मन्दिर दिखेगी। गढ़ी वाले जो छोड़कर चले गये हैं, जहाँ कहीं भी हैं वे सोचेन्गे हम तो वापस आ जायें। तारादेही में ऐसा ही हुआ, जबलपुर जाकर बस गये वे कहते हैं कि महाराज मन्दिर बनने के बाद अब भावना है कि हम ज्यादा समय यहीं रहें। वहाँ पर विशाल मन्दिर का निर्माण हुआ, जिसका विशाल पंचकल्याणक हुआ। इसी तरह यहाँ पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बन रहा है। निरन्तर प्रयास से यह सम्भव होता है। हमारा विहार चल रहा है, घड़ी के निकलते-निकलते हमारा काम हो जायेगा।

दो बजे चालु किया सारा का सारा काम व्यवस्थित हो गया। जिनालय बड़ा बनाया, बाबा भी बड़े आयेन्गे। इसमें पूजारी वेतन वाले नहीं आप लोगो को करना है, प्रतिदिन बेनागा करना है। छोटा सा गांव है, अन्यत्र रहे तब यहां के लोग दो बार आये हमसे आशिर्वाद लिया अब हम ही आ गये। पंचकल्याणक बड़े धाम करायेन्गे न। जल्दी आशिर्वाद नहीं देते बड़ी बोली है न। बुंदेलखण्डी है, चवन्नी में काम होता है, बड़ा ही सुहावना लगा इस कार्यक्रम से। प्राचीनकाल में भी लोग जहाँ बसते थे सर्वप्रथम जिनालय का निर्माण

करके रहते थे। शहरों की दशा आज आप देख ही रहे है, वहाँ का खान-पीन, रहन-सहन की अपेक्षा दिनो दिन खराब ही होता जा रहा है। पुरानी संस्कृति को यहाँ रहकर ही जीवित रखेंगे। सुख-शान्ति का अनुभव यहीं पर कर पायेंगे, धर्म-ध्यान का भी पुरा लाभ लेवें मांगलिक कार्य होते रहें इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैन

मंच से ही विहार - गौरतगंज के लिये।

12-12-16 "धार्मिक माहौल मांगलिक हो" गौरतगंज, प्रात: 9.45

आज का यह मांगलिक वातावरण आकस्मिक नहीं किन्तु सभी की भावना होगी तभी हुआ। बरसात होने के पूर्व में बदलियाँ इधर-उधर से एकत्रित होना प्रारम्भ कर देती है। हवा के झोंको से बदलियाँ एकत्रित होती है जब दबाव बढ़ जाता है तो जमकर वर्षा हो जाती है। यही में कल हुआ, इधर भी वातावरण बन गया है, बस बदलियाँ जमकर गिर जायें।

मध्याह्न में कुछ कार्यक्रम रखा है। अभी महिलायें व्यस्त होगी, एवं आजू-बाजू वाले भी आ जायेंगे। सामुहिक रूप से सभी लोग माला फेरते है, जाप किसकी गिनी जाती है, उसी को मालुम रहता है। अभी हम विहार में है। किसी ने कहा आप कौनसी माला फेरते है? हमने कहा हम तो वही माला फेरते है कि इन सबकी भावना पूर्ण हो जाये। किन्तु एक साथ सबकी भावना पूर्ण नहीं होगी फिर भी इनकी माला फिरती रहे। फेरते जाओ इसी से आपको पुण्य मिलेगा और हमारे लिये भी अच्छा है।

हम यहाँ तीसरी बार आये हैं। तीन दिन के लिये कह रहे हो - सुनो! कल रविवार को आये आज सोमवार है दो दिन तो हो ही गये। 2001 में हम आये उस समय भी मुकाम किया। पहले का एक

अभी के दो दिन इस प्रकार तीन दिन तो हो ही गये। मध्याह्न-कालीन प्रोग्राम रखा है, अभी चर्चा कर लेते हैं।

इतना अवश्य है हमेशा-हमेशा धार्मिक माहौल बनाये रखना चाहिये, इसी से बच्चों पर प्रभाव पड़ता है, सात्विक कार्य है यह। यहाँ अधिकतर परिवार में किसानी का काम है। अतः कभी लोभ नहीं करना है। लोभ के कारण ही अनेक प्रकार की आपत्तियाँ आती हैं। यदि मोह को काटना है तो लोभ को कम करना है।

आप सभी को सात्विक भाव करते हुये ज्यादा लोभ नहीं करना है। सबसे बड़ी बात यह है कि अपव्यय से बचें। बच्चों पर निगाह रखो। उन्हीं पर सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय जिम्मेदारी है, इहलोक-परलोक भी आधारित है जिससे वह बच्चा मार्ग से स्खलित न हो। पशुओं का पालन होता रहे, व्यापार तो आप सभी का चलता ही रहता है।

पूर्व में ऐसा पुण्य किया, जो यह भारत देश, आर्य खण्ड आदि-आदि मिला है। यह इतिहास है भारत का। बच्चों को इस इतिहास को अवश्य बतायें। देश के प्रति क्या कर्तव्य होता है, सब इससे समझ में आ जाता है। अतः नैयायिक धार्मिक वातावरण बनाये रखना है। इतना ही आवश्यक समझता हूँ, समय हो गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विहार में-

- चतुर्थ काल एवं पंचम काल में इतना ही अन्तर है चतुर्थकाल में मौन रहना सीखाते हैं पञ्चम काल में बोलना सीखाते हैं। पंचमकाल में लिखना - पढ़ना - बोलना ही महत्वपूर्ण होगा॥

NOTES

DATE

मन्दिर शिलान्यास समारोह - औरतगंज

12-12-16 " ज्वर मापक यंत्र है अर्थ " दोपहर 2.00

सुनो! निश्चिंत होकर सुनो। आप लोगों के उत्साह एवं भक्ति को देखकर एक दिन और बढ़ा दिया है। जब तक अनुबंध नहीं होता है तो कार्य भी नहीं हो पाता है। मुहूर्त से ही काम होता है। आशीर्वाद का भी यही प्रयोजन होता है। बाद में कोई भी उलझन नहीं, गड़बड़ नहीं। इसीलिये हमने सामायिक के बाद हेतु कहा था।

मूलनायक के रूप में पाँच भगवान एवं चौबीसी भगवानों में भी सबने अच्छा उत्साह दिखा दिया। बीज राख फल भोगवें, ज्यों किसान जग माहिं...... । यह अनूठा उदाहरण दिया है। एक किसान का उदाहरण धार्मिक क्षेत्र में दिया जा रहा है। सब लोग किसान को तो अनाड़ी समझते हैं जबकि एक ऐसा व्यक्ति जो हजारगुना उत्पन्न करता है वह कभी अनाड़ी नहीं हो सकता। आप लोगों के नोट, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात चुपड़-चुपड़ कर खा लो! छौंक-बघार लगा के खा लो! नहीं खा सकते। मुलायम कंकड़ तो कदाचित् एक-आध छौंक आदि के साथ खाने में हो सकता है पर नोट आदि नहीं।

एक बार सुना तो सड़क पर नोट पड़े थे, एक गधा इधर आया उसने उन्हें सूँघा और आगे बढ़ गया किन्तु आप लोग नीचे झुककर उठा लेते हो। सोचो तो सही आप अपने बच्चों को क्या देने जा रहे हो? अर्थ की भक्ति दे रहे हो यह अर्थभक्ति तो पूरी दुनिया में है। जागृति का अभाव है। अर्थ और कुछ नहीं कल्पना मात्र है, हमने मान रखा है। मापक है जैसे - थर्मामीटर। थर्मामीटर से ज्वर को नापा जाता है। कितना तापमान है ज्वर का यह वह यंत्र बता देता है किन्तु उस यन्त्र की चिकित्सा नहीं होती। चिकित्सक (वैद्यजी) को दिखाते हैं वे

कहते है कि इस तापमान को कम करने के लिये ये - ये औषधी लेकर इस प्रकार की चिकित्सा की जायेगी। आप कड़वी से कड़वी दवाई भी पुरे विश्वास के साथ लेते हो।

उस ज्वर के कारण न बैठते बन रहा है, खाया-पीया नहीं जा रहा है, सुना नहीं जा रहा है। वह वैद्य जी से कहता है जितना लेना है ले लो बस मेरे माथे को ठिक कर दो। 70 साल हो गये पर आज तक आप ठीक नहीं हो पा रहे हैं। जब छोटे थे तो बच्चे चवन्नी - अठन्नी रखते थे। उस अठन्नी से एक नोट का बंडल ले आते, अब वह अपने आपको साहुकार मानता है। कुछ खा लेता अथवा पी लेता तो फिर भी अच्छा था।

आज वही हो रहा है। 100 के नोट की तो फिर भी किमत है किन्तु 500 एवं हजार की हालत, किसी से कहियो नहीं। यह व्यवहार भारत वर्ष की करोड़ो जनता के बिच हो रहा है। जो चीजें काम की नहीं उनके भी पिछे लोग भाग रहे है। गधे के सामने कितना भी चमकिला पदार्थ विस्तु क्यों न रख दो वह कोई मतलब नहीं रखता, करोड़ो की किमत भी क्यों न हो। इसी तरह हमें भी जानना चाहिये।

कुछ समय के लिये स्वीकारता देना अलग बात है, हमारे जीवन में इसकी क्या उपयोगिता है, यह जानना जरूरी है। विद्यार्थी जीवन में भी शिक्षा के माध्यम से यह जानकारी होना अति आवश्यक है। शुद्ध अन्न, शुद्ध पानी, शुद्ध हवा होना चाहिये, यदि अन्न में विष हो गया तो प्रयोजन ही नहीं होगा। इसी से हमारा जीवन उन्नत होगा, आगे के लिये सीख मिलेगी।

किसान समय पर बीज बोता है तभी दुनिया की मांग को समय पर पुरा करता है, आप

लोगों का कर्तव्य है उसे वहाँ तक पहुँचाना है जहां तक आवश्यकता है। अभी आपने एक-डेढ़ घण्टे से पूर्ण उत्साह के साथ यहाँ बैठे रहे। आपके उत्साह को देखते हुये हमने भी त्याग किया। संघ भी तो चाहता होगा कि एक दिन का आधा दिन आराम मिल जाये।

हम एक पंथ दो काज नहीं हम तो एक पंथ दोसौ काज करते है। इस तरह जो भटक रहा हो, स्खलित हो रहा हो उसे भी खड़ा कर देना, इसी का नाम धर्म है। धर्म का अर्थ यही होता है बाधाओं को दूर करना और साधकतम कारणों को उपलब्ध कराना। उससे बोले-आप तो हमारे बन्धु है, आप को किसी प्रकार की चिंता नहीं करना है, ये कार्य आपके द्वारा ही हुआ है। अभी शिलान्यास होना है। इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

13-12-16 "असावधानी से बचायें सावधानी" प्रातः 9.40

आप लोग श्रम करते है, अपना-अपना काम-धंधा करते है, पूंजी अर्थ व्यवस्था के लिये धन माल जरूरी है। आवश्यक है। धन आवश्यक है तो धर्म अनिवार्य है। विदेशों में भी धन का अर्जन होता है किन्तु वहाँ मात्र धन ही जीवन का लक्ष्य होता है। भारत में ऐसा नहीं है, भारत में धन/अर्थ को बीच मे रखा जाता है। वह संसार के काम ही नहीं धन से परमार्थ कर धर्म भी करता है। इसे माध्यम कहा गया है।

वह इस धन से धर्म करने में ही उपयोग करता है। भोजन करने से बल बढ़ता है पर तब, जब वह पौष्टिक तत्वों से भरा हो, रुचिकर हो शुद्ध- सात्विक हो। संयम का पालन भी भोजन से होता है। कभी- कभी जीव्हा-लोलुपता के कारण ज्यादा खाने में आ जाता है, असावधानी से ऐसा होता है

NOTES DATE

या नहीं, हव तो कहो, ये तो वैसे ही बुंदेलखण्ड है। तो उसके पाचन लिये पाचक, चूर्ण, लौंग-सुपारी, पान कत्था-चूना लगाकर लेते हो। इसके योग से मुख लाल हो जाता है। कत्था और चूना के अभाव में वह लाल नहीं हो पाता।

यह उदाहरण आप लोगों को इसलिये दिया है, जो आपके ध्यान को आकृष्ट करले। हम सावधानी तो रखते हैं इसलिये की जीवन में असावधानी न होने पाय। धर्म जीवन में कत्थे का काम करता है। जब किया गया भोजन का पाचन अच्छा रहता है तो अपने आवश्यक / यथोचित कार्य में, परोपकार आदि में उपयोग कर आगे बढ़ता है। इस प्रकार धर्म का प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग होता है। वह धर्म आपको लक्ष्य तक पहुँचा देता है।

असावधानी से इसे भूल जायेंगे तो विदेशों की तरह हो जायेगा। अतः पाचकता मुख्य है, भोजन मुख्य नहीं है। हर क्षेत्र में सावधानी रखना जरूरी तभी हम विकास कर सकेंगे। अर्थ को ही जीवन मान लेंगे तो माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नि आदि-आदि सब में संदेह उत्पन्न हो जायेगा। ये हमारा कहीं धन न हड़प ले ऐसी शंका बनी रहेगी। सबको इस बात का अनुभव है।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति अर्थ को जीवनोपयोगी बना देती है। आज हाय-हाय हो रहा है, इसलिये की अर्थ को ही लक्ष्य बना लिया है। प्रतिकूल भोजन करने से शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो क्या होगा? रोज ऐसा ही करेंगे तो सोच लो! घर में आप ही कमाने वाले हैं वो भी बिमार पड़ गये। अर्थ का उपयोग ऐसा करें की वह अनर्थ में न जाये। व्यर्थ से बचना चाहिये। धर्म में बुद्धि

रखने से ही ऐसा होगा। मनुष्य पर्याय की सार्थकता तभी मालूम होती है, जब सावधानी होती है। अर्थ और धर्म की विशेषता को इस प्रकार देखते हैं।

दुखों से छुटकारा तभी मिलेगा, जब हर समय सावधानी रखेंगे। जिस प्रकार प्रतिकूल सेवन होने पर पाचक लेते हैं, उसी प्रकार पाप से अर्जित धन को भी कुछ न कुछ त्याग करके ही साफ कर सकते हैं। धन को जोड़ना कोई गलत बात नहीं किन्तु उस धन को जोड़-जोड़कर सही दिशा में काम नहीं लिया तो सब व्यर्थ है। यदि आप धन को सही दिशा में जोड़ते हैं तो वह बेजोड़ हो जाता है तभी वह ठीक होगा।

कल आप लोगों ने ऐसा ही कार्य यहाँ किया था। बेजोड़ नहीं कर पाओगे तो वह ग्रन्थि अर्थात परिग्रह हो जायेगा। ग्रन्थि का मतलब गाँठ होता है। आप उस गाँठ को खोलने की बजाय और कसते रहते हैं। आपके यहाँ एक ऐसी भी गाँठ जिसे सरकफुन्न कहते हैं, वह जल्दी-जल्दी खुल जाती है।

अभी भोपाल में तपकल्याणक के दिन जब भगवान के वस्त्र उतारने थे तो ब्रह्मचारी ने कहा महाराज, आज तभी भगवान के कपड़े जल्दी खुल जायेंगे क्योंकी सबमें सरकफुन गाँठ बांधी है। हमने उस सरकफुन में दूसरे छोर को पकड़कर खींच दिया वह खुलने की बजाय और लग गयी। किसे खींचना यह महत्वपूर्ण है। इसे हमने भोपाल में सीख लिया। नाम तो जानते थे इस गाँठ को टाईट सरकन कहते हैं। आप तो ऐसी गाँठ बांधे हैं जो खुलना तो दूर इतनी कसती है कि कैंची मंगाना पड़ेगा। समय आपका हो गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

NOTES DATE

रात्रि विश्राम - समनापुर

14-12-16 — "शिक्षा देती प्रकृति" — जमुनियाँ, प्रातः 9.50

— — ये जमुनियाँ का दूसरा अवसर है, इसी मार्ग से विदिशा से आये थे और सिरवानी में वाचना हो गयी थी। अब क्या होगा क्या पता? प्रायःकरके गर्मी के दिनों में ही वाचना हुआ करती है। फिर देखो। — — — — — — — —

— — — — — जब कभी भी हम सोचते हैं तो एकप्रकार से अलग-अलग सोचने लग जाते हैं, ये इनका है, ये इनका है आदि-2। जब ऊपर की ओर देखते हैं तो आसमान सब लोगों पर छाया हुआ है, कितनी व्यापकता है। वह आकाश तत्व सभी को स्थान प्रदान करता है। दूसरी ओर सूर्य नारायण है, वह भी समान प्रकाश सबको देता है। ऐसा नहीं की ये श्रीमान हैं अथवा ये गरीब हैं तो कम या ज्यादा प्रकाश दें। जैसे आजकल की सरकार करती है। गांवों में लाइट की कटौती कर देती है। — — — — —

— — — — — — चन्द्रमा भी इसी प्रकार सभी को समान रूप से चांदनी प्रदान करता है। नदी-नाले स्वभाविक बह रहे हैं, वे भी चाहे श्रीमान हो अथवा धीमान् सभी की प्यास बुझा देते हैं। वृक्ष भी अपनी छाया-अपने फल सभी को समान रूप से देते रहते हैं चाहे करोड़पति भी क्यों न हो, नेता भी क्यों न हो अथवा श्रमिक क्यों न हो। गर्मी बहुत तेज पड़ रही है, तेज प्यास लग रही है किन्तु वृक्ष की छाया देखकर बैठ जाता है।

— — — — — — — — — पेड़ धरती के पूत कहलाते हैं। आप धरती के पति बनना चाहते हैं। पेड़ कहता है आप पति सही हम तो पूत ही बनना चाहते हैं। आप हमारे पास आये हैं, ज्यादा तो देने के लिये मेरे पास कुछ है नहीं, हाँ छाया अवश्य प्रदान कर सकता हूँ। इसी प्रकार हमारे विचारों में भले
— — — — — — — — — — — —

NOTES

DATE

ही सोचो समय आ जाये कि जरूर किसी ने मेहनत करके इन वृक्षों को लगाया होगा। आज बड़ा होकर सबको अपनी छाया प्रदान कर रहा है। कोकिल कण्ठ (कोयल) भी दूर से ही इस आमवृक्ष की मंजरियों को गर्मी के दिनों में देखकर आकृष्ट होती है। और इन पेड़ो पर बैठकर मधुर कूक करने लगती है।

यह सब प्राकृतिक रूप से हमें मिलते हैं। वे परोपकार में ही सदा व्यस्त रहते हैं आप लोग अपने में ही मस्त रहते हैं। हां, रोने में ही अभ्यस्त रहते हैं। धर्म के कारण ही ऐसा हो सकता है, ये सब सहज रूप से हैं, दिखावा नहीं है। प्राकृतिक वातावरण से आप सब लोग प्रभावित हो रहे हैं। गरीब हो या कम पढ़ा-लिखा भी क्यों न हो सबकी आत्मा समान है, हमें सदैव इसी का चिंतन करना चाहिये। सबको समान मानें। इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

शाम को प्रवेश → सिलवानी

15-12-16 "बिन पानी सब सून" प्रातः 9.40

आप चल रहे हैं सड़क पर या पगडंडी में कॉफी चलकर के आये हैं और उसी बीच में आपके पैरों में कांटा गड़ लग गयी। कांटा लगते ही आपको दर्द हुआ। उस स्थान से पांच-छह फीट दूर है वह स्थान जहाँ दर्द के बाद आंखों में से पानी आ गया। मैं पूछना चाहता हूं कि पैर में कांटा लगा अथवा दर्द हुआ आंखों में पानी क्यों आया?

बहुत सुरक्षित है वह स्थान। एक छोटा सा कण भी चला आये तो आँखों में पानी आ जाता है, वह पानी क्यों आता है थोड़ी पूछताछ तो कर लो। आँखें कहती हैं इस शरीर के प्रत्येक स्थान का संबंध

NOTES DATE

रिश्ता - नाता भीतर से है। भीतर से सम्बन्ध होने के कारण जैसा सम्बन्ध पैर से है वैसा ही पेट - पीठ - हाथ - सिर आदि सभी अंग - उपांगो से होता है।

यह कैसा संबंध है - एकमेक संबंध है। आत्मा के साथ एकमेक होने के कारण आंखे बता रही हैं कि पानी आ जाता है। भीतर में ऐसा संबंध होने के कारण ही ऐसा होता है। इसे धर्म के साथ कैसे जोड़ें ? तो सुनो ! एक व्यक्ति को पीड़ा होने पर अनेको व्यक्तियों की आँखो में पानी आ जाता है, क्यों होता है ऐसा ? धर्म एक है धर्मात्मा अनेक है, इसलिये एक धर्मात्मा की पीड़ा को देखकर अनेक धर्मात्माओं की आंखों में पानी आ जाता है।

दूसरों की पीड़ा देखकर भी जिनकी आंखों में पानी न आये उनको क्या कहेंगे, वे ही जानें। भविष्य की चिंता मत करो, भविष्य की आँखो में पानी आने वाला नहीं। वर्तमान में पानी है इसलिये अपनी की पीड़ा से उबर कर पानी आता है। ऐसे ही परिणाम होते हैं। आँसू स्वयं कह रही है यह पानी मात्र पानी नहीं प्राणियों की पीड़ा का पानी है। सामने वाले की पीड़ा पर मैं क्या कर सकती हूँ इसी कारण फूट-फूटकर पानी आ जाता है।

अनेक प्रकार के धर्मात्मा हैं, किन्तु सबमें यह मुख्य धर्म है। जो व्यक्ति धर्म करते हुये भी अहिंसा धर्म से दूर है तो उस धर्म का कोई अर्थ नहीं है। सदैव सार्वभौमिक अहिंसा धर्म की ही बात करें। जीव के प्रति ही हम सहानुभूति व्यक्त कर सकते हैं, जड़ के प्रति नहीं। मरण नहीं हुआ तभी तक रोने का असर सामने वाले पर पड़ता है, जो मरणासन्न है। मरण होने के उपरान्त

छाती फुट-फुटकर कर रोने से भी कोई प्रयोजन नहीं होता। आपका दर्शन इसी से सक्रिय सम्यग्दर्शन बनेगा. आपका ज्ञान इसी से सक्रिय सम्यग्ज्ञान बन पायेगा।

दूसरे की पीड़ा देखकर भी आँखों में पानी नहीं आ रहा तो यह चिंतनीय है। मनुष्यों की ही बात नहीं पशुओं की आँखों में भी पानी आता है। मनुष्य तो अब पानी भी उधार मांगने लगे है। अगर पर-पीडा देखकर भी मनुष्य की आँखो में पानी नहीं तो पशु समान ही हैं। इतना ही कहना चाहता हूं। कल समय तो था पर हमने सोचा प्रतिक्षा करने दो। बहुत से लोग चले गये पर सिलवानी वाले तो यहीं है, उन्हीं को देना है. इनको तो देते- देते आ ही रहे हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।ॐ

16-12-16 "वैभव में भव (संसार) मत देखो" प्रातः 9.40

युग के आदि में जब भोगोपभोग की सामग्री उपलब्ध होती थी, उनका धीरे- धीरे प्राप्त होना कम हो गया। कल्पवृक्ष अथवा कामधेनु आदि से काम कर लेते थे, वह अब बंद हो गया। बड़ी समस्या हो गयी। आत्मा की बात करना चाहते हैं, युग के आदि में उस आत्मा के बारे में कुछ मालुम नहीं। आत्मा की बात भी ध्यान से वही सुनेगा जिसका पेट भरा हो। उस आत्मा का अस्तित्व क्या है आदि- आदि आप सुनना चाहते हैं किन्तु राशन यदि समाप्त हो जाये तो दिन में तारे दिखने लगेंगे।

हँसी आ रही है। तारे तभी देखते हैं जब रात होती है। सूर्य के उगते ही वे तारायें नहीं दिखती। उनका अस्तित्व समझ में नहीं आता है। वैसे ही तारों की बात कह रहे हैं। कल्पवृक्ष या कामधेनु के द्वारा जीवनोपयोगी वस्तुओं बिना

समाप्त होने लगा। जो दिखता नहीं उस पर विश्वास करना बड़ा कठिन होता है। जो बता रहा है अथवा जो ग्रहण कर रहा है दोनों के ही हाथ में आत्मा नहीं है हाँ जो हाथ है उसमें आत्मा अवश्य है। हाथ से आत्मा को नहीं दिखाया जा सकता।

फिर सेठ लोग तो उस आत्मा को कैसे जानेंगे जो गादि-तकिया पर बैठकर लुढ़क रहा है वह क्या जाने। जब सभी सम्बंध छूट जाये तो सेठ जी की गत क्या होत है पूछ लेना उन्हीं से। जो नहीं दिख रहा उस पर विश्वास करना ही आवश्यक है। सूर्य का अस्तित्व दिखता है किन्तु तारों पर तो विश्वास ही करना पड़ता है। सेठ-साहुकार तो सबको दिखते हैं किन्तु गरीब का अस्तित्व उन्हें नहीं दिखता है।

500-1000 के नोटों की बंदी जब से हुयी है सेठ जी को भी पता लग गया वे क्या है। जिसके भीतर आत्मा है उन्हें कोई चिंता नहीं रहती वह कहता है हम भी मजे में है। सेठ जी तो दिन में तारे देख रहे हैं। ये विश्वास की बात है। संज्ञी-पंचेन्द्रिय-मनुष्य हो जाये सभी दुर्भावों को लांघते हुये किन्तु कुछ ऐसा अनुभव हो जाता है। तारों के माध्यम से सूर्य का अवलोकन कर लेता है।

तत्व ज्ञान आदि के माध्यम से बोध कर तो लेते है पर हम क्या है यह नहीं जान पाते। तारों के माध्यम से दिनकर के बारे में यह जान लेते हैं। जैसे आत्म तत्व पर श्रद्धान हो जाता है तो बाहरी वैभव सोना-चांदी आदि से कोई मतलब नहीं रखता है। तीर्थंकर जिनके पास अपार वैभव है उसे क्षार के समान मानकर छोड़ देते हैं। ऐसी दृष्टि वाला

उनमें कुछ भी सत्व नहीं है, ऐसा मानता है। वे होकर के भी नहीं होने के बराबर हो जाते हैं। वैभव के बीच में रहकर मात्र भव अर्थात संसार को ही देखना यह अद्भुत आश्चर्य है। सोने का ढेर भी लगा दो तो भी उस ओर नहीं देखना चाहेगा।

इष्ट वस्तु की प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। ग्राहक आता है, दाम लेकर खड़ा है। एक तरफ वस्तु लेकर दुकानदार खड़ा है। जो वस्तु लिये है उसकी नजर नोट पर है कि ये कितने दाम दे सकता है। 1रु. 2रु. 5रु. 10रु 50-100रु की ओर देखता है 500-1000 की ओर नहीं देखता। आप की बात अलग है। ग्राहक भोग्य वस्तु की ओर ही दृष्टि रखता है।

भोगभूमी में तो दर्शन होंगे ही नहीं, यहाँ हो जाये। एक बार भी हो जाये ताकि विश्वास हो जाये। तेज भूख लगे उस समय एक दाना भी मिल जाता है, तृप्ति का अनुभव होता है। भूख खुलेगी तभी काम होगा। आत्मा हमारा निकट-दूर का सम्बंध नहीं है। ग्राहक के अनुसार ही सही दुकानदार अपनी वस्तु दिखायेगा अन्यथा वह ग्राहक को कोसेगा नहीं, यही सोचेगा मैं क्या कर सकता हूं, इसे भूख ही नहीं है।

माँ कितना भी खिलाना चाहे, लड़का भूखा होगा तभी खा सकेगा। आप मेरी बात समझ रहे हैं न। द्रव। द्रव्य का परिणमन ही ऐसा है - यदि मिलना है तो मिल जायेगा। संज्ञी - पंचेन्द्रिय - मनुष्य बनकर उस आत्मा का अनुभव करना बहुत बड़ा आश्चर्य है। देवता लोग भी उसे देख अचम्भित होते हैं। नरकाया को सुरपति तरसे......। सिलवानी में लोग सड़क / रोड पर जा रहे हैं। ये भी आश्चर्य है - समोशरण यहाँ है - लोग दूर जा रहे हैं, दूर वाले लोग समोशरण के पास आते हैं, जिनका घर यहीं पास है उनकी तो मन्नत पूरी हो गयी, भगवान मिल गये।

अहिंसा परमोधर्म की जय। ॐ

NOTES DATE

17-12-16 "प्रयोजन पर आधारित हो योजना" प्रातः 9.50

योजना एवं प्रयोजना होती है। योजना होती है भविष्य में कौन-कौनसे कार्य कैसे किये जाये, इससे सब लोग सक्रीय हो जाते हैं। किसी भी कार्य के लिये सर्वप्रथम योजना होती है, पेपर वर्क भी किया जाता है। उस कार्य की पूरी भूमिका बना सके। योजना ही बता रही है, आपको बहुत काम करना है। प्रतिक्षा नही करना किन्तु योजना करना है।

सुबह से ही उठकर प्रतिक्षा करने लग जाये-हे स्वामिन् आओ-आओ.... हम भी समझते है कि 10 बजे ही उठेंगे ताकि सब व्यवस्थित हो जाये। आप लोगों को इस लिये कह रहा हूं कि आप भी कुछ योजना बना रहे हो या बन गयी है। जब काल हावी हो जाता है, तो कार्य प्रभावित होता है। ब्रह्मचारी जी ठीक कह रहे है कि पहले सोच लो। निश्चित करने के पहले जो सोचना है सोच लो निश्चित के बाद फिर घबराहट हो जाती है। हमारे आशिर्वाद से हो जायेगा। छदाम के ऊपर कैसे हो जायेगा। जमाना में भी रुपये के ऊपर भरोसा न होकर छदाम पर हो रहा है। माता-पिता ने बड़े ही सोच-समझकर नाम रखा होगा, जो धन्नामल नहीं रखा, छदाम रखा।

पंचम काल है, इसमें कर्म के उदय में ही काम होता है। योजना बनाकर नया कर्म कर सकते है, इसलिये इसे कर्मयुग कहते है। इस पंचमकाल में कर्म करके ही हम लक्ष्य प्राप्त कर सकते है। लेकिन कुवत के अनुसार ही कर सकते है, कुवत देखो। "कुवत कम, गुस्सा अधिक लक्षण है पीट जाने का, आमद कम खर्चा अधिक लक्षण है मिट जाने का" इन दोनों वाक्यों को ध्यान में रखके ही योजना रखें - प्रयोजन को कभी न भूले, फिर योजनों भागने की कोई आवश्यकता नही रहेगी।

अहिंसा परमोधर्म की जय

NOTES DATE

18-12-16 "दूरबीन नहीं नजदीक बीन बनो" प्रात: 9.40

जिसके पास चक्षु इन्द्रिय है, उसके पास मात्र एक ही इन्द्रिय चक्षु ही है ऐसा नहीं है शेष तीन इन्द्रियाँ भी है। एकेन्द्रिय के पास मात्र स्पर्शन ही होती है, दो इन्द्रिय के पास स्पर्शन के साथ रसना भी होती है, तीन इन्द्रिय जीव के पास घ्राण इन्द्रिय भी होती है इसके उपरान्त चक्षु इन्द्रिय वाले जीव (चौइन्द्रिय) के पास चक्षु भी होती है।

प्राय:कर पंख वाले जीव चौइन्द्रिय होते है, कुछ चिंटिया आदि भी होती है जिनके पास आंखे होती है। इन चारइन्द्रिय जीव के पंखो में कुछ गडबडी हो जाये, चिपक जाये, टूट जाये तो उनका उड़ना बंद हो जाता है। विशेष बात ये समझना है, कि उसके मुख में कांटे होते है, उन कांटो से कठोर पाषाण में भी छेद करके इस ढंग से भीतर गहराई में जाकर उसमें रह सकता है। आपकी आवास की व्यवस्था गड़बड़ है, बनाओ ऐसा आवास-देखें। आप कहते है- लेबर नहीं मिलती, आप लेबर नहीं है क्या? सरकार के सामने रोजगार की समस्या रखते है प्रजा! स्वयं लेबर नहीं बन सकते क्या?

ध्यान रखो! अब दिन गुजर चुके है। हमें पानी चाहिये गरम। हाँ मिलेगा पहले एक किमी. जाओ पैदल, कार तो 50 किमी. घुमाते रहते हो। अब लेकर आओ तथा गरम करो। स्वयं गरम होने की जरूरत नहीं है, लेबर बन जाओ। इस तरह पानी प्राप्त होने पर एक-एक बूंद की कीमत समझ में आ जाती है। स्वयं की सेवा तो चाहते है, स्वयं सेवक बनना नहीं चाहते। वीर सेवा दल बना दिया पहले वीर तो बनो।

सकलांग हो परन्तु विकलेन्द्रिय भी

NOTES

नहीं पाये हो। दुरबीन छोड़ दो अब नजदीक बीन की बात करो। इसलिये इतने कठोर पाषाण में भी वह कीड़ा आवास बना कर रह सकता है। आत्मा के पास कितनी शक्ति है, इस दौर से कीड़े से भी ज्ञात होता है, कितना दुरुपयोग करते है यह भी जानते है।

अब वही चौन्द्रिय जीव जो भंवरा है जिस ओर से गंध (सुरभि) आ रही है उसी ओर चला जाता है। उस फूल पर बैठ - उसका अच्छे ढंग से सेवन करने लग गया। बाद में समय आने पर वह कमल जो खुला था उसके द्वार (पंखुड़ियाँ) बंद होने लगे। अब वह पाषाण में आवास बनाने वाला उसी को आज अपना निवास बना लेता है सोचता है रातभर सुवासलेता रहूंगा अब विकास की व्यवस्था बंद हो गयी। वहीं विश्रामलेओ। उसे तोड़ नहीं सकता क्यों कि इसमें मेरे प्राण है, ये मेरी खुराक है।

रात में गंध प्रसारित नहीं होती, अब उजाला होगा वह सोचता है, पर उजाला नहीं आला हो गया। एक हाथी प्रातः जल्दी ही आया और उस कमल को अपना ग्रास बना लिया। वह भी पकड़ में आ गया। मोह की यही दशा है पाषाण में छेद करने वाला क्या उस कमल में छेद नहीं कर सकता था क्या? बहाना बनाते हो, आत्मा के पास अपार शक्ति है।

अब पाषाण छेद सकते होतो कर्मो को छेद करो ना। सकलांग होकर के भी भोग भोगते हो, उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। समझदार की यही कमी मानी जाती है, वह पंचेन्द्रिय के विषयों से दूर ही रहता है। जानता है कि ये इन्द्रिय-विषय मेरे हितकर नहीं है।

NOTES DATE

सर्दी जितनी होती है, जितनी मानते है, उतनी होती है। एक रजाई के ऊपर और रजाई भी ओढ़ते जाओ पिंड नहीं छोड़ती, और यदि जाना हो, चलते जाओ - चलते जाओ, बूढ़े बाबा भी भागते है। सर्दी में अपने आप ही पैर उठते जाते हैं। सर्दी के दिनों में शिखर जी में देखो। दिन छोटे होते है - सोचता है पैर जल्दी उठाओं, अन्यथा भोजन नहीं मिलेगा। साथ में ले जाओ तो फल नहीं मिलेगा। साथ ले जा नहीं सकते और लेट हो नहीं सकते तो पारसनाथ तक पहुँचने के बाद अब तो भोजन मिल जाये, इसलिये जल्दी-जल्दी उतर आते है।

आप अपनी आस्था, अपने ज्ञान एवं चारित्र के माध्यम से सही दिशा में कदम उठाओ नहीं तो बाद में पश्चाताप करोगे। यह उदाहरण हमारे लिये वह चौइन्द्रिय से प्राप्त हुआ। उसके कान भी नहीं और मन भी नहीं है। आपके पास कान ही नहीं दुकान भी है। मन को दुकान पर मत भेज देना नहीं तो कुछ भी शुभ्र नहीं कर पाओगे।

आप लोग बड़े चतुर है, जो मतलब की होती है, वह रख लेते है, शेष के समय कान दुकान पर अर्थात इधर से सुनते हैं उधर से निकाल देते हैं। अब मन के द्वारा समझ लो तन के द्वारा भी समझ लो। इतना ही पर्याप्त समझता हूं। आज रविवार का दिन है, शायद मध्याह्न में भी रखा है।

एक पाषाण में भी छेद करने वाले की क्षमता आप पहचानों फिर आप तो मन वाले हैं, किन्तु मनमाना नहीं करना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

NOTES DATE

19-12-16 "मत डरो चोट से" प्रात: 9.15

चूंकि बिमार था वह व्यक्ति अत: वैद्य जी महाराज को बताया। उन्होंने कहा पीपल लेना है। वह बाजार से एक किलो पीपल ले आया। वैद्य जी ने कहा ऐसे नहीं लेना है, इसे 64 प्रहरी बनाना है। 8 दिन रख दिया फिर बोला हो गये 64 प्रहर वैद्य जी ने कहा ऐसे 64 प्रहरी नहीं बनती इसकी विधी है।

एक दिन एवं रात में चार-चार प्रहर होते हैं इस तरह 8 दिन तक लगातार इस एक किलो पीपल पर हथौड़े से या खल-बट्टे से चोट डालना है। चोट कि कितनी गिनती? जिस पद्धति से कहा उसी अनुसार करना है। आधा घण्टा भी रुकना नहीं है। प्रश्न उठेगा कि सोयेंगे कैसे? इसके लिये पारी बनालो चार-चार अथवा आठ-आठ घण्टे की पारी हो सकती है। यह निरन्तर चलना चाहिये। रुकना नहीं चाहिये। दुकान भी नहीं छुटेगी और रोग से मुक्ति भी मिल जायेगी।

जब तक कार्य नहीं हो तब तक पहले यह नहीं कहो की कार्य प्रारम्भ हो गया। एक दिन में कितनी चोट, उसकी भी गिनती करना है। 8 दिन हो गये अब चोट बंद कर दो। कितनी चोट पड़ी एक दिन में एक लाख तो 8 दिन में 8 लाख तो पड़ी होगी। ये सब गलत हिसाब है, एक घण्टे में जितनी चोट, उतनी चोट एक दिन में ही पूरी कर दी काम नहीं होगा। गिनती के साथ-साथ विश्वास भी होना चाहिये। आकुलता नहीं होनी चाहिये। आप बनिया-वृत्ति से काम करते हैं, इतनी चोट से काम होगा तो इतने ही समय में कर देते हैं। ध्यान रखो! सिखवानी वालो! ऐसे काम नहीं होता। जिस विधी-पद्धति से, गति से-समय से बताया उसी अनुसार करने पर उसे 64 प्रहरी पीपल कहा जाता है।

अब इस पीपल से मियादी बुखार (टाइफाइड), मोती झरा आदि सब बाहर आ जायेंगे।

इसे लेते जाओ वह सब बिमारी दूर कर देगा। मोती-झरा होने पर बिल्कुल भी पसीना नहीं आता है, किन्तु ज्यों ही वह 64 प्रहरी लेना प्रारम्भ कर देता है, त्यों ही पसीना आ जाता है। साबुदाने जैसे दाने-दाने शरीर में निकल आते हैं, परीक्षण करने पर पता लगता है, इसे निराला अथवा हड्डी का बुखार भी बोलते हैं। अब भूख अच्छी खुलती है किन्तु अभी एक साथ नहीं खाना है। कहाँ से प्रारम्भ करना?

मूंग की दाल से भी नहीं मूंग की दाल के पानी से शुरु करना फिर धीरे-धीरे एक ग्रास बढ़ाते जाना है। इस प्रकार उसकी काया शुद्ध हो जाती है। रिफायनरी हो जाती है। अब आप लोगों पर भी पंचकल्याणक/विधान की चोट पड़ने वाली है। चोट कौन झेलने वाला है? गुस्सा नहीं करना है।

64 ऋद्धियाँ भी होती हैं। ध्वजारोहण से लगभग 7-8 दिन तक चलता है 64 प्रहर तक यह महाआयोजन चलेगा। सब स्वीकार करते चले जाना है कुछ भी प्रतिकार नहीं करना है। भीतर वाले सब दाने बाहर आ जायेंगे। सिलवानी वालों की भी रिफायनरी हो गयी है। इसको भी समय आने पर बता देंगे। अभी पर्याप्त समय हो गया है। 64 प्रहर की इस पीपल को याद रखना है। उस 64 प्रहर तक पड़ने वाली चोट का ही महत्व है, इसीलिये वह मोती आदि से भी ज्यादा महंगी होती है। यह विधान उसी उद्देश्य को लेकर रखा है। पात्र चयन होगा। मोह एवं अज्ञान के कारण जो हमने इकट्ठा किया उसे समय पर बाहर निकालना है। यथार्थ ज्ञान के साथ जैसा कहा वैसा करता है तभी वह निरोगधाम बनता है। इन्हीं भावनाओं के साथ॥

अहिंसा परमो धर्म की जय।

20-12-16 "महत्व करंट का- वायर का नहीं" प्रातः 9:20

आत्मा की बात करते तो हैं, किन्तु आत्मा तो देखने में आती नहीं। जिसकी किमत करें सामने वस्तु है ही नहीं तो दुकानदार कैसे बेचें? वस्तु हाथ में हो तो विश्वास दिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मोक्षमार्ग में इससे ठीक विपरित है, उसमें ऐसा नहीं की पहले वस्तु को दिखाओ तब हम लेंगे, उसमें तो श्रद्धान / विश्वास के आधार पर उस आत्म तत्व को पा सकते हैं। (इसी बीच लाइट चली गयी लाइट आने पर आचार्य श्री ने विषय बदल दिया)

अभी माइक थोड़ा सा गया था यह जानने के लिये की आपके कान चालु है या नहीं। मैं कह रहा था बीच में थोड़ा सा कुछ कह दूँ। हमारे महावीर भगवान कितने दयालु थे फिर भी 66 दिन तक उनके समोशरण में माइक चालु नहीं हुयी, अभी 66 मिनिट भी नहीं हुये आप इतने अधीर क्यों हो रहे हो। हम बैठेंगे आखिर समोशरण नहीं तो बैठे हैं, उनकी वह मुखमुद्रा भी मोक्षमार्ग का उपदेश देती है।

हम शब्दों के द्वारा ही मोक्षमार्ग को समझना चाहते हैं, यह हमारी बहुत बड़ी कमी मानी जायेगी। बुद्धिमान को तो इशारा ही काफी है, बुद्धिहीन के सहारा भी काफी नहीं है। आप लोग महावीर भगवान के साथ अपने जीवन में वायर फीटींग नहीं करो लाइट फिटिंग किया करो। हम कहना चाहते हैं, बिजली नहीं है तो प्रबंधन कौन करेगा? यहां पर तो सब लगे हैं, पर यदि दिमाग दुकान पर पहुंच जाये तो क्या होगा। कुछ नहीं अभी वैसे ही नोट नहीं हैं। हमारा आशिर्वाद तभी फलेगा जब अच्छे ढंग से नमोऽस्तु करेंगे। 66 दिन का काल बहुत बड़ा काल होता है। समोशरण में आकर बैठते तो हैं, वह खचाखच श्रोताओं से भरा भी है किन्तु एक शब्द भी

नहीं बोलते थे। देवता लोग सुनते तो है पर भीगते नहीं है। बहुत बोलने पर भी जो नहीं भीगते उन श्रोताओं के लिये हम नहीं बोलना चाहते। यह वाणी देवों की नहीं, देवाधिदेव की वाणी है। जो देवाधिदेव बनना चाहता है उसी के लिये यह वाणी है।

फिर कैसे खिरी वाणी? एक व्यक्ति सभा के बिच से खड़ा हो गया - निवेदन किया तब जाकर वाणी खिरी। मैंने भी देखा अभी माइक गयी तो बिना माइक के ही बोलना चाह रहा था किन्तु मैंने देखा लोग इधर-उधर देख रहे हैं, हमने सोचा सुनना नहीं चाह रहे हैं। जो मुनि नहीं बनना चाहता है, इधर-उधर की बातें करे वह सही ग्राहक नहीं है। आप दुकानदार हैं, दो कान वाले हैं। एक-आध ग्राहक भी आ जाये तो हमारा काम चल जाता है। बाकी बैठे हुये लोग तो समर्थन में ताली बजाने वाले रहते हैं। विज्ञापन भी तो चाहिये ना। जिस समय आवश्यकता पड़ती है तो वह ग्राहक ढूंढता हुआ आता है, अन्तिम दुकान भी है तो पहुँचता है क्यों की बीच में जो दुकानदार हैं वहाँ पर जो चाहिये वो नहीं है।

महावीर स्वामी ने 66 दिन मौन रखना मंजुर किया। उनके पास ज्वार, बाजरा, मूंग, चना, सोयाबिन नहीं किन्तु मोती-माणिक है। वे समझते हैं कि इसका मूल्य कौन समझता है। जो पंचेन्द्रिय के विषयों में लथपथ है वो उन्हीं में अपनी सम्पूर्ण जिंदगी खपाना चाहता है, वे कहते है कि कितनी भी जिंदगी खपालो इच्छाओं की/विषयों की पूर्ति नहीं बल्कि दिन दुनी-रात चौगुनी बढ़ती जायेगी। लोग यही कहेंगे एक बार और पुरुषार्थ करलूं हमारी भावना पूर्ण नहीं हुयी। इच्छाओं को कभी पूर्ण नहीं किया जा सकता क्योंकि वे आकाश समान अनन्त है। उस रास्ते को बंद करना होगा तब वह वाणी अपने आप समझ में आने लगेगी। हमें नहीं समझाना बस सुखी

को समझ में आ जाय। वस्तु की पहचान उपभोक्ता ही समझता है। कल नहीं परसों मैंने कहा था एक हाथ में वस्तु लेकर दुकानदार खड़ा है, दूसरा हाथ खाली है। इधर ग्राहक मुख दिखा रहा है, मुझे वांछित वस्तु दे दो। इसलिये वास्तव में मूल्य क्या वस्तु है इसे समझना बहुत अनिवार्य है।

मूल से मूल्य बनता है। भाषा विज्ञानी समझता है अर्थ के द्वारा या सोना - चांदी आदि के द्वारा कोई भी काम होते ही नहीं, ये प्राणों के वर्द्धन में सहायक नहीं, प्राणों के लिये तो उपभोग्यवस्तु की ही आवश्यकता है। ये गुरु ने कहा, गुरु के गुरुओं ने भी कहा। ये बात ध्यान में रखना है। दिव्य ध्वनि खिरने के लिये मात्र समोशरण का होना ही पर्याप्त नहीं है, दुनिया का आना भी पर्याप्त नहीं है, अपितु जो मौलिक ग्राहक है उसके बिना कुछ नहीं। वह मानी था पानी - पानी हो गया। एक व्यक्ति की अनुपस्थिति के कारण यह हुआ, 66 दिन तक पार्लियामेन्ट में कोई चर्चा नहीं हो पाई। देव लोग समझ लेते, किन्तु नहीं समझ सकते।

देव लोग तो विज्ञापन मात्र करते रहते हैं, उनके पास श्रावकों को दे सकें ऐसा कोई माल नहीं और इनके देने से आप सुखी भी नहीं रह पायेंगे। दिव्य कपड़ा दे दें पर उपयोग ही नहीं करना चाहते थे। वो आते ही दिव्यध्वनि खिर गई, माइक वहाँ आ गये। बाकी सब बैठे रह गये। माइक थोड़े ही बोलता है - करंट होना चाहिये। करंट कोई अपना बाप - भलाई तो है नहीं। घर में वायर फिटिंग कराई, काहे के लाने - करंट के लाने।

एक बार पकड़ लें तो छूट नहीं सकेंगे। ऐसी ही करन्ट भगवान महावीर स्वामी की है। उस बाहरी करंट के लगते ही शरीर छि[illegible]

NOTES

DATE

छुटकारा हो सकता है किन्तु इस भगवान महावीर स्वामी के करन्ट से भव-भव से मुक्ति मिल जाती है। ऐसीही करेंट सबको मिले किन्तु ध्यान रखना सबसे पहले वह करेंट हमारे ही पास आयेगी। — — — — — — — — — — — — — — —

हम लाइन देने के लिये तैयार हैं, पर यह बहुत पावर करंट है, आप संभाल नहीं पायेंगे। दो तरह की करेंट होती है A.C और D.C. । हर फेंक देखनी तेज करंट है भगवान महावीर स्वामी की करंट, इसलिये अपनी लाइन को अच्छे से तैयार करो तभी वह करंट आ पायेगी। ऐसी विद्युत हमें मिल सकती है, वह लाइन प्रभु हैं। प्रभु को हम समझ नहीं पा रहे हैं, प्रभु तो हमें समझ रहे हैं। भगवान की करंट की मौलिकता बनाये रखीयों ताकि जीवन की सार्थकता हो जायें। — — — — — — — — — — — — — — — —

अहिंसा परमो धर्म की जय। —

२-१२-१६ — — "कर्म रूपी सर्प से डरो" — — प्रातः ९.५०

— आप लोग सर्प को देख पाओ या नहीं भी देख पाओ, सर्प के नामको सुनते ही सब लोग जागृत हो जाते हैं। उसकी काया की संरचना नामकर्म के कारण कुछ इसी प्रकार से बनती है कि विश्व के सब लोग उसे देखकर डर जाते हैं। वह सर्प भी सोचताहोगा की मुझे देखकर सब डर जाते हैं, मैंने ऐसी कैसी पर्याय प्राप्त की है कि अच्छे-अच्छे लोग भी डर जाते हैं। मारने के भाव करते हैं, मुझे अभय नहीं कर पाते हैं, दोनो मेरे निमित्त से होते हैं। — — — — — — — — — — — — —

एक व्यक्ति को कहा गया कि अब तुम्हारा बचना मुश्किल है, इसी प्रकार का भयंकर ज्वर आने वाला है जो ठीक होना मुश्किल है। उस व्यक्ति ने (भयानक) कहा कोई न कोई ज्वर हरण औषध जरूर मिलेगा। भाग्य में होगा तो जरूर रोग की औषध मिलेगी। पुण्य का उदय होगा

तो सर्प नहीं काटेगा और पाप का उदय होगा तो छोटे से पत्थर से भी ठोकर लगकर गिर सकते हैं। मैं यही कहता हुं की मेरे पुण्य का उदय होगा तो जरूर ज्वर की औषध मिलेगी।

भाग्य में होगा तो जरूर रोग की औषध मिलेगी। पुण्य का उदय हो तो सर्प नहीं है, मात्र देख लें या उसके फण में जो मणी है उसे पानी में रखकर पी लें तो पक्का है, ज्वर नहीं आयेगा आया है तो चला जायेगा। आप सुन रहे हैं - हव"। आप कहते हैं महाराज पुण्य उदय में नहीं है। पुण्य आता कहाँ से है? पुण्य बांधो तो वह उदय में जरूर आयेगा। बोओगे तो फसल जरूर खड़ी होगी। बिना बोये तो घास-फूस मिलता है।

इस प्रकार जीव जीव का मारक ही नहीं होता, जीव जीव को बचाने में भी कारण होता है, यह भी एक दृष्टि होनी चाहिये। आपके यहाँ एक सूत्र आता है- "परस्परोग्रह जीवानाम्" एक दूसरे का उपकार करना धर्म होता है, भावों की परम्परा चलती जायेगी। ये संस्कार दृढ होते चले जायेंगे, पाप यदि उदय में आये तो इसके कारण टल जायेगा।

पाप को टालने, पुण्य को बांधने और आयी बाधाओं को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये ये ही सिद्धान्त अमोघ शस्त्र है। ये वाक्य याद रहने चाहिये। हम इसी को लॉटरी का टिकट मानते हैं। समय कम रह गया है, लॉटरी के टिकट भी कम समय के लिये ही होते हैं। १० गुना से भी अधिक कीमत है आपके इस टिकट की, जब परिणाम निकलता है तब सब मालुम चल जाता है। सभी ज्वर अथवा सभी रोगों को सहन करने का उपाय है। मन में भाव होते रहते हैं - उत्कर्ष भाव होना चाहिये।

बाद में सोचता है, ये ठीक कह रहे हैं। गोद का लड़का भी सोच सकता है, आप गलत सोच सकते हैं। वह लड़का सही सोच सकता है। जो सोचता है वह अवश्य ही भोग जाता है।

कोई भी व्यक्ति स्वभाव से पाप करना नहीं चाहता ऐसा कहें कि वह संस्कारवश पाप करता है, पूर्व में जो कर्म किये हैं उनके उदय पर आने ऐसे संस्कार होते हैं। इस पर बांध बांधा जाता है अथवा मोड़ दिया जाता है। इस बात का ध्यान रखना कभी भी 90 अंश का मोड़ नहीं लिया जाता है। जैसे आप साइकिल चला रहे हैं, मोड़ आ गया क्या करते हैं? खतरनाक मोड़ - अंधा मोड़ आ गया आपके पास तो दो आँखे हैं। कितना भी निष्णात क्यों न हो वह चलाने वाला मोड़ पर तो धीरे ही हो जाता है।

इसलिये धीरे-धीरे मोड़ा लिया करो। मोड़ा मतलब बुंदेलखण्डी में लड़का भी होता है। अतः धीरे-धीरे समझाओ मोड़ा को वो भी मन बना लेगा। धीरे से मोड़ने पर उसमें कोई परेशानी नहीं होती। वेग में कभी लाकर मुड़ने पर घटना नहीं घटती। मोड़ पर पूरे वेग से नहीं चला सकते। धीरे-धीरे उसमें जरूर सफलता मिलेगी। मोड़ पर आपने देखा होगा सरकार भी सुविधा बना देती है, जहाँ पूरी जगह सड़क की चौड़ाई 50 फीट है मोड़ पर 80 फीट अथवा अधिक कर देती है ये सुविधा है हर मोड़ पर किन्तु वह मोड़ अंधा न होकर ड्राइवर अंधा हो जाये तो क्या करेंगे।

इसलिये आप भर अंधे न हो तो सुरक्षित बच जायेंगे। समझ में आ रहा है न, 'हव' मैं आपकी ही भाषा में बोल रहा हूँ।

NOTES DATE

इस प्रकार दवाई देओ तो अच्छे ढंग से देओ। सेम्पल में कभी दवाई नहीं दी जाती है, दवाई कभी चखाई भी नहीं जाती है ऐसी धारणा बना लो। दवाई लेनेपर आप ठीक हो जायेंगे। — —

— — — — — — — इसी तरह दुकान चलती है। एक ग्राहक स्वस्थ हो जाता है वह दूसरे को दूसरा तीसरे को बना देता है। मैं वहाँ गया इस तरह लाभ मिला। २०० व्यक्ति अन्य २०० को बता देंगे हमारा धंधा तो चल गया। धंधा अच्छा है पर अंधा नहीं होना चाहिये। अंधा मोड़ हो पर हम अंधे नहीं बनने चाहिये। मोड़ के पास कोई धंधा नहीं, वहाँ तो आपको जागृती की बहुत आवश्यकता है। — — — — — — — —

— — — — सीधे रास्ते पर वेग से चलो किन्तु मोड़ पर संवेग से चलो। संवेग का मतलब आप सब जानते हैं इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। इस प्रकार सर्प जीवले सकता है तो सर्प के फण की वह मणी जीवन दे भी सकती है, कर्म का उदय जैसा हो वैसा ही फल मिल जाता है। समय हो गया है। — — — —

— — — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय। —

२२-१२-१६ "पथ संयम बिना चलना नहीं" — प्रातः ९:१५

— — — इष्ट वस्तु पर हम लोग विश्वास रखते हैं। श्रद्धा रखते हैं। श्रद्धा या विश्वास इसलिये रखते है कि हम जिसे पकड़ना चाहते हैं, वह पकड़ में नहीं आती। जब तक इष्ट वस्तु की प्राप्ति नहीं होती चित्त पर वही जमी रहती है, हमें प्राप्त करना है, हमें वह प्राप्त करना है। चाहे आंखे बंद करके बैठे हो या आंखे खोलकर बैठे हो बस वही नजर आती है। क्यों की यहाँ आँखों से मतलब ही नहीं, बुद्धि उसी ओर लगी है। बुद्धि हटे तो बोध हो सकता है। आंखो से व्यापार नहीं, अन्य इन्द्रियों से भी व्यापार नहीं — — — — — — — — — — —

NOTES DATE

कर रहे अपितु बुद्धि से से व्यापार को बढ़ाते हैं। जैसे कल रहा था गाड़ी सामने से कौनसी आ रही है, उसे भी मालुम नही है, बीच में सड़क मात्र है। ऐसी स्थिति में कुछ साधनों का इस्तेमाल बहुत ही लाभप्रद होता है। जैसे - Horn - Please. मैं भी अंधा, आप भी अंधे किन्तु बहरे नहीं होईये। Horn - Please।

आँखे होते हुये भी वे काम नहीं करती। विश्वास हो जाता है कि मैं भी नियन्त्रण में रहूँ, आप भी नियन्त्रण में रहें ताकि दोनों अपनी-अपनी इष्ट दिशा में सही से पहुँच सकें। बिना देखें भी "पथ संयम" का पालन कर सकें। पथ संयम शब्द मैंने इसलिये प्रयोग किया क्यों की संयम के साथ ही पथ पर चला जाता है, बिना पथ के संयम का भी महत्व नहीं हैं। उस पथ पर जब हम चलेंगे तभी प्राप्त करेंगे। चलने से पूर्व पथ पर दृढ़ विश्वास - श्रद्धा होना जरूरी है अन्यथा प्राप्ति नहीं होगी।

इसलिये हर क्षेत्र में विश्वास बहुमूल्य माना है, वह लुप्त हो जायेगा तो आप निराधार हो जायेंगे। संयम कौनसे क्षेत्र में नहीं - प्रत्येक क्षेत्र में संयम रखना अनिवार्य हैं। आतुरता नहीं करो, विश्वास रखो, साहस रखो आदि-आदि सभी क्षेत्र में आवश्यक है। विश्वास के आधार पर ही आप संयम लोगे, विश्वास के आधार पर ही सारी साधन सामग्री जुटाओं। आप कहते है महाराज भगवान दिखे ही नहीं आज तक, कम से कम स्वप्न में तो आ जाते।

सोये रहते हैं तभी स्वप्न आता है। आप सदैव सजग रहिये। कई लोगों की ये धारणा होती है आप स्वप्न में आयें। ध्यान रखना जब हम काम करेंगे तभी वैसा स्वप्न आता

है। अच्छे काम करते हैं स्वप्न भी अच्छे-अच्छे आते हैं. हम स्वप्न में भी कमजोर ही रह जाते हैं। जिसको प्राप्त करना है उस पर अटूट-अटूट विश्वास होना जरूरी है, यही मार्ग है।

अतः पथ संयम अनिवार्य है।

जैसे एक-दूसरे को नहीं देख पा रहे-कोहरा छा गया। अब लाइट भी काम नहीं कर रही, 100 मीटर भी नहीं देख पा रहे। ऐसे में गति नहीं दे सकते। हमें जल्दी है, तो पहले पहुँच जाओ। पहुँचना तो है ही समय पर। इतना याद रखो संयम होते हुये भी राह/पथ में व्यवधान है तो उसे ध्यान में रखना अनिवार्य है।

ऐसी परिस्थिति में गाड़ी को कीड़ी (चिंटी) की चाल से ही चलाना होता है। यदि अति बढ़ा दी टकरा गये तो सब लुप्त हो गया, सपने साकार नहीं हो पाये। हमारा ज्ञान जाग्रत नहीं रहेगा तो कोई काम का नहीं है। स्वप्न अच्छा है तो उसे बार-बार दोहराओ। हम इस स्वप्न को दोहरा नहीं पाते ये बड़ा दुर्लभ होता है। जब तीर्थंकर की माता को स्वप्न आते हैं तो वह अपने पति से उसका अर्थ पूछती हैं इसका क्या अर्थ है-दोहराना।

पथ पर चलने वाला उस स्वप्न को भी याद रखता है। हमें जो कुछ भी चीज प्राप्त हो जाती है (संयम आदि) तो उसके आदि की कथा भूल जाते हैं। याद रखोगे तो आगे बढ़ोगे। संकल्प लेते हैं, कल्पकाल भी व्यतीत क्यों न हो जायें इस संकल्प से अस्थिर नहीं होना। मोड़ अंधा नहीं होता, हम अंधे हो जाते हैं। सरकार ने तो बहुत अच्छा काम किया सड़क की चौड़ाई बढ़ा दी, मार्ग संकेत का बोर्ड लगा दिया किन्तु आज इन सबको नजरअंदाज करते हुये अपने

NOTES

DATE

की गति बढ़ा देते हैं और मोबाइल चालु कर देते हैं। एक समय में एक ही उपयोग होगा। इष्ट के प्रति अनुपस्थित होने पर ही ये घटनायें घटती हैं।

अतः हमें सदैव जागृति के साथ उद्यमशील होना चाहिये तभी इष्ट की प्राप्ति होती है। तो मोड़ अंधा नहीं होता हमारी दृष्टि अंधी हो जाती है। सीधा रास्ता हो तो भी आँखों में 45° कोण बन गया, सामने दीख नहीं रहा। आँख वाला होने पर भी अंधा हो गया। सामने वाले से टकरा गया। वह दो-तीन बार Horn दे रहा है, हमारा ध्यान और कहीं पर है, जहाँ जरूरी नहीं था। किन्तु जिस ओर दृष्टि हो जाती है बस वही दिखता है, बाकी सब लुप्त हो जाता है और घटना घट जाती है। वह सोचता है हम पार करलेंगे पर क्या करलेगा क्योंकी आखिर मन है।

ध्यान रखो भोजन भी स्थिरता के बिना नहीं कर सकते हैं। अनेक चिंता में है तो रसदार पदार्थ भी जहरदार हो जाता है। वह भोजन पचेगा नहीं। अब प्रकार जीवन में मोड़ क्या है, हम स्वयं अंधे होते हैं। सरकार की कोई गलती न रखो। हम यहि मोबाइल के साथ चल रहे हैं तो उसे बंद रखो कम से कम इतने समय तो, बाद में बात करेंगे।

स्वतंत्रता मिल गयी इसका अर्थ है कि दायित्व के साथ उसका निर्वहन हो। जिम्मेदारी के साथ करें। बिना आदेश अथवा संकेत के ड्राइवर जैसे गाड़ी चलाता है तब समय पर जा सकता है, नहीं तो समय से पूर्व में जायेगा अथवा भटकता जायेगा। दो बातें हैं आपके सामने - समय से पूर्व जाना अथवा भटकना। आपलोग समय पर आयेंगे तो समय पर जायेंगे। समय पर आना तो है ही नहीं। सड़क पर चलिये किन्तु देखकर। सड़क कहती है जब आंखें खोलोगे

मैं उपस्थित रहेगी। इसप्रकार हमारा कहना है कि हम एक-एक समय मोड़ लेते रहते है। जो बेहद वस्तु सामने रखी थी उसे बंद करना अनिवार्य है। विश्राम लेने पर स्वप्न में भी लगनशीलता से वह वस्तु दिखती रहती है, इसी कारण उसके सपने साकार होते ही नहीं अतः जाग्रत रहा करो इस तरह के स्वप्न नहीं देखा करो। — — — — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय। गुँ

23-12-16 — "समझने में समझदारी है" — प्रात: 9.15

— — एक व्यक्ति को कुछ समझाया जा रहा है। दिखाया नहीं जा रहा था किन्तु समझाया जा रहा था। और जिसके बारे में समझाया जा रहा था वह सामने — — है ही नहीं, जिसको समझाया जा रहा था वह सामने रहते हुये भी अपरिचित था। परिचित-अपरिचित का एक मात्र यही भेद है। जिसे समझाया जा रहा है, वह कह सकता है, हम समझने आये थे आप समझा ही नहीं पा रहे हैं। — — — — — — — — — — — —

— — इतनी दूर से हम पैसे खर्च करके आये है, मोटर-गाड़ी से आये है लेकिन समझाने वाले समझा नहीं पाये। समझ में आता है कि इन्हें स्वयं को भी समझ में आया है की नहीं। यह बात सही सी लगती है पर सही नहीं है। समझना और समझाना दोनों अलग-अलग बात है, समझदारों के सामने यह बात है। क्या करें! सबको समझा सकते हैं पर आपको समझाना टेढ़ी खीर है। खीर तो सुना था पर ये टेढ़ी खीर क्या है? आप कह रहे हैं सामने वाले को समझाना टेढ़ी खीर है तो टेढ़ी खीर का पर्यायवाची शब्द ले आओ। — — — — —

— — — — — — — टेढ़ी खीर मतलब टेढ़ा-मेढ़ा, टेढ़ा-मेढ़ा मतलब तेरा-मेरा। और जहाँ तेरा-मेरा हो जाता है वहाँ समझ में नहीं आ सकता है। टेढ़ा-मेढ़ा समझ में आ

है पर ये टेढ़ी खीर समझ में नहीं आता है। जो समझदार है वे मुहावरें आदि से समझ लेंगे किन्तु जो समझदार नहीं है वह समझना भी नहीं चाहता है।

जो समझना नहीं चाहता है मात्र प्रश्न करता है। जिसको कुछ नहीं आता है विद्यार्थी अथवा शिक्षिकायें इसी से प्रारम्भ करते हैं। क्यों की वह प्रश्न नहीं करेगा समझता चला जाता है। टेढ़ी खीर का अर्थ टेढ़ा-मेढ़ा होना है, टेढ़ा-मेढ़ा क्या ये भी समझाना है। टेढ़ा-मेढ़ा मतलब बगुला। बगुला से भी वह अपरिचित था। बगुला क्या होता है, उसका रंग कैसा होता है? सफेद होता है वह पुछता है सफेद क्या होता है।

बगुला कभी देखा नहीं वह कहता है उदाहरण देकर समझाओ। वह हाथ के द्वारा उसे समझाता है बगुला ऐसा होता है। अच्छा इसका नाम टेढ़ी खीर है, हम नहीं खा सकते है। जो खाया है वही नहीं पचाया है। उदाहरण के माध्यम से बच्चों के सामने रखो जल्दी समझ में आ जाता है। उदाहरण उसी को कहते हैं, कहानी, किस्से - लोक-भाषा में होते हैं, सब लोग परिचित होते हैं चुटकी बजाते - बजाते ही बच्चे सीख लेंगे वो भी समझदार होने में देर नहीं लगेगी। पहले कहानी - किस्सो से बच्चों को समझाया जाता था।

घर मे जो निठल्ले बैठे है दादी मां आदि वे ये कार्य करती थी। वह दादी सबको बैठाकर कहानी सुनाती है, यह भी देखती रहती है किसको समझ में आ रहा है और किसको समझ में नहीं आ रहा है। माँ को फुर्सत नहीं, दादी माँ को फुर्सत ही फुर्सत है। भाषा को लेकर आपलोग टेढ़ी-खीर को समझने का प्रयास करेंगे। खाने के बाद पचाना भी पड़ता है। खीर में दूध भी चावल

NOTES DATE

हो जाता है। छोटे बच्चे गरीब नहीं खायें यही समझदारी है। आप लोगों को 10-15 मिनिट का यह समय देते हैं. इसका सही-सही उपयोग करें। टेढ़ी खीर का मतलब टेढ़ा - भेड़ा का मतलब बगुला का मतलब सफेद का मतलब टेढ़ी खीर।

हितकारी - बंधुत्व को बढ़ाने वाले जो भाव हैं, उन्हें प्रेषित करना तो चाहते हैं, सामने वाले लड़के को अच्छे ढंग से उपकार का समझाना आवश्यक है। लोगों ने कहा - 5 मीनिट और देदो ना। आ० श्री ने आशीर्वाद में हाथ उठाकर कहा पंजा मतलब पांच हो गया ना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

25-12-16 "उतारो परिग्रह की पोट" प्रातः 9.15

संक्षेप से व्रती का स्वरूप निर्धारण किया है। सर्वप्रथम तो वह पापों से दूर होता है। इतने मात्र से उसे व्रती नहीं कह सकते। उसको शल्य से भी दूर होना चाहिये। शल्य मतलब पैरों में कील अथवा कांटा चुभ गया, वह ज्यों ही जमीन पर लगता है, ठनका लग जाता है। अब चलना तो है। गाड़ी का त्याग कर दिया, अब ये लग गया क्या करें। गाड़ी को भी कील आदि लग जाती है। इसको बोलते हैं शल्य।

शल्य से रहित व्रती होता है। उसे ही मैं आपके सामने कहना चाहता हूँ। व्रती सीमा बना लेता है। परिग्रह आदि की या वस्तुओं आदि की सीमा बना लेता है। हम किसी वस्तु को चाहते हैं, उसके बिना नहीं चल सकते हैं उसको परिग्रह नहीं कहा। हाँ उसी को अधिक संचित कर लिया तो परिग्रह कहलायेगा। गृहस्थों की

NOTES DATE

अपेक्षा मुर्छा को परिग्रह कहा। अब देखो सीमा बनायी-परिमाण किया किन्तु पकड़ बहुत ज्यादा है। इन दोनों में भेद करना है ताकि आप निश्चय व्रती को समझ सके।

जैसे एक व्यक्ति तालाब के किनारे बैठा है वह तालाब में एक कंकड़ डालता है कि ये तैरता है कि नहीं। ज्यों ही कंकड़ डाला त्यों ही वह डूब जाता है। दूसरा एक लम्बी-चौड़ी लकड़ी, वजन भी ज्यादा उसे डाला वह तैरती है। किसने तैरना सीखाया उसे। तैरना उसका स्वभाव है। डूबना स्वभाव नहीं है। हमें संसार रूपी समुद्र से पार होना है तो लकड़ी पर बैठ जाओ-तैर जाओ। सुनो, पहले सारे कंकड़ जो रखे हो चाहे चमचिला हो या नहीं उन्हें छोड़ना होगा।

लकड़ी का स्वभाव तैरना है। वह पानी में रहती हुयी भी पानी को ग्रहण नहीं करती। कंकड़ डूब जाता है। समय आपके पास भी नहीं है, हमारे पास तो है ही नहीं। इस प्रकार गृहस्थ अवस्था में लकड़ी के स्वभाव को लिये हुये हो आप भी पार होगा तथा दूसरे को भी पार करेगा। ये ध्यान रखना कंकड़ के स्वभाव को भी याद रखना। विस्तार कितना भी क्यों न हो उसके प्रति मुर्छा नहीं होना चाहिये। चक्रवर्ती है तो 96000 रानियों का स्वामी आप लोग एक पत्नि के है, फिर भी हालत खराब है। लोकतंत्र का नियम है। आप समझते है कि 96000 में तो जरूर डूबा ही होगा क्यों की हमारी तो एक में ही क्या हालत है।

महाराज, आपने इस बात को कैसे जाना। आपके मुख को तो देखता हूँ। कितनी लम्बाई-चौड़ाई

NOTES DATE

है। जो बाहर है मुख के भीतर भी इसी प्रकार का होगा।
तैरना आपका स्वभाव है डूबना नहीं।

हम स्वयं तिरे एवं दूसरे को भी तारें। लँगड़ाने की कोई बात ही नहीं है। निःशल्य रह करो। पैदल भी चले, प्रवास भी हुआ और यात्रा भी हो गयी, पूरा का पूरा छोड़ना भी नहीं पड़ा। आप समझ गये होंगे व्रती होने के उपरान्त वह परिग्रह रखते हुये भी लकड़ी की भाँति रहता है। लकड़ी के पास ममत्व नहीं है। वह पानी को पकड़ती नहीं, यदि गीली होगी तो वह डूब जायेगी।

अव्रती की स्थिति गीली लकड़ी की भाँति होती है। आकुलता के साथ रहने पर अच्छा भोजन खाया हुआ भी पचता नहीं है, निश्चिंतता से रहना चाहिये। गरिष्ट होते हुये भी पच जाता है क्यों की वह निश्चिंत होता है। आप लोगों ने अभी पिछली 8 तारीख से देख लिया। मोदी जी ने 50 दिन माँगे हैं सब की हालत क्या हो गयी? अणुव्रती होते तो कोई फर्क नहीं पड़ता। परिग्रह परिमाण व्रत के माध्यम से अपनी कोटी का निर्धारण करलो।

ऐसे-ऐसे भी श्रावक हुये हैं जिन्होंने समाज को इसका उदाहरण प्रस्तुत किया है। संतों ने मूर्छा को परिग्रह कहा, वस्तुओं को परिग्रह नहीं कहा। संग्रह नहीं होना चाहिये। ज्यादा तो नहीं कहना। बस इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

26-12-16 "संसार भिन्नता का राज है कर्म" प्रातः 9.50

सामने दो पेड़ खड़े हैं, किन्तु यह विचित्रता क्यों है। दोनों में पूर्व-पश्चिम का अन्तर है। जब की वर्षा का पानी दोनों को समान रूप से मिला। वायुमण्डल की हवायें भी एक सी प्राप्त हो रही हैं। सूर्य का प्रकाश भी समान रूप से मिल रहा है, किन्तु ये परिणाम धरती पर विचित्र क्यों? एक पेड़ हड्डी-हड्डी मात्र रह गया है, दूसरा पेड़ विवादित है। कोई युवा है, कोई वृद्ध है कोई प्रौढ़ है कोई आ रहा है, कोई जा रहा है।

अपनी-अपनी गतियाँ हैं। करनी का समय चालू है ये तो ठीक है। एक पेड़ बिल्कुल सूखा ठूंठ सा खड़ा है, दूसरे पर कोंपलें फूट रही हैं। आप लोग जब कभी भी घर में भाजीपाला दो दिन का ले आते हैं। जब तक पेड़ पर रहे हरे-भरे ताजी-ताजी रहते हैं, ज्यों ही पेड़ से अलग कर देते हैं त्यों ही पानी का छिड़काव भी क्यों नहीं देखो कुम्हला जाते हैं। तो इस पेड़ पर अभी कोंपल फूट रहे हैं, कोमल-कोमल हैं सूर्य की मार भी सह रहे हैं। इसे कौन से तत्त्व प्राप्त हो रहे हैं।

यदि इसे प्राप्त हो रहे हैं तो उसे क्यों नहीं। अब देखो, एक पेड़ हमेशा-हमेशा हरा-भरा बना रहता है, दूसरा ऋतुकाल के अनुसार चलता है, पतझड़ आने पर पूरे पत्ते झड़ जाते हैं। ये ही कर्म-सिद्धान्त हैं। हम बाहर से ही सारे भाव निर्धारित करते रहते हैं जब की भीतर के भाव ही बाहर दिखते हैं। आप लोग कहते हैं- ऊपर वाला पासा फेंके - नीचे चलते दांव। मैं कहता हूँ भीतर वाला पासा फेंके, बाहर चलते दांव। अपने-अपने कर्म पर यदि विश्वास करो तो पर कर्तृत्व एवं पर भोक्तृत्व की बात होगी ही नहीं। वह छोड़ने की ही नहीं जोड़ने की भी बात नहीं करता है।

जिसने जोड़ा ही नहीं उसे छोड़ने की आवश्यकता ही नहीं है। उसके लिये रविवार - सोमवार सब समान है। छोड़ो ऐसा कहने की आवश्यकता ही नहीं है।

अपने-अपने कर्मों का फल भोगे संसार। यह श्रद्धान बहुत बल प्रदान करता है। बस यह श्रद्धान होना जरूरी है। जो पेड़ सदा हरा-भरा रहता है वह अलग कर्म लेकर आया, जो सूखा है वह भी आगे हरा-भरा होगा ऐसा उसका कर्म है। छांव के साथ-साथ धूप भी रहती है। संताप भी है, ताप भी है और भीतर का पाप भी है। भीतर में आकुलता आदि में यही पाप कारण है। ठीक है आज के युवाओं को समझाना कठिन हो सकता है, किन्तु वृद्धों को तो समझना चाहिये।

वह वृद्ध भी कहता है महाराज हम तो भीतर से युवा ही बने है। ठीक है आप सदैव युवा ही बने रहें क्योंकि आत्मा तो कल-आज और कल भी वही है। जो इसे समझ लेता है, उसे ज्यादा समझाने की आवश्यकता नहीं होती है। घर में अनेक चातुर्मास जिन्होंने किये है। घर में भी चातुर्मास होते है। बारह मास में तीन-तीन चातुर्मास प्रतिवर्ष तो होते ही है। घर में रहने वाले सभी पर उन दद्दा का प्रभाव पड़ता है। इसलिये अनुभवी व्यक्ति घर में होना अतिआवश्यक है।

महापुरुष जिनके घर में जन्म लेते है, वो बालक अवस्था में भी दद्दा को सीखाते है। वृषभकुमार के घर में नाभिराय भी कहते है, वृषभकुमार के पास जाओ, वे ही कोई समाधान दे सकते है। इन्हीं का ज्ञान बहुत लम्बा-चौड़ा है। वे महिला-पुरुष, पशु-पक्षी, देव-दानव सबकी समस्याओं का समाधान करने वाले है। थोड़ी सी आँखें

NOTES DATE

मूंद ले तो सब ठीक-ठाक हो जाता है। जनता को देखकर नहीं पीया हो तो भी नशा चढ़ जाता है और पुलिस को देख ले तो नशा उतर जाता है। घर में भी एक-आध व्यक्ति ऐसा रहता है तो राग-द्वेष-मोह में कमी आ जाती है।

वह घर देवताओं के घर जैसा बन जाता है। अहोभाव समझता है। नहीं भी बने और आसपास ऐसा कोई हो तो उसका लाभ होता है। नीम का भी वृक्ष यदि पास में हो तो छाया तो मिल ही जाती है। लगाया नहीं है तो भी आपको छाया देता है इसी तरह संगति आदि में रहने से आकुलता में कमी आ जाती है। अज्ञान दशा में जो कर्म किये उनका फल मिलता है। इस दशा में अपने परिणामों को उनके अनुभव से स्थिर बनाना चाहिये। महापुरुषों से हमें यही उपदेश मिलता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

27-12-16 "अतिरेक बचाता है अकालमरण से" प्रात: 9.15

ये सब लोगों को ज्ञात होगा अनेक प्रकार के वाहन आप लोग उपयोग में लाते हैं। कोई बिजली, कोई डीजल, कोई पैट्रोल, कोई भाप से चलते हैं। भिन्न-भिन्न वाहनों की खुराक भिन्न-भिन्न होती है। ऐसी कोई मशीन नहीं है जो ये कहे की मुझे तो अच्छे तेल या घी के माध्यम से चलाओ। मनुष्य ही ऐसी गाड़ी है जो भिन्न-भिन्न पैट्रोल चाहते हैं। कुछ लोग कहते हैं ये त्यौहार क्यों आते हैं?

उसके निमित्त से खाने-पीने का अवसर प्राप्त होते हैं, किन्तु जो श्रीमान् हैं उनके यहाँ प्रतिदिन ही ऐसा खान-पान होता है उन्हें वह आनंद नहीं आयेगा। इसी प्रकार जो वाहन होते हैं उनकी यह शिकायत कभी नहीं होती की हमारे टैंक को फुल

कर दो। आज तक किसी मशीन ने नहीं कहा बल्कि पुरी की पुरी मशीन तेल से भर दें तो वह काम नहीं कर पायेगी। मनुष्य की मशीन ऐसी है जो हमेशा कहती है - full गाड़ी रखो। सुन रहे हैं आप लोग। मैं ठीक कह रहा हूँ ना। बोलो ना।

इसी प्रकार आप लोगों से कहना है, जितना आवश्यक है उतना ही इस यंत्र को खुराक दी जाये, तो शास्त्रों में लिखा है उसकी उदीरणा कम होती है। उसका काल पुरा होता है। कुछ लोग कहते हैं महाराज इसको आशिर्वाद दें की ये खुब जियें। ऐसा कभी भी सम्भव नहीं है। जितनी स्थिति बंध कर आया है, उससे एक सेकेण्ड भी कोई बढ़ा नहीं सकता है, हाँ इतना अवश्य है उसे पुरा जी सकता है। आप लोग यंत्र के माध्यम से जीना चाहते हैं, हर बात में अपव्यय हो रहा है। जितनी आयु है उसे बढ़ा नहीं सकते।

अब देखो, रील भर रहा है। (फोटो लेते हुए) पहले एक-आध फोटो लेते थे आज गिनती ही नहीं है। ये दिन में लाइट जला रहा है। इसी प्रकार क्षयोपशम होता है, उसे उतना ही काम में लेना, (ज्यादा चिंतन भी ठीक नहीं है तथा बिल्कुल भी चिंतन न करो तो भी ठीक नहीं है। अपनी इन्द्रियों से भी क्षमता से अधिक काम नहीं लेना चाहिये। क्षमता से अधिक काम लेने के कारण ही व्यक्ति बिमार पड़ जाता है। आज हर क्षेत्र में अतिरेक ही अतिरेक हो रहा है। काल का अतिरेक, भोजन-पानी का अतिरेक आदि-आदि। उसके परिणाम भी गलत निकल रहे हैं। सुख-शांति मिलना भी एक सीमा पर ही आधारित है। जबरदस्ती करना चाहें तो सुख-शान्ति भी तीन काल में भी नहीं मिल सकती। सीमा के बाहर कुछ नहीं मिलने वाला है।)

अभी सुनने में आया था विदेशी लोगों को सूर्यनारायण का दर्शन ही नहीं हुआ। जहाँ (–) में तापमान हो जावें वहाँ ठण्ड छिपाते में क्या होगा। किन्तु सूर्यनारायण कुटिया हो या कोठी सभी को समान रूप से प्रकाश देता है।

विदेश में सूर्यनारायण के दर्शन बड़ी ही कठिनता से होते हैं, जब भी वहाँ रवि दीखे उस दिन को रविवार मान लेते हैं। छुट्टी मना लेते हैं। वस्त्र अच्छे-अच्छे पहन रखे हैं किन्तु शरीर पर सर्दी भी लगनी चाहिये। आप लोगों को पैसे, धन-दौलत को सुख-शान्ति का साधन न मानकर प्रकृति रूप से जीना चाहिये। अतः चिरायु का आशीर्वाद न माँगकर पूर्ण आयु का आशीर्वाद हम दे सकते हैं। पूर्ण आयु का मतलब अकाल में नहीं मरना है। धर्म और कोई वस्तु नहीं है।

धर्म के द्वारा हम आयु को बढ़ा नहीं सकते। किन्तु जितनी आयु बाँधकर लाये हैं उतनी पूर्ण जी सकते हैं। शहरों में आकुलता बढ़ जाती है जबकी गाँवों में आकुलता उतनी नहीं होती ये ही पूर्ण आयु से जीने का राज है। जब व्यक्ति गांव से शहर जाता है तो कहता है दूध, घी, साग-सब्जि यहाँ पहुँचा देना। परिवारजन कहते हैं- बेटा! यहीं आ जाओ ये सब तो यहीं पर है।

संतोष धारण करने पर प्रकृति के बहुत नजदीक आ जाते हैं। चिरायु की कामना नहीं करना है। पूर्ण आयु की कामना करें। पूर्ण आयु में अकाल मरण का निषेध हो जाता है। कर्म सिद्धान्त पर विश्वास हो जाता है पूर्ण आयु पर। जबकी चिरायु की कामना करने से कर्म सिद्धान्त पर विश्वास कम हो जाता है। इतना ही पर्याप्त है। आप लोग इतनी सर्दी में बैठे हो- भले ही प्रबंध के साथ बैठे हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हूँ

NOTES DATE

24-12-16 "आकृति आत्मा की नहीं" प्रातः 9:15

आपको कहा गया है कि आपके कपड़े फटने को हो गये, ये नये कपड़े ले लो। उसने कहा - ठीक है नये हैं या पुराने हैं ये हम नहीं जानते आप नये कह रहे हो इसमें नयापन कुछ दिख रहा है? हां-हां इसे एक-आध बार धोकर ही काम में लिया है। आपके लिये यह काफी काम आयेगा। आप इसको धोयेंगे तो इसका रंग-रोगन आदि कैसा है? सब मालूम स्वयं मालूम पड़ेगा।

वह दिखेगा नहीं, जो दिखता था उस शकल में आकर सत्ता जमा ली है, आप अपनी सत्ता जमाना चाहते हैं तो इसे धोना पड़ेगा। हमारे कहने से धो रहे हैं पर आपका विश्वास होना चाहिये न। ठीक है आपके कहने से धो रहे हैं। आप पर विश्वास रखते हैं वस्तु पर विश्वास नहीं रखते हैं, गंदगी भर दूर हो जाये तो विश्वास कर लेंगे। जिस पर विश्वास किया जा रहा है, जब सामने दिखने लगेगा तो उस विश्वास का अनुभव होने लगेगा। चक्करदार है। सारे के सारे वाहन चक्करदार ही होते हैं परन्तु वायुयान एकमात्र ऐसा वाहन है जिसका मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा नहीं होता बिल्कुल सीधा होता है ऐसा सुना है हमने। इसी तरह मोक्ष-मार्ग भी सीधा होता है।

बीच में स्टेशन पड़ते हैं - पड़ेंगे किन्तु वहाँ गाड़ी रुकती नहीं यात्री उतरते-चढ़ते नहीं तो वह सीधा ही कहलायेगा जैसे देहली जा रहे हो तो झांसी आदि स्टेशन बीच में पड़ेंगे पर उतरने का नाम टेढ़ा-मेढ़ा है नहीं उतरने का नाम सीधा है। इसमें पैसा बहुत लगता है। हाँ लगता है न पैसा आप ही कमाने वाले हैं। ठीक है, आपको

NOTES

DATE

कहने से विश्वास करते है।

अब जैसे-जैसे धोना प्रारम्भ करदेते है, उसकी गंदगी/मैल बाहर आना प्रारम्भ कर देता है। अनुपात से फल मिलता जा रहा है। वैसा नहीं जैसा कहा था-ठिक है न हमने सोचा वैसा भी तो नहीं है। सांसारिक मार्ग में विश्वास होकर काम करते है पर मोक्षमार्ग में अंतिम समय तक कुछ नहीं दिखता।

घातिया कर्म नष्ट होने पर तो शरीर वैसाही पारदर्शी हो जाता है अघातिया कर्म नष्ट होने पर अब वही शरीर पूर्व रूप मॉडल जैसा दिखता है। आपके पास परोक्ष ज्ञान है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते है आपको भगवान का रूप नहीं दिखेगा। ऊपरी आकृति दिख रही है, आकृति मात्र पुद्गल की होती है, आत्मा कीकोई आकृति नहीं होती/बुद्धि में आकृति बना सकते हो क्यों की आप आदि हो गये हो आकृति देखने के। भगवान को आप परोक्ष आँखो से ही देख सकते हो प्रत्यक्ष से नहीं।

भगवान को आप कुछ साधन से देख सकते हो जैसे-वीतरागता दिखती है उनकी। और कुछ भी देखने में नहीं आयेगा। आप लोगों की आकृति और इनकी आकृति में और उनकी आकृति में कुछ भी अन्तर नहीं है किन्तु उनके भीतर और आपके भीतर में जमीन-आसमान का अन्तर है। आप शरीर को ओढे हुये है वे शरीरातीत है। शरीर के भीतर आत्मा है उसे धोते जाओ-धोते जाओ/कब तक? जब तक गन्दा पानी निकलता जायेगा तब तक धोते जाओ। आप कपड़ा धोने के बाद पछाड़ते भी है किन्तु इस तरह की कहीं फट न जाये। सावधानी रखते है बोलो ना। इकठ्ठा करके ही पछाड़ते हो ताकी गन्दगी भी दूर हो जाये और हमारी धोती

NOTES

DATE

भी साबुत बची रहें। इस प्रकार पछाड़ते-पछाड़ते तथा साबुन-सोडा लगाते-लगाते वह साफ होती है तब जरूर अनुभव करते हो की हाँ जैसा आप कह रहे थे वैसी ही मिल गयी। — — — — —

— — — — — — — — — मेहनत का फल मिला या नहीं?

आपलोग ताली बजा रहे हैं। मेहनत की है या नहीं। शिखर बनायेंगे, कलश चढ़ायेंगे किन्तु ध्यान रखना हमने किया ऐसा नहीं कहना है क्योंकी ये तो भव्य जीवों के लिये रखा है। मेरा-तेरा छोड़कर ही काम करना हैं। उस व्यक्ति को जैसे कपड़े धोने में आनंद आता है उसी प्रकार आप लोगों को कषाय रूपी मैल को धुने में आनंद आता है, दर्द नहीं होना चाहिये। — — — — —

— — — — — — — — — बहुत कठीन है फिर भी हम उन्हें पुजते हैं, उनकी बात मानकर हम भी वहाँ तक पहुँच सकते हैं। शरीर को कपड़े की भांति ओढ़ा है वैसे ही जैसे कपड़े ओढ़ते हैं। शरीर को आप कहते हैं। कपड़े गंदे हो जाते हैं या फट जाते हैं तुरन्त नये ले लेते हो इसी तरह शरीर का भी ध्यान रखो। इस शरीर को आप काम में लेओ और अपनी आत्मा की रक्षा भी करते रहो। धोती के माध्यम से जैसे पछाड़ते हो वैसे ही शरीर को भी पछाड़ते जाओ। जैसे धोती को फटने नहीं देते वैसे ही इस शरीर को भी फटने नहीं देना है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। — — — — — — — —

— — — — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

ईर्यापथ में विशेष —

० दवाई कहाँ से आयी क्या पता मन-वचन-काय की शुद्धि बोलने से दवा शुद्ध नहीं होगी।

NOTES DATE

29-12-16 "परिचय से दूर रखती - निरीहवृत्ति" प्रातः 9.15

प्रायकर जब अपरिचित व्यक्ति से आपकी मुलाकात होती है। अपरिचित और मुलाकात दो शब्द हैं। परिचित और मुलाकात ये भी हैं। भविष्य की अपेक्षा से परिचित होने की सम्भावना है, अतीत की अपेक्षा परिचित हो। प्रश्न उठता है - आप चिंता न करो मेरे पास सब है। मैं हूं। सब हो जायेगा। क्या हुआ? वह विश्वस्त हो जाता है।

अपने यहाँ परिचय को - मुलाकात को अपने ढंग से लेते हैं जो देखने में आ गया वह परिचित है, सुनने में आ गया परिचित है। किन्तु जो धक्कामुक्का खा गया, भीड़-भाड़ में आ गया वो परिचित नहीं होता। एक स्थान पर वस्तु को परिग्रह न कहकर परिचय को परिग्रह कहा। देखने मात्र से परिग्रह/परिचय नहीं होता। परिग्रह त्याग व्रत के बारे में लिखा परि आ समन्तात् चित्त गत वस्तु इति परिग्रह त्याग। एक स्थान पर लिखा - तुमको जो ग्रहण कर लेता है, तुम उसे ग्रहण नहीं कर सकते। आपको वह वस्तु ग्रहण कर लेती है। बंधन में आप आ जाते हैं, वह बंधन में नहीं आती।

वह वस्तु कहीं भी रखी हो, आप छटपट - छटपट करते रहते हैं। आपका नाम माइक से लिया गया। करोड़ों लोगों के नाम हो सकते हैं फिर आपका ही नाम लिया - कैसे? आप चिपक जाते हैं आपकी दृष्टि वैसी ही हो जाती है। आप अपने लिये ही निर्धारित करते हैं। परिग्रह कहता है - मैंने आपको बांध लिया। मोह कभी भी वस्तु के कारण नहीं होता हम वस्तु के प्रति मोह करते हैं। हम वस्तु को स्वीकारते हैं। क्यों स्वीकारते हो? दुःखदायी है। आपने ग्रहण कर लिया है इस कारण दुःखदायी है। इसीलिये हम कहना चाहते

है, वस्तु के अभाव में दुःख। वेदना होने लगे तो वह परिग्रह में आ जाती है। दूसरा भले ही आपको परिचित कराना चाहता है, आप उनको परिचित नहीं करते है तो आप स्वतन्त्र रहेंगे। वैर कभी भी एक तरफा ज्यादा नहीं चल सकता। इसकी उम्र इसकी Age कम होगी।

आप बंध सकते है, वह तो आपको कसकर बांधेगा ही। सिंह को पिंजड़े में रखा, वह आपके बंधन में हो ऐसा नहीं है। दूसरी ओर श्वान है, चुटकी बजाते ही दौड़ा चला आता है। सिंह के सामने चुटकी बजाकर देखना, पिंजड़े में से ही जबड़ा फाड़ कर बता देता है। वह बता देता है मैं पिंजड़े में नहीं हूँ, मेरे गले में पट्टा बांधकर तो देखो। मूकमाटी में एक जगह लिखा- सिंह कभी अपने गले में पट्टा नहीं बंधवाता। जैसे- आज तक किसी चूहे ने बिल्ली के गले में घण्टी नहीं बांधी उसी प्रकार सिंह को कोई भी पट्टा नहीं बांध सकता। वह स्वतन्त्र ही रहता है।

इसी प्रकार ज्ञानी किसी के वशीभूत नहीं होता। वह कहीं भी रहे निर्भिक रहता है। निर्भिक होना और निरीह होना दोनों में अन्तर है। निर्भिक हो वह निरीह भी हो ऐसा आवश्यक नहीं किन्तु निरीह जो होगा वह निर्भिक होगा ही। जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता है नहीं वह निरीह रहता है। मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं, वह स्वतंत्र रहता है वह जानता है आत्मा अजर-अमर है जो जीता था, जीता है और जीयेगा वही आत्मा है। इस प्रकार वह निरीह रहता है। आप लोग एक कार्ड देखकर ही कूदते रहते है।

हमारे सामने बंडल के बंडल रखते हैं, हम कहाँ रखें। महाराज, आपने रखा होगा। ट्रेजडी

नहीं है। फिर ट्रैजडी लाओ, एक मुनिम जी को भी छोड़ देना। उसे वेतन भी आप ही देते रहना। आपने ही कहा था महाराज के पास रहा करो। हम नहीं रख सकते। हम बड़ी दूर से आये हैं, दया रखा करो।

किसी की रक्षा के बारे में सोचना कथंचित ठीक है किन्तु आप जैसा चाहें/अनुकूलता के पक्ष में हो जाऊं ऐसा नहीं कर सकते हैं। आप भी क्यों करवाते हो? सिंह-वृत्ति तो सिंह-वृत्ति है, इसलिये यह कोई [illegible]ति ठीक नहीं है। परिचय होना एवं परिचय देना दोनों व्यवहार कुशलता के लिये भी आवश्यक नहीं है। ज्यादा लोग परिचित हो जायेंगे तो आप बेहाल हो जायेंगे। हजारों लोगों के नम्बर मोबाइल में है अब उन्हें याद रखना भी सिरदर्द हो गया।

बीसवीं शताब्दी में इस मोबाइल के कारण बहुत नुकसान हुआ है। उसमें नम्बर feeding है, पर यहाँ (माथे में) लाने के लिये और कोई नम्बर लाओ। ज्यादा नम्बर मत रखो। चिंतन चिंता या पीड़ा दूर करने का विषय बनता है तब तो ठीक है किन्तु जब आपने ईहा की होगी तभी तो वे पदार्थ भी आते हैं जिनसे डर लगता है।

इसलिये हमारे संतों ने उपदेश दिया कुछ समय चिंतन किया करो किन्तु एक चिंतन अवश्य किया करो मैं अकेला हूं। जो अपने आपको जानता है वह दुनियां को भी जानता है। हम अपने में ही रहें, दुनियां हममें आ गई तो हम समाप्त हो जायेंगे। अब थोड़ा सा अन्यत्व/एकत्व भावना भाओ। आज मेरी भावना भी तेरी भावना हो गयी है।

मेरी भावना कभी भी तेरी भावना नहीं होना चाहिये। तेरी भावना तो अन्यत्व भावना मेरी भावना तो एकत्व भावना। मोबाइल में फोन भी है तो फेन भी है। उसमें नम्बर छिपा देते हो। सरकार से लेना हो तो बाप-दादा का भी याद आ जाता है और सरकार को देना हो तो सबकुछ छिपा देते हो।

समझ मे आ रही है बात आपको। आ रही है। तो मुझे भी आ रही है। परिचित हो तो ऊपर-ऊपर से ही परिचित हो, चित्त में नहीं लेना है अन्यथा हैडेक होगा। बाद में वह हैडेक हार्ट अटैक हो जाता है। प्रायकर के जो ज्यादा लोभी होता है वह हार्ट अटैक के कारण नहीं मरता हार्ट-फैल होने के कारण मरता है। हम यही कहना चाहते हैं कि आपका वह हार्ट-फैल न हो कोसोवर हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

30-12-16 "मेरा दिमाग रहमान का" प्रातः 9.15

हम पढ़ते हैं और आप लोग भी पढ़ते हैं, पढ़ाते भी होंगे। शास्त्रों में लिखा है, पूर्वकाल में ही अथवा यूं कह दो 30-40 वर्ष पूर्व जब विद्या अध्ययन के लिये रात में भी जाते थे, उस समय बिजली का प्रबन्ध नहीं था। शहरों में तो था पर गांवों में नहीं था। रात में जाते थे तो लालटेन/दीपक की व्यवस्था होती थी।

आद्य दीपक - मध्य दीपक अथवा अन्त दीपक, ऐसे दीपक के माध्यम से पढ़ते थे। आचार्यों ने शब्दों के अर्थ का खुलासा उदाहरण के माध्यम से किया और कहा कि आद्य दीपक का मतलब जैसे एक लाइन है बैठे

जो सामने बैठा है उसके सामने दीपक रखा है इसलिये उस तक भी उजाला मिल जाता है। आज सबको अलग-अलग दीपक चाहिये, फिर भी पढ़ नहीं पा रहे हैं।

उसके बाद लाइन बड़ी हो जाती है तो उस दीपक को मध्य में रख देते हैं जैसे पहले 20 बच्चे थे तो सामने एक दीपक रखा था अब 30 बच्चे हो गये तो 15 इधर तथा 15 उधर बीच में वह दीपक मध्य दीपक होता है। 50 तक भी काम कर सकता है। अब अन्त दीपक भी होता है जो कमजोर होते तो अन्त में एक दीपक रखा जाता था वे अभ्यस्त हो चुके हैं कम प्रकाश में भी काम चल जायेगा। इस प्रकार पहले अध्ययन अध्यापन की विधी होती थी।

एक दीपक से ही काम चल जाता था। एक सूत्र आता है - "जीवितमरणाशंसा मित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि" 6/37 त. सू.। इसका मतलब है संलेखना/समाधिमरण के समय जीवन-मरण की इच्छा नहीं करना, मित्रों से अनुराग नहीं रखना। अंत में दो शब्द हैं सुखानुबंध, निदानानि। इसका अर्थ है केवल सुख के साथ ही अनुबन्ध नहीं लगाना है, निदान के साथ भी अनुबन्ध लगाना।

जो भोग भोगे थे उन्हें याद नहीं करना। पहले दो समय खाते थे अब एक समय ही मिलता है अतः हे भगवन् जल्दी-जल्दी मर जाऊँ, ऐसा नहीं तो वैयावृत्ति बहुत अच्छी हो रही है, लोग मिलने आ रहे हैं अतः एक आध महिने और ठीक जाऊँ तो अच्छा है। इस प्रकार ये भाव होते हैं। वो मेरे पुराने मित्र थे अभी आये ही नहीं हैं। उनसे अनुराग होता है। आगे आचार्य महाराज ने अनुबन्ध को सुख एवं निदान दोनों के मध्य रखा है, वही मध्य

NOTES DATE

दीपक माना जाता है। बिच में लगा दिया अब दोनों में सुख का अनुबंध और निदान का अनुबंध दोनों में लगाना है। हजारों वर्ष बाद आज भी वह दीपक बुझा नहीं।

लगभग दो हजार वर्ष आचार्य उमास्वामी महाराज ने वह दीपक जलाया जो आज भी हमें प्रकाश दे रहा है। उन्होंने हमारे लिये उजाले का प्रबन्ध किया, अब हम लोगों का कर्त्तव्य है कि जहाँ उजाला नहीं पहुँच रहा है, वहाँ तक हम पहुँचायें। अभी कह रहे थे सभी को मिलना चाहिये - सभी को मिलना चाहिये। सभी को लेना चाहिये ऐसा क्यों नहीं कह रहे हो? यहाँ सिलवानी में आजु-बाजु के गांव वाले भी आकर लाभ ले रहे हैं। गैरतगंज में हों तो सिलवानी वाले लाभ लें।

संतों की कमी हो तो इस प्रकार किया जाता है। बड़े-बड़े संतो/तीर्थंकरों/महापुरुषों ने विहार कर भव्यजीवों को संबोधित किया। उद्देश्य मात्र अहिंसा का है। राग-द्वेष के कारण हिंसा होती है उसी को दूर करना है। जीवों की ही हिंसा होती है, जैसे मकान की हिंसा नहीं होती है, हाँ मकान में कोई रहता था, उस पर ताला लगा दिया वह व्यक्ति सड़क पर आ गया इस प्रकार मकान की हिंसा होती है।

इसी प्रकार जो परिश्रम करता है, उसे बिना श्रम के आनंद नहीं आता। बड़े-बड़े तीर्थंकरों ने भी यही उपदेश दिया। उस समय की फोटोग्राफी एवं आज की फोटोग्राफी में बहुत अन्तर है। इसी तरह हमें भाषा-शब्द के अर्थ का ज्ञान होना जरूरी है। हमें एक बात और ध्यान में रखना है उजाले का प्रबंध तो कर लिया किन्तु आँख नहीं खुली तो उस उजाले का

NOTES

DATE

कोई महत्व नहीं रहेगा। सुन रहे हो आप लोग - भले ही आंखें बंद करके भी सुन लो। आंखें बंद करने से चित्त इधर-उधर नहीं जायेगा तथा उपयोग भी नहीं भटकेगा।

इस प्रकार संतों ने किस प्रकार भावों को संग्रहित करके शब्दों को रूप दिया और आज भी ऐसा लगता है, मानों वे सामने ही हों - बोल रहे हों। दत्त-चित्त होने पर ऐसा ही उपयोग लगता है। गुरुजी कहते थे - खाली-दिमाग शैतान का होता है। पढ़े-लिखे हैं, सब कुछ है लेकिन काम नहीं करते हैं तो उनका दिमाग भी शैतान का होगा। जो पढ़ा है उसका अर्थ लगाओ। शब्द सामने है - अर्थ आप लगाओ। फिर खाली दिमाग शैतान का - भरा दिमाग रहमान का हो जायेगा।

गाँवों में भी आज खाली दिमाग के मिल रहे हैं। पढ़े-लिखे हैं फिर भी खाली बैठे रहते हैं। खाली क्यों बैठे हैं - मुझे बताओ? अपने जीवन को पराश्रित होकर नहीं जीना अपितु स्वाश्रित होकर परिश्रम के साथ जीना है। हमारे यहाँ स्वाश्रित होने का ही समर्थन है। घर में रहकर भी क्या-क्या काम कब-कब करना है इनका चिंतन हमारे आचार्यों ने दिया है। जैसे स्कूल (विद्यालय) में बच्चों की अनुक्रमणिका बनाते हैं। कब-कब कौनसी कक्षा लगना है, उसी अनुसार कक्षा लगती है, इसी प्रकार घर में भी पाठ्यक्रम निर्धारित होना चाहिये।

कक्षा के बिना बाहर नहीं बैठना चाहिये। खाली दिमाग रहेगा ही नहीं। अनुक्रमणिका बनाकर उस पर अमल करना चाहिये। अनिश्चित जो होता है, उस ओर हमारा ध्यान जाता है। अप्रासंगिक जो विषय-कषाय है, उसका त्याग कर दें। वह जीवन में ही

आना चाहिये। अस्थानीय आर्त-रौद्रध्यान सब छूट जायेगा। इसलिये खाली दिमाग शैतान का होता है। आप कहते हैं बांधो इसे। कैसे? गैय्या की भांति नहीं बांध सकते हैं। जबरदस्ती नहीं कर सकते/शुरु से ही ऐसा करें।

सीमा बांध लेंगे तो अस्थानीय आर्त-रौद्रध्यान से बच जायेंगे। इसप्रकार सभी गृहस्थों के लिये केवल जैनियों के लिये ही नहीं जो आवश्यक कर्म बताये हैं वही तो अनुक्रमणिका है। आये दिन हमारे पास पढ़े-लिखे लोग, लाखों नहीं करोड़ तक के पैकेज वाले लोग आते हैं। वे कहते हैं महाराज, अब हम नौकरी नहीं करना चाहते हैं। वे जानने लगे हैं कि इसको किसे मिलने जा रहा है।

जो आवश्यक था उसे नहीं पढ़ाया जा रहा है जो अनावश्यक है उसे पढ़ाया जा रहा है। इस प्रकार आप अपनी संतान के लिये अनुक्रमणिका तैयार करके दे दो, जिससे उसका दिमाग खाली रहे ही नहीं। यह बहुत बड़ा महान होगा। ये आदि-मध्य-अन्त दीपक द्वारा ही संभव है। इधर-उधर ध्यान गया और गाड़ी पटरी से उतरी। डिब्बे सुरक्षित हैं तो क्या, यात्रियों का क्या होगा। चाय-पानी-नाश्ता कहाँ करेंगे। क्रेन आयेगी बड़ी-बड़ी तब उठा पायेंगी तब तक माला दे दो हाथ में वे जाप करते रहेंगे।

संयम के माध्यम से जो अस्थानीय होता है, आवश्यक नहीं होता उसे छोड़ दो बच्चों को यही सिखाया जाता है। आज बच्चे निराधार हो रहे हैं। पढ़े लिखे हैं अभी कुछ नहीं जो पढ़े लिखे हैं उन्हें सम्भालना कठिन हो रहा है। मैं भी कहाँ से प्रारम्भ करूं, न आदि है न मध्य न अन्त। अब तो जब जागे तभी सवेरा। जो अना

है, उसे छोड़ दो। आज कलियुग पर भी किन्तु सब गैरलाइन है। अंधकार है। कहाँ तक जायें हम फिर भी संतो की वाणी से अवश्य ही दिशा बोध मिलेगा, इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

31-12-16 "मान्यता पर आधारित होता देह" प्रातः 9.15

अभी हमने एक बात सुनी। एक वर्ष जा रहा है, जो पुराना हो गया है। अब नया वर्ष आ रहा है। उस पर लिखा होगा ये नया वर्ष है? इसकी पीठ पर लिखा होगा कि ये पुराना वर्ष है। ये सब व्यवहार है। इतना अवश्य है कि प्रत्येक संसारी प्राणी आयु कर्म से बंधा हुआ है। आयु कर्म से बंधा होने के कारण वर्ष पूरा हुआ या वर्ष पूर्ण होने से आयु को गिना। यह सब द्रव्य - क्षेत्र - काल - भाव अनुसार ही होता है।

द्रव्य के रूप में पहले बालक के रूप में देखा फिर युवा व प्रौढ़ के रूप में देखा। घर बसाया और अपना भी देखा, अड़ोस - पड़ोस को भी देखा। कई आये और चले गये। अपना भी एक दिन नम्बर आयेगा ये भूल ही जाते हैं। बाकी सब ठीक है किन्तु ये सबसे बड़ी भूल है, जैसे तो अमर बनकर आये हो। अमर भी मरते हैं। मरकर यहाँ आते हैं, यहाँ से वहाँ जाते हैं। ये एक चक्र है, इस चक्कर को हर कोई सहन नहीं कर पाता है क्यों की चक्कर तो गाफिल करने के लिये ही होता है। घूमघूम कर वहीं आ रहा है फिर भी नया - पुराना स्वीकार कर रहा है।

यहाँ कोई भी/कुछ भी नया नहीं है। पुराना भी नहीं है। बाहर देख रहे हो वह पुराना है, नया देखना चाहते हो तो बाहर देखना बंद कर दो। वह बंद हो जायेगा तो नया दिखने में आयेगा।

NOTES DATE

नाड़ी दिखाते हैं, वैद्य जी कहते हैं हाथ देखो। नाड़ी देखना है फिर हाथ क्यों मांग रहे हैं। हाथ लेने के उपरान्त नाड़ी पकड़ में आ जाती है। यह मात्र वैद्य जी ही पकड़ सकते हैं और कोई नहीं पकड़ सकता है। यह भूल-भूलैया जैसा लगता है किन्तु हम अपना ज्ञान उधर ले जायेंगे तभी वह पकड़ में आयेगा।

हमारा ज्ञान अस्थिर है,

जब तक ज्ञान/उपयोग को भी स्थिर नहीं करेंगे वह पकड़ में कैसे आयेगा? कल नहीं परसों की बात है, ऐसे भी लोग हैं जो आँखों पर पट्टी बाँधकर भी अपने सामने का पूरा बता देते हैं। आँखे काम नहीं करती तो क्या हुआ स्पर्श द्वारा/हाथों से छूकर भी सब बता देते हैं, ये कैसे हुआ? 3 वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक के बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है, इन बच्चों का ज्ञान एक सा बना रहता है। नींद आ रही है तो सो जाता है, आप लोग नींद का नाटक करते हैं फिर कहते हैं-हमें नींद नहीं आ रही है।

चिंता में डूब जाते हो अब तैरने की बात ही नहीं है। चिंता में डूबना भी एक प्रकार से निद्रा है। हम लोगों ने अपने जीवन को इस प्रकार से जकड़ लिया है कि हाथ-पैर मारते है पर बाहर नहीं आ पाते हैं। बच्चों के पास 3 वर्ष से 12 वर्ष तक की आयु में ऐसा क्षयोपशम की गुंजाइश है, जो इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। किन्तु धीरे-धीरे उन बच्चों में भी ऊपर की हवा लगती है और वे स्वीकार नहीं कर पाते हैं। यही मोह की दशा है। बड़े होने पर राग-द्वेष होता है, उस कारण सब समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष/उपसंहार यह है कि

जैसे संसारी प्राणी का ज्ञान विषयों की ओर जाता है, तो उसका ज्ञान दूषित होता जाता है और जैसे - जैसे वह बालकवत् बनने की ठान लेता है तो कुछ भी करने में बाधा नहीं होती है। बस, आत्मविश्वास के साथ हो।

अभी "मेरा सारा दुःख दर्द हरो" इस पंक्ति को दो बार हमने सुन लई। उनकी तरफ से ही हम सब लोगों से चर्चा करना चाहते हैं। आपका दर्द किस क्वालीटी का है? मेरा दर्द किस प्रकार का है। आप कहेंगे, महाराज! आपका भी कोई दर्द है। हाँ, मेरा यही दर्द है कि हे भगवन् इनका दर्द कैसे दूर हो जाये। अब दुबारा बोलने की जरूरत नहीं है। अपने दर्द को भूल जाओगे, बस दूसरों के दर्द की चिंता करना शुरू कर दो। यह आर्तध्यान नहीं - धर्मध्यान है। नयी गोली है - पुरानी दवाई नहीं है।

जब भी दर्द हो इसे ले लो। हम अपनी ही चिंता करने से दर्द बढ़ा रहे हैं। अपने से कई गुना दर्द अन्य लोगों को होता है ये थोड़ा सा भी याद करोगे तो अपना दर्द भूल जाओगे। जब कभी भी प्रतिकूलता हो, अपने अंग-उपांग में चाहे हाथ-पैर, पेट, आँख, सिर-पीठ, अंगुली कहीं भी दर्द हो इस विधी से बिल्कुल ठीक कर सकते हैं किन्तु अभी एक दर्द रह गया है वह है मन का दर्द। उसकी दवा हमारे पास नहीं है। मन में दर्द होता नहीं - मन में दर्द स्वयं पैदा करते हैं।

किसी को पागल कह दिया, वह कहता है मुझे पागल कहता है। 500 व्यक्तियों ने उसे पागल कह दिया अब वह अपने मित्र से जाकर पूछता है क्यों क्या मैं पागल हूँ? मेरा दर्द कौन हरेगा? यह दर्द नहीं है, मात्र

मान्यता पर आधारित दर्द है। मन की धारणा मजबूत बनाओ। यही मार्ग निर्विकल्पता - वितरागता की ओर ले जाने का रास्ता है। सभी संसारी प्राणी दर्द से परेशान है पर ऐसा नहीं है, ज्ञान लेंगे तो दर्द कुछ भी नहीं।

मेरा दर्द ठीक नहीं हो सकता, ये और गलत है। दर्द था ही नहीं और मन में बैठ गया कि ये ठिक नहीं हो सकता ये तो और गलत हो गया। मन में आकांक्षा का ही दर्द विद्यमान है। थोड़ा सा और (more) ताकी कम न पड़ जाये। कितना डालना है ये और बता दो। थोड़ा सा और..... पेट भरता ही नहीं। मन नहीं भरता पेट को तो हम देख लेंगे। पेट तो दो-तीन रोटी से हम भर लेंगे पर मन को कैसे भरेंगे।

तृष्णा की खाई खूब भरी......

कितनी भरी है आपने उसका कुछ नाप है या नहीं। कभी इंजीनियर से पूछा है कि वह कितनी गहरी है। गहरी है ही नहीं बस तृष्णा भर है। तृष्णा को मैं दर्द नहीं समझता। तृष्णा विकृति है जो प्रकृति/स्वभाव को मिटाने वाली है। प्रकृति का मतलब जागृति है जो दर्द को मिटाने वाली है। तृष्णा की खाई को भरने में लगा है, यही तो अज्ञान है - महाअज्ञान है। संत कहते हैं - यही मात्र अपराध है।

जिंदगी भर भी लगे रहे तो इस खाई को भर नहीं सकते। खाई मिटायी नहीं जाती उसे तो पार किया जाता है। ऐसा कोई प्रयास करो की वह पार हो जाये - हनुमान की तरह। आंखें मत खोलो - खाई को देखो मत उधर देखो जहां पार जाना है। ऐसा करके आप चलेंगे। मन का कोई दर्द नहीं है, यही दर्द है सब लोग सुखी बनें, इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। 卐

NOTES

DATE

1-1-17 — "आओ सीखें जैन (भारतीय) कैलेन्डर" प्रातः 9:15

आज रविवार की अपेक्षा से आये है या और कोई विशेषता को लेकर आये हैं। संसर्ग का प्रभाव कितना रहता है, इससे ज्ञात होता है। मोह का भी संस्कार होता है किन्तु मोहियों के बीच में रहने के कारण और संस्कार बद जाते हैं।

आप लोग देशी होकर विदेशियों से प्रभावित हुये हो, उसका आज यह प्रभाव दिख रहा है। आप देशी हैं, विदेशियों के जो संस्कार पड़े हैं वे धीरे-धीरे छूट रहे हैं किन्तु पूर्णतः नहीं छूटे हैं। तारीख के अनुसार चल रहे हैं, तिथी के अनुसार चलते तो महापुरुषों को याद करते। इसी तरह से लगभग 200 वर्षों से यह चल रहा है, यद्यपि आज पुरा विश्व इसी तारीख - मास - दिन की परिगणना कर रहा है।

वस्तुतः हम यह कहना चाह रहे हैं कि जो याद करने योग्य थी वे बातें तो भूल गये हैं और जो याद करने योग्य नहीं था उन्हें याद करते हैं। आप लोग मुहूर्त निकालने के लिये पंचांग काम में लाते हैं, तारीख के हिसाब से आज तक कोई भी मुहूर्त नहीं निकाला। कोई भी ज्योतिषाचार्य हो तो बता दो जो तारीख के अनुसार मुहूर्त निकालता हो। वर्तमान के जो मास के नाम हैं जनवरी - फरवरी आदि उसमें तारीख (तिथी) भी नहीं आयेगी। आज आप जन्मकुण्डली बनवाते हैं वह विदेश की अपेक्षा बनवाते हो या भारत की अपेक्षा?

भारत को याद रखते हैं कभी। भारत में तो तारीख मिलती नहीं, तिथी मिलती है। आप लोग अपना जन्म दिन तारीख के हिसाब से घोषणा करेंगे क्यों कि तिथी - मास तो आपके यहाँ

है ही नहीं। महावीर भगवान तो आपके यहाँ आयेंगे ही नहीं, क्यों की यहाँ भारत है ही नहीं। पंचमकाल में कोई महावीर भगवान होते ही नहीं। आज जो तारीख चलती है इसके अनुसार हम कुछ भी जानकारी नहीं ले सकते है। चौघड़ियाँ भी नहीं है। News पेपर आ गया है। योग भी नहीं - अमृत-सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग आदि।

ऐसी स्थिति में कुण्डली कैसे बनायेंगे। बहुत सारी बैशम्यतायें आ गयी है। आज इंटरनेट कम्प्युटर आदि से जुड़ रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की जयन्ती पर क्षेत्रों पर खुब भीड़ हो जाती है। क्षेत्रों की अपेक्षा तो अच्छा है, पर धारणा तो यही बनाकर जाते हैं। नया साल है, क्या नाम है इस साल का जो नया है।

नया साल तब प्रारम्भ होता है, जब नया मास प्रारम्भ हो। चैत्र तो अभी आया नहीं, इसे नया वर्ष तभी कहा जा सकता है जब मास भी पुराना नहीं और तिथी भी पुरानी न हो। वार तो सात ही है अतः पुराना ही रहता है। इन्हीं वारों में सारी के सारी तिथी-मास-वर्ष आदि आते हैं। यह प्राचीन ज्योतिष विषय है। आप लोग काल के आधार पर मुहूर्त निकाल रहे हैं, पर वह देशी है या विदेशी है यह चिंतनीय विषय है।

कोई पण्डित जी तो मिलेंगे नहीं, फिर कहाँ से लाओगे? इस प्रकार बहुत सारी बातें महत्व को ध्यान में न रखने के कारण भूलते जा रहे हो। इसी तरह पक्ष का भी तालमेल नहीं है। दो पक्ष होते हैं - एक कृष्ण पक्ष दूसरा शुक्ल पक्ष। आज महिना है किन्तु पक्ष

के बिना है। पक्ष चलता है तो पार्लियामेन्ट में चलता है पक्ष और विपक्ष। कोई भी नहीं बता पायेगा न ही नाना और न ही दद्दा ये सब कहाँ गये। हम तो आपके पक्ष के हैं।

इस प्रकार से काल का विभाजन नहीं हो रहा है। माह - पक्ष - तिथी - वर्ष आदि का भी विभाजन नहीं हो रहा है। इसमें भी और भारतीय तिथीयों के अनुसार 3 वर्ष में एक अधिक मास आता है। उस अधिक मास को मल मास के रूप में स्वीकारते हैं। उसको अशुभ मानते हैं। उसमें शुभ कार्य नहीं करते है। आज तक कभी जनवरी डबल आयी नहीं आयी।

उस मल मास के एक - एक पक्ष को गिनती में लेकर चलते हैं। इसी तरह अधिमास की तरह क्षयमास भी होता है। यह क्षयमास बहुत वर्षों के व्यतीत होने पर आता है। ये सब भारतीय ज्योतिषीय गणित के अनुसार चलता है। विदेशी पद्धति में पंचक, मल मास, शुभ योग, शुभ तिथी इत्यादि कुछ नहीं। ऐसे में शुभाशुभ की कल्पना करेंगे तो वह भी निराधार सिद्ध होगी। ऐसे में उनके अनुसार ही चलोगे। वे लोग यहाँ आकर आप पर हावी हो गये हैं। धर्म के संस्कार टूट गये हैं।

पुनः लौट सकते हैं, बस परिश्रम की आवश्यकता है। आज शाकाहार और मांसाहार को एक बताया जा रहा है। समाज माना जा रहा है। हमने सुना है कि अण्डे तो शाकाहार और दूध मांसाहार हो चुका है। सुन रहे हो। हाँ। रविवार को आये है आपलोग। आपके बच्चे इसे सिद्ध करने में लगे हैं। वे कहते हैं वह अण्डा बिना स्पर्श के आया है और

NOTES DATE

अब उससे जीव की उत्पत्ति नहीं कर सकते हैं। वह वनस्पतिकी भांति हमारे सेवन के योग्य है। यह पढ़कर आ रहे हैं। दादी-माँ के सामने ऐसा करेंगे तो वह क्या समझेगी। इसे क्या होगया है, इसे भूत लग गया है या बाहरी हवा लग गयी है। अथवा ऊपरील हवा लग गयी है।

दूध को भी इसी तरह से मांसाहार साबित कर रहे हैं। ऐसे पाठ्यक्रम को बच्चों को पढ़ाया जा रहा है, यह सब सेकान्त हो रहा है। यहाँकी विद्या तो पढ़ाई ही नहीं जा रही है। वही पढ़ाया जा रहा है, ऐसे में स्थिति विकट हो गयी है। दूध में शाकाहारी पना तब समाप्त हो जायेगा, जब वह प्रसुक न करें। उसे अन्तर्मुहूर्त में प्रासुक कर दें तो फिर ऐसा नहीं होगा। ये भेद हैं जो आज के विज्ञान को ज्ञात नहीं हैं।

हमारे पास आये सारी साधन-सामग्री लेकर आये और कहने लगे की महाराज देखो, दूध जमाने में कैसे जीवों की उत्पत्ति होती है। माइक्रोस्कोप के माध्यम से हमें बताया। देखो ये चल रहे हैं-फिर रहे हैं। हमने कहा - चलने-फिरने वाले जीव ही हो ऐसा नहीं है। ये सब उस दूध के पार्टिकल्स हैं, जो अभीतक तरल थे, अब सॉलिड (ठोस) हो रहे हैं। यह एक रासायनिक प्रक्रिया है। क्षारीय होने से ये टूटते जा रहे हैं।

मैंने कहा यदि जीव हैं तो कौनसे इन्द्रिय जीव हैं, उन्होंने कहा - एकेन्द्रिय जीव हैं। हमने कहा - एकेन्द्रिय जीव चलने की क्षमता ही नहीं रखता। चले तो जीव फिर तो रेलगाड़ी - विमान भाग रहे हैं तो क्या उन्हें जीव मानेंगे? यह तो एक तरह से रसायन की प्रक्रिया है। इसी तरह यदि

NOTES

DATE

उसमें जन्म की/उत्पत्ति की क्षमता नहीं तो वह अण्डा नहीं है ऐसा मानना भी गलत हैं। मादा-नर के शुक्र-शोणित के होने पर उसमें विकास होता हैं। यह जड़ में सम्भव नहीं हैं। इसे माँस के पिण्ड के अलावा कुछ नहीं मानते हैं। — — — —

— — — — फिर हमने दिखाया उन्हीं के माइक्रोस्कोप से कि लाओ एक भगोनी लाओ, उसमें एक गिलास पानी डालो, अब उसमें चूना डाला। अब देखो की ये जीव है या नहीं। ये पार्टिकल है। उस रसायन प्रक्रिया से गैस उत्पन्न हुयी, उस गैस को गुब्बारें (फुग्गा) में भर दिया। अब वह गुब्बारा चलने लगा क्या इसे जीव मानोगे। ये केमेस्ट्री है, रसायन प्रक्रिया है। यह जैन केमेस्ट्री है। उसमें पार्टिकल्स भले ही कट-पीट रहे हो किन्तु शुद्ध दूध है और शुद्ध जामन है तो वह दही शुद्ध ही मिलेगा। शुद्ध प्रक्रिया से उस दही के माध्यम से घी निकालते हैं। — — —

— — — — — ये सब उन्हें मालुम नहीं हैं। विज्ञान के माध्यम से शोध हो रहे हैं, जो गलत है। हमारे जितने भी तीर्थंकर अथवा महापुरुष हुये सभी शाकाहारी थे। उन्होंने शाकाहार में क्या शक्ति होती है, ये बता दिया। इस जैन विज्ञान-जीव विज्ञान को विदेश तक पहुँचा सकते हैं। — — — — —

— — — ज्यादा समय तो नहीं है। अठारवीं शताब्दी में ही ग्रहण कैसे लगता है-उन्हें बता दिया। भारत में ये सब ज्योतिष विज्ञान के माध्यम से सिद्ध है। एक दिन का नहीं - वर्षों तक का पता है कब ग्रहण लगेगा। सब अयन के माध्यम से ज्ञात हो जाता है - उत्तरायन एवं दक्षिणायन। अयन अर्थात पथ जैसे रामायण = राम का पथ। 5 मीनिट भी नहीं लगेगा, उन्हें समझमें आ गया। उन्होंने लिख दिया हम भारत में गये थे ग्रहण विद्या सीखी। वहाँ जाकर ज्ञान पाने की अपेक्षा उन्हें ही यहीं बुलाओं तो अच्छा होगा। — — — —

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

NOTES DATE

2-1-17 "तय तो करो अपना कार्यक्रम अपना पाठ्यक्रम" प्रातः 3.15

लौकिक दृष्टि से कोई भी व्यक्ति यात्रा करता है तो उसके लिये मार्ग अनिवार्य होता है। बिना मार्ग कोई भी व्यक्ति अपने गंतव्य तक नहीं पहुँच सकता है। गंतव्य तक पहुँचने के लिये भी वह अपनी यात्रा को सुखपूर्वक बनाता है क्षमता के अनुसार तय करता है कि मुझे किस साधन से किस-किस प्रकार से यात्रा करना है। हरेक व्यक्ति की क्षमता समान नहीं रहती है।

एक दद्दा जी है उनके साथ नाति भी है। वह दादाजी की अंगुली पकड़े हुये है। दद्दा उसका हाथ पकड़े हुये है, बताओ नाती पकड़े है या दादा पकड़े है। अब जाते-जाते मार्ग में खाई आ गयी। उस खाई को तो भर नहीं सकते, खर्चा ज्यादा लगेगा तो उस पर पुलिया बना दी। इधर से उधर एवं उधर से इधर उस पुलिया से आते-जाते रहते हैं और अपने गंतव्य पर पहुँच जाते हैं। पुलिया वहीं की वहीं रहती है, क्या सोचती होगी? वह सोचती होगी युग मेरी पीठ पर से इधर से उधर जा रहा है। मेरी यात्रा इसी में है। पार लगाने वाली होने के कारण भी वह वहीं की वहीं रहती है।

आगे जाते-जाते अब एक बहुत बड़ी नदी आ गयी। अब पहले कोई पुल आदि तो होते नहीं थे। नाव चाहिये। छोटी सी नाव छोड़ दी-ऐसा भी नहीं नाविक भी चाहिये। वह नाविक इधर से जनता लेकर उस पार तथा उधर से इस पार पहुँचाता है। सभी अपने-अपने गंतव्य अनुसार गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। धन्य है आपने नदी पार करवा दई। हव"। आप भी अपने-अपने काम की

NOTES

DATE

नीति-न्याय से करते रहना। तभी गंतव्य तक पहुँच जायेंगे। यह वस्तु-विनिमय का उदाहरण है। आज तो मुद्रा की किमत बहुत हो गई गयी है।

ये दो उदाहरण दिये, अब देखो मोक्षमार्ग में कौन है? रास्ता बताने वाले? अंगुली पकड़कर ले जाने वाले कौन है? संसार समुद्र बहुत बड़ा है, जो पार कराने वाला कौन है? गुरु है। वो पुलिया और नाव यहीं रह गये, नाविक बन गये। स्वयं भी पार हो रहे हैं हमें भी पहुँचा रहे हैं। समोशरण में आ जाओ- पार हो जायेंगे। सिद्ध परमेष्ठी तो बोलते नहीं- सिद्धालय में जाकर विराजमान हो जाते हैं। तीसरे नम्बर पर आचार्य परमेष्ठी होते हैं। वे अंगुली भी पकड़ते हैं, हाथ भी पकड़ते हैं और नटखट हो तो कान भी पकड़ते हैं। वे स्वयं जा रहे होते हैं मोक्षमार्ग पर बिच में कोई आ जाता है तो उसे भी ले लेते हैं।

यह ध्यान रखना पुलिया-नाव रुके रहते हैं किन्तु गुरु कभी रुकते नहीं हैं। चलो तो साथ हो जाओ। रुकेंगे नहीं, हाँ बाद में आना हो तो पद-चिन्हों को देखकर आ जाओ। हम रुकेंगे नहीं, हाँ कभी-कभी चाल बदल सकते हैं। और कभी-कभी अपनी चाल से भी चला सकते हैं। ध्यान रखना कन्धों पर नहीं बैठायेंगे। मोक्षमार्ग है ये हमारा अपना कार्यक्रम है - अपना पाठ्यक्रम है। न ही रुकेंगे, न ही कन्धों पर बैठायेंगे।

ये एक ऐसा विद्यालय है जहाँ पहली कक्षा और अंतिम सातवीं कक्षा दोनों की ही परीक्षा प्रतिपल होती रहती है। यह कार्यक्रम है, वृद्धावस्था तक पाठ्यक्रम चलता रहेगा। इसी अनुसार वे गुरु थोड़ा बहुत संकेत देते रहते हैं। आप लोग उस संकेत के अनुसार विकास कर सको तो ठीक है, अन्यथा

पीछे रह जाओ तो पीछे से पूछते-पूछते आ जाना (जैसे-सम्मेदशिखर में आपका साथी पीछे रह जाता है तो आप कहते हैं, भैया हम चलें। अंधों की भी चिंता हो जाती है। नहीं पहुँचे तो दोनों ही रह जायेंगे। अपना साथी उसी को बनाना चाहिये जो आपके शाम की अंधों की भी चिंता करता हो।

मोक्षमार्ग अलग ही है। मोक्षमार्ग एवं मोहमार्ग में बहुत अन्तर है। मोही चलना चाहे तो बनता नहीं। राशि एक होने से नहीं पहनावा भी एक होना चाहिये, दृष्टि भी एक होना चाहिये। इस प्रकार मोक्षमार्ग में गुरुओं का बहुत बड़ा योगदान है।

अब देखो आपके हाथ में पाँच अंगुलियाँ हैं। पाँच होते हुये भी सब में भिन्नता है। बिच वाली लम्बी है, अंगूठा मोटा है, लेकिन पाँचो की ऊँचाई कम-बेसी होते हुये भी एक हो जाती है, तो मुट्ठी बन जाती है। मुट्ठी बांधते हैं, तो अंगूठे को भीतर डालते हैं, कोई घुस नहीं पायें। बुंदेलखण्ड में कहावत है- बंद मुट्ठी लाख की खुल गयी तो खाक की। मुट्ठी अपनी बंद ही रखोगे, छोटी है पर काम की है। इसे बंध ही रखियो सब काम होता जायेगा।

इसी प्रकार आत्मा के पास बहुत शक्त है, पर कोई वैसा काम करता ही नहीं है। गुरुजी का जो संकेत है उसी दिशा में कदम बढ़ायें-भले ही धीरे-धीरे चलें, रुकना नहीं है। रास्ते में रुकना स्वयं के लिये बाधक तथा दूसरों की भी चिंता का विषय बनता है। अड़ौस-पड़ौस भी देखता है कि भैया वह रुक रहा है फिर हम कैसे आयेंगे। जो कार्यक्रम बना है, हम उसे पलट नहीं सकते हैं। उतने-उतने स्थानों पर ही आयेंगे, उससे

NOTES DATE

बंध नहीं सकते। पूरा का पूरा नगर भी एक साथ हो सकता है। संरक्षण / संवर्धन का कार्य भी तभी हो सकता है। सब लोगों को एक ही साथ और एक ही चाल में कदम उठाना आवश्यक होता है। यह सब संकेत जैसे सेना का सेनापति होता है अथवा आचार्य होते हैं, वे सब लोगों की जागृति का कारण बन जाते हैं।

सेतु मतलब पुलिया या नाविक के बारे में बताया। मोक्षमार्ग में जो गुरु होते हैं वे दूसरे को नियुक्त करके पुनः काम करते रहते हैं। पहले के जमाने में डाकिया होते थे। 10 कोश तक एक घुड़सवार डाक लेकर जायेगा, वहाँ से दूसरा घुड़सवार 10 कोश लेकर जायेगा एवं उसकी डाक लेकर आयेगा। यह उधर लेकर जायेगा तथा उधर से इधर भी लायेगा। इस प्रकार दिन भर में 100-125 कोश तक संदेश भेज देते थे। ठीक इसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी एक-दूसरे के हाथ में जिम्मेदारी देकर आगे बढ़ते हैं।

धन्य है! मोक्षमार्ग, मोक्षमार्गी और मोक्षमार्ग के नेता, इन तीनों को नमस्कार।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

3-1-17 "प्रयोग का मतलब [illegible] सम्यग्दर्शन" प्रातः 9.15

गुरुजी की एक पुस्तक है - पवित्र मानव जीवन। उसमें मंगलाचरण में क्या लिखते हैं? उसका अनुवाद अभी मराठी में यहाँ लाकर दिया है। उसमें है - आपने पहले नहीं पढ़ी है मराठी में है। उसका मंगलाचरण है - मानव जीवन इस भूतल पर उत्तम रत्न सुखदाता है, जिसको अपनाने से नरसे नारायण हो पाता है। लख चौरासी योनियों में भटकने के बाद ही यह नर जीवन भी जन्म जात में दुर्लभ है। किसकी कितनी क्षमता, किसके योग में उद्घाटन इसको पा नहीं पाते हैं। इसमें तल में मक्खन की बात कही है। अब दूध आपके पास है। दूध के स्वभाव से परिचित भी है। परिचित होते हुये भी उसकी जो सर्द ढूधी

शक्ति है, उसको सामने देख नहीं पाते हैं। दूध में घी है, ये सबको श्रद्धा है। हाँ। पर दूध में घी का स्वाद आया आपको? नहीं।

दूध आपके पास मनोमय टनोटन है, उसमें बस थोड़ी सी जो घी की बोतिया में परी इतनी सी जामन दे दी। उसकी मात्रा थोड़ी सी है। नाम ही जा म न है। वह फाड़ता नहीं है, जमाता है। मात्र १२ घण्टे भी नहीं हुये जमा होता है। अभी यहाँ के सेठ जी गुड़ लाये थे (चाँदी की डली वाली) बस उसमें थोड़ा सा गिरा दिया सब का सब जम गया। अब वह दूध के रूप में नहीं रहा, देखो जामन की करामात। १२ घण्टे के भीतर-भीतर जमा देगा। बस जो प्रक्रिया है उसी अनुसार करें।

श्रद्धा-तद्धा नहीं करें अन्यथा वह फस जायेगा। इसी को बोलते हैं प्रयोगशाला। दूध के मोह का त्याग करना होगा, धैर्य रखना होगा। मात्र सम्यग्दर्शन के श्रद्धान-श्रद्धान की [illegible] रट से ही काम चलने वाला नहीं। सक्रिय सम्यग्दर्शन होना जरूरी है। गंवार भी उस जामन से व्यवस्थित जमाता है जब की पढ़ा-लिखा उसे गंवाता है। विश्वास होने के साथ-साथ प्रयोग होना जरूरी है। आज का जमाना प्रयोग से दूर भागता जा रहा है। वह कहता है हम सब खरीद लेंगे, नोट से सब खरीद लेंगे। अब 1000 का नोट फेंको कुछ नहीं मिलेगा। 500 और 2000 को भी इकट्ठे करके रखो कुछ होने वाला नहीं है।

सिलवानी वालो- बाहर निकालो तभी सब लोगों को संतुष्ट कर सकते हैं। अभी कुँथलगिरि वाले आये हैं, वहाँ भी हतकरघा चल रहा है। सोचो, अच्छे-अच्छे लोग, नेता लोग भी प्रभावित होकर देखने आ रहे हैं। पहले ये सब चलते थे किन्तु विदेशी संस्कृति और पैसों के पीछे सब

चला गया। अब डबल रोटी खाओ - सिंगल रोटी नहीं मिलेगी। बटर खाओ - घी नहीं मिलने वाला। इस बटर के बिच में क्या रखा है - पता ही नहीं। बस, सुपाच्य कहकर खा रहे हैं और बिमार पड़ रहे हैं।

सब ओर से परतंत्र होते जा रहे हैं। गुरुजी का कहना था - भारत का इतिहास पढ़ो। तभी ये सब समझ में आ पायेगा नहीं तो तीन काल में भी समझ में नहीं आने वाला। भारत को समझने की जरुरत है। मात्र भारत ही है जो दूसरों को समझाने की क्षमता रखता है। यहाँ की प्राचीनता देखो। कोई भी व्यक्ति यहाँ निष्क्रिय नहीं, सभी सक्रिय रहते हैं। उस सक्रियता से जो भीतर छीपी शक्ति है वो समझ में आ जाती है।

भारत में मांगने की जरुरत नहीं। हाँ, कोई आये तो उसे युं (हाथ से इशारा) दे देते हैं। भारत में एक हाथ वाले नहीं, दो हाथ वाले युं (अंजुली) करते हैं। वह भाव प्रतिक्षा में रहता है। मेरे यहाँ कब आयेगा। संत कहते हैं - अपना आँगन संभालो। भारत की यह नीति। सक्रियता आज तक चली आ रही है। बिच में कुछ विदेशी निति आ गयी।

आज ये लोग ऐसा काम कर रहे हैं, बड़े-बड़े इंजिनियर भी वह काम नहीं कर सकते हैं। 5-6 महिने में ही ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते हैं कि बड़े-बड़े लोगों को भी आश्रय दे सकते हैं उन्हे भी प्रशिक्षित कर सकते हैं। प्रतिदिन ५००-६०० रु. की आय सहज में कर लेते हैं। इसलिये आज लोगों को नौकरी का चक्कर छोड़कर भारतीय संस्कृति की परिक्रमा देना चाहिये। बड़ा अन्तर है - चक्कर एवं परिक्रमा में।

चक्कर में गिर जाता है उसकी परिक्रमा बड़े ही आदर भाव के साथ लगाई जाती है।

यह कार्य बड़ी तेज गति से शुरू हो गया है। आपस में स्पर्धा के साथ दुगना-दुगना कर रहे हैं। माता-पिता को भी अपने बच्चों की चिंता थी, ये भविष्य में क्या करेगा। अब वे कमाई करने लगे तो सब चिंता दूर हो गयी। आश्रय देना एवं आश्रय दाता बन जाना बहुत बड़ी बात है। हम लोग अज्ञान / आलस्य के कारण सो गये थे, माता-पिता, परिवार, समाज, राष्ट्र सब वही चिंता में है, किन्तु यह ऐसा रोजगार का कार्य शुरू हुआ जिसके परिणाम सबके सामने है।

सुखी होना वरदान है जबकि दुःखी होना अभिशाप है। अपने ही अज्ञान के कारण आज दुःखी हो रहे हैं। पढ़े-लिखे हैं, नौकरी नहीं मिलेगी तो क्या करेंगे। भारत में कभी मांगने की बात ही नहीं है। इस काम से अहिंसा धर्म पालन होकर पुण्य का विकास और पाप का क्षय होता है। जो तरल था उसे भी जमना पड़ा, जो दूध था उसे दही बनना पड़ा उस जामन के कारण। जमा दही है अब उसमें से नवनीत तभी जब थोड़ा मंथन करेंगे।

मंथन कैसे होता है- पता है आपको? मथानी से मंथन होता है, डंडे का नाम मथानी नहीं। एक छोर पतला/माथा रहता है। माथा वाला ही ये काम करेगा। उस मथानी को एक रस्सी में लपेटकर एक साथ दोनों नहीं एक-एक छोर को खेचेंगे तब वह मंथन होगा। ये प्रयोग है। छोटे बच्चे को भी बैठा दो, 5 मीनिट में वह नवनीत आना प्रारम्भ हो जाता है। मक्खन ऊपर आने लगता है, तक्र नीचे रह जाता

है। वह मक्खन तैरने लग जाता है। अभी तक डूबा था। आजादी के 70 वर्षो बाद भारत अभी भी डूबा है। तैरेगा। स्वभाव ही ऐसा है। आलस के कारण ऐसा हो रहा है।

400-500 बच्चे इसमें लग गये, वे आते है उनके खुश चहरे देखकर हमें भी खुशी होती है, इसमें कई तो आर्किटेक्ट, इंजिनियर, प्रबंधक, C.A आदि भी है। वे सब खुश होकर यह कार्य कर रहे है। यह चमत्कार 14-15 साल में नहीं हुआ, 5-6 महिनों में ही हो गया।

इसलिये ज्यादा पढ़ने की आवश्यकता नहीं, जो पूर्वजों ने संकेत दिया उसी अनुसार करते जाओ। पुनः करेंगे तो पुनः वही मिलेगा। भारत पहले भी विश्व का गुरु था और आगे भी रहेगा। आंख बंद करके कार्य करेंगे तो बिल्ली की तरह मार पड़ेगी। सिलवानी वाले भी मांग कर रहे है- सोच लो, हमारा आशीर्वाद तो तभी मिल पायेगा।

शास्त्रों मे कहा है- उत्तम खेती, मध्यम व्यापार, अधम चाकरी। नौकरी तो भिक्षुक है। सही उत्पाद सही तरीके से सही व्यक्तियों के हाथ में पहुंचाना सात्विक व्यापार है। जैसे आप लोग मन्दिर बना रहे है, श्रीजी प्रक्षाल कौनसे कपड़े से करोगे - हथकरघा, अचार भी उसी हथकरघा का होना चाहिये। (सिलवानी हथकरघा केन्द्र) अभी तो शाखा खोल लो केन्द्र की बात बाद में करना। इसके बाद पानी छानने का छन्ना, चांदी की गुण्ड तो आ गयी। वह छन्ना भी हथकरघा का हो। अहिंसा - सात्विकता के लिये यह अनिवार्य है। इतना ही पर्याप्त समझता हूं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

5-1-17 — — "भोजन क्यों करें" — — प्रातः 9.15

— — आठ मंगल द्रव्यों से आप लोग पूजा करते हैं। उनमें से एक द्रव्य के बारे में विशेष कहना है, वह द्रव्य है- क्षुधा रोग विनाशनाय "नैवेद्यं" नि० स्वाहा। इस नैवेद्य को भोजन में भी चढ़ाते हैं और भजन में भी चढ़ाते हैं। हाँ लेकिन भावना अलग-अलग है। भोजन के समय वह खाद्य और भजन के समय उसे रोग निवारण हेतु चढ़ाते हैं। सही कह रहा हूँ ना। स्व! — — — — — — — — —

— — — रोग के निवारण के लिये आचार्यों ने औषध दान बताया। क्षुधा रोग है इसके लिये नैवेद्य का दान एक तरह से आहार दान भी हो गया। इधर आहार में भी उसी को उपयोग में लाया जा रहा है, किन्तु भोजन के समय यह सब भूल जाते हैं। भोजन के समय वह आहार दान के रूप में आता है। आहार दे रहे हैं, औषध नहीं दे रहे हैं। रोग के निवारणार्थ औषध दिया जाता है। — — — —

— — — — — — आहार दान अनेक प्रकार का होता है तथा और भी अनेक गुण रखता है। क्षुधा के निवारण के लिये होते हुये भी भोगभूमि के जीवों में आज तक भी निवारण नहीं, स्वर्गों में भी अमृत की घूंट लेकर आये फिर भी आज तक तृप्त नहीं हुये। मरण को प्राप्त हो गये फिर उसे अमृत कैसे कहें? अमृत का दान नहीं होता, आहार का दान होता है। — — — — — — —

— — — — अमृत चखा देवगति-भोगभूमि आदि में फिर भी मरण से मुक्ति नहीं मिली किन्तु आहार दान देने पर पक्का हो जाता है। क्या पक्का हो जाता है?

NOTES

DATE

रोग के निवारण भूत जो भी अनिवार्य है, वह पक्का हो जाता है साथ ही अन्य जो उपयुक्त है वह भी हो जाता है। रोगके कारण धर्मध्यान नहीं कर पाते थे, वे गृहस्थ के यहाँ जाते हैं उसी में से अनुकूल ले आते हैं।

अब उसका उपयोग अपने लिये नहीं करना है, भगवान के भजन करने के लिये उपयोग करें। यह तो गृहस्थ लोग भी कर सकते हैं। जैसे वाहन चलाने के लिये तेल डालते हैं वैसे ही शरीर चलाने के लिये यह आवश्यक है। श्रावकों को समझना चाहिये मुनिराज अपने शरीर रूपी वाहन को तेल डालकर उपयोग में लेते हैं। उसमें ज्यादा कुछ नहीं, बस यह आवाज न करें।

जैसे चक्की में आवाज आने लगती है तो आप क्या करते हैं? जल्दी से कुछ अनाज डाल देते हैं, अन्यथा सब बिखरा हो जायेगा। उसी प्रकार यह शरीर आवाज न करे। बच्चों की तरह कुछ दे दिया फिर इससे पूरा काम लेना है। इस प्रकार सामान्य दान एवं आहार दान में अन्तर है। हर्ष के लिये लिया जाता है उसे दान नहीं कहते, लेकर उसके बाद कायोत्सर्ग करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान या सत् कार्य किया जाता है।

आप लोग इसे गाड़ी में पेट्रोल की भाँति लेंगे तो कभी सुख की कल्पना नहीं होगी। इसका महत्व भी तभी समझ में आता है। बड़े-बड़े तीर्थंकरों आदि भी क्षुधा रोग के निवारण हेतु लेते हैं। संसारी प्राणी इसे औषध के रूप में याद नहीं करता अपितु इसके लिये चातक-मटक चलता रहता है। वह इसे सुख के लिये कारण मानती है, यह ठीक नहीं है।

NOTES

DATE

इसके विपरित इसका उपयोग वैय्यावृत्ति, धर्मध्यान अथवा मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने के लिये उपयोग करें। श्रावक देशावकाशिक शिक्षाव्रत आदि के लिये, कर्म निर्जरा के लिये करता है। कहीं-कहीं देवपूजा में भी अतिथी-संविभाग लेलेते हैं। वैसे भी गुरुपूजा में सभी समाहित हो जाते हैं।

चारों दानों का समावेश हो जाता है, मोक्षमार्ग की भी जानकारी हो जाती है। उसी ओर बढ़ना है, अतः श्रावक इसे करता है। इसके लिये सौधर्म इन्द्र भी लालायित रहता है। स्वर्गों में अमृत चखने पर भी उसे शान्ति नहीं मिली। आप लोगों के यहां दाना-मेथी जो कड़वी रहती है फिर भी उस मैथी से ही मैत्री रखलेते हैं। वह अमृत चखता है। दोनों से ही क्षुधा रोग का निवारण नहीं होता।

मरते न बचावे कोई। बोलो सौधर्म इन्द्र! आपका और हमारा हाल एक ही है। वही अटक गये हैं सौधर्म इन्द्र - पर्याय परिवर्तन भी नहीं। इस प्रकार भोजन तथा भजन में भेद करना चाहिये यह भेद एक सम्यग्दृष्टि की ही नजर में आता है, अन्य इसे नहीं जान सकते हैं।

इस शरीर के माध्यम से हम धर्मध्यान करें और दूसरों का उपकार करें इसी में हमारा कल्याण है। समय पर्याप्त हो गया इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

NOTES

DATE

5-1-17 "विश्वास करो कर्म-सिद्धान्त पर" प्रातः 9.15

आप लोग विष और विषधर का नाम सुनते ही अपने मन को भयभीत कर लेते हैं किन्तु अमृत का नाम सुनते ही भय कहाँ चला जाता है, पता ही नहीं। ये भी सही है कि एक जीवन लेने वाला होता है तो एक जीवन देने वाला होता है। आप कहते हैं महाराज ये विषधर है - प्राण लेने वाला है अतः इधर मत जाओ। ऐसी धारणा होती है तथा अमृत पीने वाला का जीव अमर हो जाता है। ये दोनों ही धारणा ठीक नहीं है, इन दोनों के अलावा और कुछ भी है ही नहीं, ऐसा नहीं है। - - - - - - - - - - - - - - -

ये दोनों तब तक ही जीवन देने अथवा जीवन लेने वाले होते हैं, जब तक आपके पाप अथवा पुण्य कर्म का उदय नहीं होता। ये आप सभी की सब सम्मति है? हव। एक-आध मत भी इधर नहीं है। दुनिया इधर से उधर हो जाये तो भी यही मत सिद्ध होगा। तो बाहर से जीवन दान या जीवन हरण करना तब तक दिखते हैं जब तक हम पुण्य-पाप को स्वीकार नहीं करते हैं। - - - - - - - -

इसीलिए आप लोग कहते हैं - भगवान नाग शय्या पर बैठे हैं। नाग शय्या और फूल शय्या से उन्हें कोई मतलब नहीं। वे तो इन सब से परे हैं वे कितने ही दुःखों को दूर करते हैं ऐसा भी कहते हैं। कथंचित तो वह ठीक है, किन्तु जहाँ कर्म-सिद्धान्त की बात आ जाती है तो ये सब गौण हो जाता है। इसलिये जो इस सिद्धान्त पर विश्वास रखता है वह इन दोनों के बिच रहते हुये भी न तो प्रेम रखता है तथा न ही भय खाता है। जीवन एवं मरण के मध्य उसके मन में भेद रेखा रहती है, तब तक ही यह चलता-रहता है। आत्मा की - - - - - - - - - - - -

और - भीतर चला जाये तो ये सब कुछ नहीं होता। नागशय्या न तो भयभीत करने वाली होती है न ही सिंहासन आकर्षित करने वाला होता है। सिंह को ही आसन बना लिया है जिसने ऐसे भगवान ही होते हैं। लोक व्यवहार में न्यायालय के जज भी सिंहासन पर बैठते हैं।

वहीं वकील खड़ा होता है, जो जज को भी उलझाने का प्रयास करता है। यहाँ वकील बैठे हैं - गड़बड़ नहीं हो जाय। पचासों पॉइन्ट वह वकील जज के सामने रखता है किन्तु जज मात्र एक ही निर्णय जो सबको स्वीकार होता है। आप सोचिये लौकिक दृष्टि से भी उसी को सिंहासन देते हैं, जिसकी बात सबको स्वीकार्य होती है।

वकील - वकील होता है जब कि न्यायाधीश - (जज) न्यायाधीश ही होता है। वह बिना किसी भेदभाव के निष्पक्ष होकर निर्णय देता है। उन त्रिलोकीनाथ को तो सिंहासन या नाग-शय्या से कोई मतलब नहीं। वस्तु जैसी है वैसी ही उनको दिख रही है। उनकी दृष्टि में मात्र पदार्थ है, उसके प्रति न राग है न ही द्वेष है।

अब देखो, सर्प ने काट लिया आप मरकर स्वर्ग चले गये। स्वर्ग मिल गया तो क्या सर्प को मित्र मान लें। ऐसे सारी सम्पदा देने पर भी स्वर्ग नहीं मिलता। न ही उस सर्प को स्वर्गदाता कहा जाता है, उसे तो विषधर ही कहते हैं। सभी भयभीत रहते हैं।

वह स्वर्ग गया तो अपने

पुण्य के कारण गया और नरक गया तो अपने पाप के कारण गया। ये सिद्धान्त रात के अंधेरे में भी प्रकाश दे देता है और पहले वाला सिद्धान्त दिन के उजाले में भी अंधकार कर देता है। आप सोच लें आप उजाले में बैठे हैं या अंधकार में बैठे हैं। — — — — — — — — — —

— — ऐसे तत्त्व ज्ञान की बात करते हो तो ये संसार के सारे विकल्प गौण होने चाहिये। आप सब यहाँ बैठे हैं यह धर्म-सभा है चुनावी सभा नहीं। इस सभा में चुनावी नारे भी नहीं लगाना चाहिये। यहाँ चुनाव करने नहीं तत्त्व चुनने के लिये बैठे हो। इस सभा में तत्त्व की ही चर्चा और उसी की ही अर्चा होना चाहिये। — — — —

— — — — — — — इसमें जो अपने को निर्मल बनाये रखता है वह धन्यवाद का पात्र ही नहीं बल्कि और ऊपर-ऊपर उठते चला जाता है। इसी ओर धीरे-धीरे अपने कदम बढ़ाता जाता है। संक्षेप से इतना ही है। इसी को ओर-ओर फैलाता देते जाओ। इसी सिद्धान्त पर हमारा भविष्य निर्धारित होगा। इसी से हमें नम्बर मिलेंगे। — — — — — — — —

— — — — मूल्यवान भी यही है। मात्र पूरक पुस्तिका भरने से कुछ नहीं होगा। ज्यादा लिखने से ज्यादा नम्बर मिलते हो यह आपका भ्रम है। महत्त्वपूर्ण यह है कि आपने उत्तर में क्या लिखा। उत्तर देने वाला भी निरुत्तर हो जाये। यदि किसी प्रश्न में अच्छा लिखने पर अतिरिक्त नम्बर दिये जावें तो वह एक नम्बर तो और दे ही दे ऐसा लिखें। हम भी उत्तर जांच लेते हैं, पर इस प्रकार उत्तर दिया नहीं। दद्दा तो दद्दा रह गये नाती बहुत आगे बढ़ गये।

— — — — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

6-1-17 "दलदल नहीं घट बनाओ मिट्टी से" प्रातः 9:15

ऊपर से वर्षा होती है, नीचे मिट्टी में गिरती है, तो मिट्टी गीली होकर के दलदल में परिणत हो जाती है। किसी ने कहा- इसी मिट्टी को यथावत् विधी के अनुसार घट का रुप दे दिया जाये तो यह उस जल को भी धारण कर सकती है।

वह मिट्टी जल को कैसे धारण करेगी? हां- हाँ वह मिट्टी ही जल को धारण करती है। पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु और वनस्पति ये पांचो एकेन्द्रिय है। पृथ्वी को ही जिन्होंने काय बना लिया वे पृथ्वीकायिक, जल को ही जिन्होंने काय बना लिया वे जलकायिक ऐसे पाँचो स्थावर होते है। मिट्टी को ही जिन्होंने अपनी काया बना ली। हाँ आपने भी मिट्टी को ही काया बना लिया है। मिट्टी को ओढ़ रखा है। शरीर उसी से बना है। मोह के कारण दलदल मचा हुआ है।

धरती पर ही जल बहता है, नदियाँ होती है। आकाश में नदी नहीं होती। धरती पर जल बहकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाता है, यदि धरती का आलम्बन न मिले तो नदी बह ही नहीं सकती। बहकर ही वह इतना विशाल रूप लेती है। वह जल नीचे की ओर ही बहता हुआ चला जाता है। मिट्टी की यह काया है। इसी मिट्टी से मोह हुआ है। अब थोड़ा सा इसे कुशलतापूर्वक प्रयोग करने का प्रयास करो।

खायेंगे-पीयेंगे ही कुछ नहीं करेंगे तो पुनः शरीर धारण करना पड़ेगा। भगवान से प्रार्थना करो कि अब यह शरीर धारण ही न करना पड़े। युक्ति से काम करो अयुक्ति से काम नहीं करो।

मिट्टी से दलदल मचता है (सबकी मिट्टी से ही घड़ा बनता है) जब तक वह अवा में तपता नहीं है, तबतक घड़ा नहीं बनता है। अवा में तपे बिना उसमें जल धारण की क्षमता आ ही नहीं सकती।

(अवा समझते हैं आप लोग! हव) मिट्टी में से सारी खोट निकालकर उसका लोंदा बनाते हैं लोंदे से घड़ा बनाया उसको को इंटो के बिच में रखकर उसके ईंधन आदि रखकर चारों ओर से उस ढेर में आग लगा देते हैं। वह घड़ा अन्दर ही अन्दर सिकता है जैसे आप लोग बाटी सेकते हैं। दूसरे उदाहरण से हँसने लगे।

जब तपकर तैयार हो जाता है तो उसके सारे खोट बाहर हो जाते हैं। अब कोई खोट नहीं बचती है। उसके अंदर जल भरकर ले आओ, एक बूंद भी रिस नहीं सकती है। ये काया मिट्टी है किन्तु दृष्टि मिल जाये तो घड़े का रूप धारण कर सकती है। मोह के कारण शरीर की यह दशा है। चतुर/ज्ञानी जो होता है वह इसी शरीर को काम लेता है। इसलिये मोही बंध करता है और ज्ञानी साधु निर्जरा का साधन बनाता है। उसकी काया की निर्जरा उसकी माया की निर्जरा हो जाती है।

आप सब लोग भी प्रार्थना करते हैं। "पहला सुख- निरोगी काय, दूजा सुख- घर में माया।" आप लोग हमें बुलाते हो घर पर जहाँ माया रहती है। आप माया को रखने में खुश होते हो, हम माया को निकालने में खुशी मनाते हैं। क्या कहें- आपका और हमारा कहीं से कहीं तक का कोई तालमेल है ही नहीं। आप कहेंगे तो हम मानेंगे नहीं, हमारी बात सुननी पड़ेगी। सुननी भी है तो ऊपरी- ऊपरी नहीं सुनना है। अब हम समझने लगे हैं, पहले नहीं समझते थे। माया को पकड़ने के लिये निरोगी काया की प्रार्थना करते हैं। संतलोग जो होते हैं वे भी निरोगी

काया को चाहते हैं ताकि हम अच्छे से तपस्या कर सकें, दूसरों की वैय्यावृत्ति कर उनका दुःख दूर कर सकें।

आप लोग बच्चों की भांति करते हैं। बच्चों को जल्दी-जल्दी खिलाया-पीलाया जाता है ताकि बड़ा हो जाये किन्तु धार्मिक कार्य इस प्रकार नहीं। समय अनुसार ही कार्य होता है। तभी वह मिट्टी पककर जलधारण की क्षमता वाली होती है। इस शरीर का भी यही मौलिक मूल्य है। मोही इस बात को नहीं समझ पाता है। धार्मिक व्यक्ति ही इस मूल्य को समझता है। अथवा जवानी युवा अवस्था में तो समझ नहीं पाया, बूढ़े-बाढ़े लोगों को कुछ समझ में आती है। बाढ़े/बाड़ी जब खेत में फसल हो तब लगाते हैं, अन्यथा उठाकर एक तरफ रख देते हैं। यहाँ भी बरेली-बाड़ी है। आप लोग भी गाँव में रहते हैं।

धर्म की खेती है तो अहिंसा रूपी खेती के चारों ओर बाड़ी लगाना आवश्यक है। इसी के द्वारा उस धर्म की खेती को सुरक्षित रख सकते हो। इसी प्रकार सभी लोग अपनी उस बाड़ी को सुरक्षित रखीये। जब दुबारा शरीर मिलेगा तब यह निरोगी काया फिर से काम आयेगी। उस मिट्टी से खोट निकालकर घट बनाया जाता है तब पुरा ईंधन लग जाता है किन्तु बाटी जलती नहीं सेकते हैं। इस काया को भी जलाना नहीं, सेकना है। भीतर माया को रहने नहीं देना है। माया का रहस्य बड़ा ही छिपा है। काया को देखकर माया को बाहर निकालो। इस पर दया नहीं करीयो। किन्तु बनिया कहते हैं "हम सब छोड़ सकते हैं पर माया नहीं छोड़ सकता।" माया को बाहर निकालना है।

मन, वचन, काय कृत-कारित-अनुमोदना से भगवान को साक्षी बनाकर लेना है। बोलो न। ऐसे-ऐसे ऐसे नहीं करना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

7-1-17 "आओ दूर करें बिमारी" प्रातः9:15

एक मरीज वैद्य जी के कहे अनुसार उनसे उपचार ले रहा है। दो-तीन दिन में वह सारा वृतान्त जो भी है फिर से वैद्य जी को बताता है। वैद्य जी उस मरीज की बात के अनुसार जो भी परिवर्तन आपेक्षित है वह कर देते है। वैद्य जी ने एक विशेष बात कही, ये दवाई इस प्रकार लेना - इसे लेते ही उस पर जल्दी-जल्दी पानी पी लेना। समझे। हव। वह मरीज उन वैद्य जी के कहने के अनुसार अनुकरण कर रहा है।

उसे समझ में आ गया दवाई लेकर जल्दी-जल्दी पानी पीने को कहा है। दवाई कहीं कड़वी हो इसलिये उसने घुं करके जीव्हा को लगे नहीं, इस प्रकार का अभ्यास होना भी जरूरी है। रास्ता सदैव प्रशस्त होना चाहिये नहीं तो वहीं-वहीं अटक जायेगा। दूसरे दिन जाकर उसने कहा - आपने बताया था कड़वी हो तो क्या करते है। रास्ता नहीं मिला और अन्यत्र जावे तो हानि होगी। अन्यत्र का मतलब। मुख में दो पाइप (नलीकायें) होती है। एक श्वास नली होती है। उसमें यदि चला जावें तो तकलीफ होगी। इसलिये भोजन के समय बोलने का निषेध, पढ़ते समय भी निषेध बताया गया है।

ध्यान नहीं रहा तो क्या होगा। कल्याण तो चाह ही रहे हैं। ये कल्याण और वो कल्याण में बहुत अन्तर हैं। कल्याण भी दो है, उसी प्रकार नालिका भी दो है। भोजन करते समय श्वास नहीं, मतलब ग्रास लेते समय नहीं, चर्वण करते-करते श्वास लेता है। फिर भी असावधानी हो जाये तो ठसका लग जाता है। श्वांस नली में कुछ भी गड़बड़ी होने की सम्भावना हो तो ठसका लग जाता है। इसके उपरान्त भी यदि पित्त का उठाव तो वह कहता है अभी

NOTES DATE

नहीं आवें मैं बैठा हूँ। उलटी हो जाती है। श्वांस नलिका से नहीं उलटी तो अन्न नलिका से ही होती है। वह भीतर वाला कहता है कि मैं नहीं रह पा रहा हूँ, तुम यहाँ क्यों आ रहे हो? फोकट का है क्या? ध्यान रखो फोकट का भी मिल जायें तो भी नहीं खाना है।

जल्दी-जल्दी गपागप नहीं करना है। ऐसे में वह पच नहीं सकता है। इस प्रकार केवल खाने की क्रिया ही नहीं सावधानी भी रखना अनिवार्य है। इस प्रकार उसने कर लिया। एक-दो दिन बाद वह विशेष रूप से आया। वैद्य जी कहते हैं इसे चबाना नहीं - गोली है। इसे खाना है। चबाना अलग वस्तु है और खाना अलग वस्तु है। कल जैसे कर रहे थे वैसा नहीं करना। गोली लेना और तुरंत पानी से गुटक लेना। कड़वी है लेकिन सुगरकोटेड है। ऊपर का स्वाद आयेगा तो दौड़ोगे थोड़े - उलटी भी नहीं होगी, वह औषध भीतर तक पहुँचेगी।

स्थान तक पहुँचाना अनिवार्य है, तभी उसका मूल्य है अन्यथा खा नहीं पायेगा फिर असर की तो बात ही नहीं है। बात समझ में आ रही है न? हव। और कुछ नहीं हमारी बात भी कड़वी औषध जैसी है पर हम सुगर कोटेड करके दे देते हैं। मीठा-मीठा हो तो सब लोग आ जाते हैं, कड़वापन होगा तो कोई नहीं आयेगा। बाद में एक और गोली दे दो ऐसा आप लोग कहते हैं। प्रवचन में मुझे आपके हित को भी देखना जरूरी है। हित किसमें है - ऐसे वचनों का प्रयोग करना होता है आपको बाधा भी हो सकती है।

मोक्षमार्ग में आप लोग बहुत दिन से रोगी बने हो। भिन्न-भिन्न गुणस्थानों में एवं भिन्न-भिन्न मार्गणा स्थानों में उसे अवसर देकर आगे बढ़ाया जाता है,

NOTES DATE

हमारे आचार्यो ने यह बहुत बड़ा काम किया है। भिन्न-भिन्न प्रकार की बिमारीयाँ है वे सब जानते हैं। मूल में मोह ही होता है। उस मोह को निकालने का प्रयोग स्वयं करते हैं और हमें बताते है। उस रुग्ण रोगी को ठिक करने का भाव सदैव रहता है, बाद में वह भी कहता है मेरा इसी में हित है, अन्यथा ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ सकती थी।

आप लोग भी रोगी के रूप में आये हो। पथ्य का सही ढंग से पालन करते हुये आगे-आगे अपनीशक्ति के अनुसार पालन करना है। बहुत दूर-दूर से आये हैं, अलग-अलग दिशाओं से आये हो और भी आ रहे हैं, भटक भी रहे हैं। फिर भी इसी चौपाल पर दिशा मिल सकती है, अन्यत्र नहीं। एक ही रास्ता होता है वहाँ मार्गसूचक (milestone) लगा होता है, दो रास्ते हों तो दोनों में, तीन रास्ते हो तो तीनों मे वह माइल स्टोन लगा होता है यदि चौरास्ता हो तो नीचे नहीं ऊपर लिखा होता है।

देहली कितनी दूर है ये भी यहीं लिखा मिल जायेगा। मनुष्य गति भी ऐसा ही चौपाल है, जहाँ से सब रास्ते मिल जाते हैं। कहीं से भी आओ कहीं भी चले जाओ। वह देव-तिर्यञ्च-नरक-मनुष्य सबमें आ-जा सकता है। कहीं भी भटकते जाओ। देवगति से मनुष्य-तिर्यञ्च अथवा नरकगति से भी मनुष्य तिर्यञ्च बनेगा। देव सीधे नरक नही, नारकी सीधे स्वर्ग नहीं मनुष्य/तिर्यञ्च में आना ही होगा। हम भी इसलिये यहाँ आये हैं। बेगमगंज वाले कह रहे थे महाराज-इधर से चलो ये हाइवे है हम तो घोड़े पर ही चलने वाले है। सब लोग अपनी अपनी भावना भाते रहते है। भाना भी चाहिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

8-1-17 "कुछ तो सीखो डॉट से" प्रातः 9:15

अभी तो जो कुछ भी बर्तन - भाषण है वह प्लास्टिक के रूप में आ गये हैं। चाँदी के तो जो आये हैं, वे सब श्री जी के मन्दिर जी के लिये आये हैं। ऐसे में उदाहरण देतो कैसे दें। आज सारे के सारे बर्तन प्लास्टिक के, सारे के सारे फर्नीचर प्लास्टिक के, खेल - खिलौने, उपकरण आदि सभी प्लास्टिक के आ गये हैं।

जीवन में जब व्यवसाय का महत्व है तो अर्थ का तो और ज्यादा होगा। जो व्यक्ति अर्थ को ही जीवन का लक्ष्य बना लेगा तो उसकी दृष्टि में सदैव अर्थ ही नजर आयेगा। चूंकी अर्थ का निषेध नहीं होते हुये भी यह बताना चाहता हूँ। जब काँच की शिशीयाँ चलती थी। उनमें कोई द्रव्य पदार्थ या ठोस पदार्थ चूर्ण डालकर सुरक्षित रखा है ताकि वह खराब न हो। थोड़ी सी भी असावधानी होजाये, उसमें हवा - पानी लग जाये तो वह सामग्री निर्दोष नहीं रहेगी।

इसलिये बहुत सावधानी के साथ उस औषध को हवा और पानी से बचाया जाता है। उसमें डॉट लगाकर रखा जाता है। डॉट भी कई प्रकार की होती है - चूड़ीदार, स्क्रू वाली अथवा गले में फँसाने वाली। अभी उस गले में फँसाने वाली डॉट का उदाहरण है। वह डॉट जो गले में फँसी थी, देवदारु था और कोई लकड़ी की बनी होती है। वह दबकर भीतर चली जाती है ज्यों ही भीतर जाती है तो फूल जाती है।

आप लोगों ने देखा हो तो समझ लो अन्यथा दददा से पूछताछ कर लेना। अब शीशी में औषध आदि डालकर उस डॉट को लगा देते हैं। इसके बाद

अंगुठे से दबाव डाल देते है। अंगुठे से ज्यादा दब गयी और भीतर चली गयी। अंगुली से निकाल नहीं सकते क्यों की अंगुली घुस नहीं सकती। सुई लाओ। वह डॉट ऐसी होती है कि इसमें सुई घुस जाती है। — — — — — — — — — — — — — —

— — — दद्दा कहते है सुई मत तोड़ देना। वे हाथ में लेकर निकालने लगते है, वह डॉट दाहिना में उसे खींचकर के आधी बाहर आ जाती है। लड़का कहता है आपने ये क्या कर दिया, हम ही ठीक थे। आपही ने तो भीतर डाल दी - दद्दा ने कहा। अब ज्यों ही निकालने का प्रयास करता है वह डॉट पहले आती है, आकर अड़ जाती है। आप बाहर जाना चाहो तो डॉट के पहले अड़ जाते है - हम भी चलेंगे। — — — — —

— — — — — — — युक्ति बताओ अब क्या करें। ज्यों ही उस शीशी की डॉट निकालने हेतु तिरछा करता है वह आडे आ जाती है, पहले सीधी थी अब आड़े आती है, ऐसे ही मोक्षमार्ग में हमारे ही किये हुये कर्म आड़े आ जाते है। अत: कभी भी दुसरे को दोष नहीं देना चाहिये। कुछ लोग कहते है - महाराज! हम अच्छा कार्य कर ही नहीं पाते। दुसरा कोई नहीं अपना ही कर्म नहीं करने देता है। युक्ति से नही अब तो भगवान की भक्ति कर सकते है। आपको सोचना है हमारे द्वारा किया कर्म ही फल दे रहा है। यह रहस्य यदि जीवन में समझ में आ जाये तो सहन करने में कठिनाई नहीं होगी। दो चीज है सुविधा और सुख। यहाँ सुख है तो धर्मध्यान के कारण है। सुविधा के चक्कर में दुःख और दुविधा में पड़े हो। — — — — — — — — — — —

— — नये सिरे से शुरुआत करना होगा। किसी भी प्रकार थोड़ा-थोड़ा लुड़काकर माल निकाल सकते है। दुसरा उदाहरण और देता हूँ -

NOTES DATE

छोटे बच्चे होते है, खान-पान के लिये शीशी होती है, उसमें एक ऐसी नली लगी होती है जिसके मुख पर बारीक छेद होता है। अब उसे कितना भी उलटा लो वह अनुपात से ही आती है। — — — — — — — — — उस शीशी में मीठी वस्तु है। यदि वह नली नहीं तो बहुत जोर से भी पुरी बाहर आ सकती है उस नली के कारण कितना भी जोर लगा लो उतनी ही आयेगी। इसी प्रकार अर्थ का उपयोग करना है तो ऐसी नली फंसा दो उतना ही निकलेगा। अनर्थ न करते हुये अपने जीवन को सार्थक करते हुये धर्म-ध्यान कर सकता है। करेंगे। यह तभी सम्भव जब साहस - धीरज - सहनशीलता रख कर करेंगे। — — — — — — —

— — — — — यह सब अनिवार्य है। अब परीक्षा के लिये किताब खरीदी जाती है। किताब खरीद सकते है, पढार्थी भी आ सकती है। किन्तु परीक्षा में किताब - गुरुजी - साथी - सनाथी कोई काम नहीं करेंगे। अब तो दिमाग साथ में है, इसी से लिखेंगे। सबके प्रति एक ही न्याय है। क्या लिखें? किताब आपके पास है। एक-एक दिन गंवा दिया, ऐसा किया तभी नम्बर नहीं मिले। देने वाला कोई नहीं - लेने वाला चाहिये। — — — — — — — — —

— — — — — — — — — परिश्रम से डरोगे तो उसके पास की चीज के लिये भी थुं (सबरी की तरह) करना पड़ेगा और पास के लिये चश्मा लगाना पड़ेगा। गनिमत है कि कि आपको पुण्य से ये सब मिला है। उपयोग कर लो। आँखे यदि काम नहीं करे तो उस चश्मे का भी कोई उपयोग नहीं होगा। प्रायः सुरदास जो होते है, वे आँखो पर काला चश्मा लगाते है। वे कहते है देख क्या रहे हो-सुन लो। इसी प्रकार कर्म कहता है मैं आंखो से दिखता नहीं महसुस तो करो। यह सिद्धान्त है जो भी फल मिल रहा है वह अपने ही कर्म का फल है।

NOTES DATE

इस प्रकार दो उदाहरण के माध्यम से बताया। डॉक्टर का उदाहरण दिमती है। परीक्षा में बैठे हो, हमारा नम्बर क्यों नहीं आया, इससे भी कम (नीचे) नम्बर आये होंगे। कान से मात्र सुनना ही नहीं है अपने कर्म को सुधारना है। पुनः न बंधे इस प्रकार सावधानी के साथ कर्म करते जाना है।

यह चतुर्थ काल नहीं है किन्तु सप्तम काल भी नहीं है। पंचम काल है पंचम गति में पहुँचने में बाधक नहीं है। अब 4-5 दिन और रह गये हैं। रीजल्ट सबके घोषित होने वाले हैं। अपना काम वैसे ही करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-1-17 "मिला अवसर मत चूको" प्रातः 9:15

आप लोगों ने सुना होगा दो अद्भुत मणियाँ होती है, एक सूर्यकान्त मणी दूसरी चन्द्रकान्त मणी। ये दोनों मणियाँ चमत्कारिक मणियाँ है, सब मणियों में ऐसी विशेषता नहीं होती हैं। अर्कान्त मणी अर्थात सूर्यकान्तमणी उसमें किरणें होती है अग्नि की स्फुरणलिंग में परिवर्तित हो जाती है, सूर्य की किरणें अन्य पत्थरों पर भी समान रूप से पड़ती है पर वैसा नहीं उनमें से स्फुरणलिंग करने की क्षमता नहीं है।

इसी प्रकार चन्द्रकान्त मणी है उसके सम्पर्क में अग्नि की किरणे भी जल बिन्दु में परिवर्तित हो जाती है इन मणीयों से भिन्न-भिन्न चमत्कार आपको देखने मिल सकते हैं। देव-शास्त्र-गुरु के समागम को पाकर भी अभव्य अभव्य ही रहेगा वह कभी भी भव्य नहीं हो सकता। द्रव्य के स्वभाव को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। जैसे अभव्य, अभव्य ही रहेगा उसी प्रकार भव्य-भव्य ही रहेगा किन्तु अब इसी

बाहरी निमित्त मिल जाता है तो उसमें से रत्नत्रय की कोंपलें फूटने लगती हैं। रत्नत्रय यदि पाना चाहते हैं तो हमें जो उसकी प्राप्ति में निमित्त है। साधन है उसके सम्पर्क में रहना होगा। शास्त्र (ग्रन्थ) के आधार पर कहता हूँ ढाई द्विप के बाहर का तिर्यञ्च है, किसी का भी समागम नहीं मिला, किन्तु पञ्चमगुणस्थान वर्ती है। निसर्ग और अधिगमज रूप से सम्यग्दर्शन या संयम की प्राप्ति होती है।

आत्मा का स्वभाव जड़ादि से भिन्न है। जड़ तो जड़ है - ज्यों का त्यों रहता है। किन्तु आत्मा रत्नत्रय के माध्यम से अपना ऊर्ध्वगमन करने में सक्षम है। फिर भी यह रत्नत्रय का सौभाग्य कुछ ही बिरले लोगों को प्राप्त होता है। हमें इसे यथा सम्भव प्राप्त कर लेना चाहिये। जो भीतर सोई हुयी चेतना है, उसे जगा लेना चाहिये। रत्नत्रय की प्राप्ति रत्नत्रयधारियों के साथ रहने पर ही हो सकती है। रागीयों के साथ तो राग की ही प्राप्ति होती है।

जागृति के निमित्त हमें बाहर से मिल जाते हैं, जो सोई चेतना है उसे जगा सकते हैं। यहाँ भी दो दिन बाद से भव्य पंचकल्याणक मनाने जा रहे हो। शांतिनाथ - कुंथुनाथ - अरहनाथ भगवान त्रिमूर्ति ऐसे लग रही है जैसे रत्नत्रय ही हो। सुनते हैं महापुरुषों में एक में एक ही पद होना चाहिये किन्तु यहाँ तो एक ही तीन-तीन पद के धारी हैं। ऐसे ही यदि पद रख लिया है, योग्य नहीं है तो दिया नहीं जा सकता। तीनों 16-16 फीट की प्रतिमा वो भी देशी पाषाण में है। इतने छोटे से गांव में भी इतना उत्साह एवं भव्य जिनालय है। हमने भी सोचा, चलो चलकर देख लेते हैं। नासियाँ जी की स्थापना

होने जा रही है। आज आपके बिच ये रविन्द्र जी आये है। ये जिस रूप में आये है, मैं जब इस रूप में था तब से ये मेरे परिचय में है किन्तु ये आज भी वहीं की वहीं है। इनके भीतर भी वह चन्द्रकान्त मणी की झलक तो है किन्तु निर्मल ई रूप में क्यों नहीं मिल पा रही? पता नहीं।

मैं तीर्थंकर भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इनके भीतर जो मणी है उसकी ज्योत्स्ना भी बाहर में प्रकट हो। रवि का मतलब भी सूर्य होता है। इनकी अप्रत्याख्यान कषाय नष्ट हो, सही रूप में आ जाये। रत्नत्रय को धारण कर ले। यह आर्यिका के पास उपलब्ध नहीं हो सकता, उनका संयम-लब्धि स्थान नहीं बनता। जो लुप्त प्राय सा हो गया है वह बाहर आ जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

10-1-17 "रिश्ता बनाना सीखो" प्रात: 9.20

दिपक - बाती और तेल तीनों को पृथक - पृथक रूप से जलाओ। दिपक को ले आये उसमें आग लगाकर जलाओ, बाती लाये उसे जलाओ अथवा तेल लाये उसमें दियासलाई लगा दो किन्तु प्रकाश नहीं मिला। तीनों चीजें अलग - अलग नहीं, तीनों की एकता चाहिये उसके बिना प्रकाश नहीं होता पक्का है - पक्का। तो इन तीनों का संयोग करके रखना चाहिये तभी प्रकाश होगा।

अपने यहाँ भी केवल सम्यग्दर्शन से काम नहीं चलने वाला, न ही अकेले सम्यग्ज्ञान से तथा न ही केवल चारित्र से भी काम होने वाला नहीं है। तीनों की एकता होनी जरूरी होती है, तब फल मिलता है। बाकी

फल की कामना करो जब सही पुरुषार्थ हो। पहले के लोग काम करते थे, बातें नहीं करते थे। आज के बच्चे बातें ही करते हैं, काम नहीं। काम करने वाले कभी बोलते नहीं अपितु उनका काम ही बोलता है।

बाजार में वस्तु आदि है, वह वस्तु ही बोलती है, कहाँ से लाये? हर व्यक्ति पुछता है। वह कहता है उससे मिली। ऐसे करते-करते सही उत्पादन जो होता है वहाँ तक पहुँच जाता है, भले ही वह कोने में भी क्यों न हो। दूर-दराज भी बैठे हो तो भी पहुँच जाते हैं। बाजार इसी प्रकार चलता रहता है।

इसी प्रकार जो उपास्य है, उनके द्वारा बताये मार्ग पर चलते जाओ सुगन्धी चारों ओर फैलती जायेगी। नाक बंद भी होगी तो भी महसुस करा देगी। ऐसे ही धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, उनको बताने की वस्तु नहीं है, वे तो महसुस/अनुभूत करने की चीज है। उसे पहचानने की आवश्यकता है, उससे हटकर जीवन नहीं होगा। आत्मसात् करने का प्रयास करें।

दिपक - तेल बाती तीनों की एकता का नाम प्रकाश है। जहाँ ज्ञान का प्रकाश होता है, अज्ञान भाग खड़ा होता है। हम बोलें नहीं, बस अच्छा काम करते जायें। बहुत ही मौलिक क्षण है, उपयोग करोगे तभी फल प्राप्त होगा। जब दूसरे भव में जायेंगे तब इन क्षणों का अहसास होगा। विद्यार्थी पेपर के समय बोलता नहीं। सच पुछो तो अखबार बाजी होने पर उसे ढूंढते हैं। वो कहाँ है जिसने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सब लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं, उसे मालुम ही नहीं है जिसे पुरस्कृत करना

है। वह तो मैं पास हो जाऊँ इस लक्ष्य को ध्यान में रख अपनी पढ़ाई कर रहा है। धर्म ऐसी ही वस्तु है। जड़ का नहीं, चेतन का मूल्य आंकना सीखो। लाओ- दीपक लाओ। वह मात्र खोका है। व्यवहार/उपचार से दीपक कह रहे हो किन्तु निश्चय भी उपचार से ज्ञात हो जाता है। हमारा जीवन भी दीपक की तरह है।

जो करते हैं उसका परिणाम स्वयं को ही भोगना पड़ता है। जीवन सार्थक बनाओ। दुनिया के नाते-रिश्ते समाप्त हो जाये, भगवान से नाता-रिश्ता बनाओ हम भी उन्हीं को पूजते हैं। वह किसी भी नाते-रिश्ते से बंधते नहीं हैं। महाराष्ट्र में एक गाँव भी है नाते-पूते। भगवान के नाते का मतलब भक्ति करो। उनके निमित्त से अपनी आत्मा को पवित्र बनाने का उपाय कर रहे हैं।

हम उनकी पूजा कर रहे हैं, उनके लिये नहीं अपने लिये कर रहे हैं। अपना प्रयोजन यही रखें। स्वार्थ है यदि इसे भूल गये तो कुछ भी नहीं हो पायेगा। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। आज बाहर नहीं बैठ पाये। हवा तो यहाँ पर भी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

11-1-17 पूज्य क्षीरसागर जी महाराज की समाधि के कारण अवकाश

12-1-17 "गुणों की आराधना का नाम गणतंत्र" प्रातः 9.15

आज यह पूर्णिमा का दिन है, एक वर्ष के लिये पौष विदा ले रहा है, सामने माघ माह है, इस मंगल बेला में जिसकी भूमिका कई वर्षों से बनायी, वह आ गयी है। पात्र-चयन भी हुआ। प्रश्नःकर थाली सामने हो और कहो बैठ जाओ- बैठ जाओ। वह कहता है कब तक यूं ही बैठे रहें। अन्दर से आवाज आती है अभी गरम है, खा नहीं पाओगे।

कोई मंत्र नहीं पढ़ना होता। जल्दी में काम नहीं होता, समय पर ही काम होगा। इसके लिये प्रतीक्षा की आवश्यकता है। आज आप लोगों द्वारा घटयात्रा का कार्यक्रम मध्याह्न में रखा गया है। आत्म बल में अच्छी भावना हो ताकि घटयात्रा से यह पूरा कार्य सानंद सम्पन्न हो। यागमण्डल आदि विधान भी जैसे ब्रह्मचारी जी करें उसी अनुसार समय पर पूरा करें।

पंचकल्याणक का अत्यन्त मांगलिक कार्यक्रम ध्वजारोहण से आज इसी स्थल पर प्रारम्भ होगा। मुहूर्त के अनुसार ठीक समय पर ध्वजारोहण होगा। कल से एक-एक गर्भकल्याणक आदि आपको देखने उपलब्ध होगा। समाज छोटी होते हुये भी बड़ा काम हाथ में ले रखा है। उत्साह से इस काम को पूरा करो। बाहर वाले भी आयेंगे, यह देखने कि आप क्या कर रहे हो। आप उनको नहीं देखना, बस अपने कार्य को देखना। भावना सबकी अच्छी है और आ भी रहे हैं, हम भी उसमें शामिल होने जा रहे हैं।

शांति-कुंथु और अरहनाथ स्वामी एक साथ बुंदेलखण्ड में विहार के दौरान कई स्थानों पर देखे हैं जो प्रायः सभी स्थान क्षेत्रों के रूप में स्थापित हैं। सुनते हैं आज से कई वर्षों पूर्व पाणाशाह व्यापार के लिये आया उसने इन जिनबिंबों की स्थापना करवाई, यहाँ वही होने जा रहा है। इतिहास पुनः ताजा होने जा रहा है। पहले एक ही व्यक्ति स्थापित कराता था, यहाँ सब लोग मिलकर स्थापित कर रहे हैं। पहले राजतंत्र था, आज गणतंत्र/लोकतंत्र है। जो गुणों की आराधना करता है, वही इस गणतंत्र में शामिल हो सकता है। सब लोगों के लिये यह कार्यक्रम मंगलकारी हो। समय पर्याप्त हो गया है। सभी मिलकर इसे अच्छे से सम्पन्न करें, इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

13-1-17 से 18-1-17 तक सिलवानी पंचकल्याणक

19-1-17 "महत्व मनोयोग का" प्रातः 9.40

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का यह आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ किन्तु इस आयोजन का प्रयोजन भी होना चाहिये। जो वृद्ध थे वे भी इस आयोजन से संवृद्ध हो गये। इसका प्रयोग होना चाहिये। प्रयोग हमारा ऐसा हो जो आराधना में वृद्धि की ओर सम्मुख होना चाहिये। जिनको मन्दिर दूर पड़ रहा हो, उनको भी साथ ले आओ। फिर भगवान तो आकर करेंगे है (त्रिमूर्ति मन्दिरजी)। उस आंगन में भी बैठकर सब लोग आराधना करें।

शान्ति - कुन्थु - अरनाथ के साथ ही चौबीसी भगवान के चरणों में रत्नत्रय की आराधना करना है। कभी यहाँ तो कभी वहाँ, पूजन यहाँ तो आरती वहाँ, आरती यहाँ तो पूजन वहाँ अथवा दोनों समय दोनो जगह जिसके मन में जैसे आये समय का उपयोग करें। ऐसा काम करें जिससे बच्चों में संस्कार डाल पायें। आगे की पीढ़ी में इन्हीं सब से संस्कार डाल पायेंगे। इतने मात्र से संतुष्ट नहीं होना, उसे उपयोग में लाना चाहिये।

जितना उपयोग करोगे कमाई उतनी ही ज्यादा होगी। दुकान खोलने मात्र से कमाई नहीं। ग्राहक क्या चाहता है, कब चाहता है, मांग कितनी - पूर्ति कैसे ये सब आपको करना होगा। प्रतिदिन आराधना करने का संकल्प लें। जो अभिषेक कर सकता है वह अभिषेक करें। जो नहीं कर सकता है वह देखें। पूरे मनोयोग से देखने का भी अलग ही आनंद है। कृत - कारित - अनुमोदना के साथ भी मनोयोग को लगाना जरूरी है। ज्यादा फल मिले काम ऐसा ही करना चाहिये। ज्यादा समय तो नहीं था अच्छे से कार्य हो गया। हां-हाँ भगवान के सामने भावना भावो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

NOTES

DATE

20-1-17 "दुर्लभ धर्म ध्यान का करें सदुपयोग" प्रात: 9:15

ऐसे भी देश/क्षेत्र हैं, जहाँ कब से तीर्थंकर यत्र-तत्र विचरण करते हैं, पता नहीं और कब तक करेंगे, इसके लिये कहते हैं कभी भी ये नाता टूटेगा नहीं। भविष्य में कभी भी किसी भी प्रकार से ये परम्परा टूटेगी नहीं। ऐसा विदेहादि में होता है, जहाँ कभी भी यह नाता टूटने वाला नहीं हैं। अतः विदेह में जाकर बसियों। आप वहाँ जा सकते हैं किन्तु आपको तो आयु पूर्ण होने पर उसे छोड़ना ही होगा किन्तु भगवान का वह नाता कभी नहीं टूटेगा निरन्तर वहाँ तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं।

आगम में त्रस पर्याय का एक समय निर्धारित है। 2000 सागर बाद उसे उस पर्याय को छोड़ना ही होगा। जैसे बीजा की एक समयावधि होती है वह पूर्ण होते ही अब जाना होगा, आप नहीं जायेंगे तो दूसरा नहीं आयेगा। हाँ! निगोद एक ऐसी पर्याय है जहाँ से नहीं आना हो तो कोई बात नहीं है, क्यों की काल अनन्त निगोद मंझार..... कहा है। अभी यहाँ वाचना चल रही थी। उसमें मार्गणा में आया कि चाहे सूक्ष्म पर्याप्त भी क्यों न हो पर उनकी राशी असंख्यात ही बतायी अनंत नहीं निगोद आने पर ही अनंत होगी।

निगोद पर्याय ऐसी है जिसमें दो तरह के जीव है एक नित्य निगोद दूसरा इतर निगोद। इतर निगोद ऐसे जीव जो निगोद से निकलकर व्यवहार राशि में आकर पुनः निगोद में जाते हैं, उनका उत्कृष्ट काल ढाई पुद्गल परावर्तन काल ही बताया, बाकी शेष अनंत काल तक वहीं रहते हैं। तीर्थंकर जहाँ निरन्तर हो रहें है, वह कितना पवित्र स्थान है, जहाँ तीर्थंकर परम्परा आज तक टूटी नहीं। हाँ, सिद्धालय में जाकर बैठो तो कहीं

नहीं जाना होगा। ऐसा स्थान बहुत-बहुत दुर्लभता से मिलता है। ये पता लगना चाहिये। मनुष्य जीवन बहुत कीमती है इसका एक समय भी फालतु नहीं जाना चाहिये। सदैव धर्म-ध्यान में ही समय जाये चाहे, हंसते करो या रोते करो, करते जाओ। धर्म-ध्यान यहां का महँगा है।

तीन लोक और तीन काल में इतना दुर्लभ धर्म-ध्यान कहीं नहीं मिलेगा जो मनुष्य पर्याय में मिलता है। इतना अवश्य है कि अनन्त पर्याय की इस शृंखला को तोड़ने का उपक्रम इसी मनुष्य पर्याय में हो सकता है। अभी समझ में नहीं आ रहा, बाद में समझ में आयेगा। जो जुआ, ताशपत्ती में अपना समय काट रहें है, पछतावा होगा। समय का समय तो आ गया। सिलवानी वालों ने एक-एक दिन का लाभ लिया है। अखबार में भी आया सर्वत्र शीतलहर चल रही है, सिलवानी में आनन्द की लहर चल रही है।

इतना ही कहना है, यहां स्थायी कुछ नहीं है। कितना भी करो वह हो नहीं सकता अपने विचारों के अनुसार। कर्म का उदय इस प्रकार का था। एक व्यक्ति का नहीं सामुहिक कर्म का उदय था सामुहिक कार्य सामुहिक पुण्य के बिना नहीं हो सकता। एक-एक व्यक्ति पुण्य लेकर आया था तभी हुआ। ऐसा नहीं की हम सेठ जी है तो हो गया। यहाँ के मनुष्यही नहीं गाय-बैल-भैंस आदि-आदि का भी ऐसा पुण्य था तभी होता है। तीर्थंकरों का जन्म जब होता है, तो एक-आध मिनिट ही सही सर्वत्र (तीनोलोक में) साता का उदय हो जाता है पर इस कार्य हेतु तो सभी का पुण्य होना जरूरी है। कर्म-सिद्धान्त के अनुसार इसी को सान्निकर्ष बोलते हैं। वह पुण्य अलग ही क्वालीटी का होता है। इस प्रकार आप सभी का पुण्य था आगे

भी इसी प्रकार करीयो। भावना भाने में कभी दरिद्रता नहीं रखना चाहिये। मांगलिक कार्य समूह के द्वारा ही होता है। इसीतरह यदि पाप का उदय हो तो इस प्रकार के संयोग छूट भी जाते हैं।

जैसे चारों गतियाँ हैं - देव गति है, वहाँ भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरती। मनुष्य गति में भी जब तक कोई दिक्षा नहीं लेता तब तक सौधर्म इन्द्र भी क्यों न हो - बैठे रहियो। कुबेर 66 दिन तक रत्न बरसाये-बरसाते रहियो। वहां सन्निकर्ष चाहिये। अन्यथा कुछ नहीं होगा। 66 दिन तक भगवान के सामने सब बैठे रहे पर दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। मुनि अथवा महाव्रती बने बिना वह नहीं होता यही सन्निकर्ष है। इसी तरह आप लोगों ने पंचकल्याणक की तैयारी की तो हम आ गये।

हमें बांधना चाहो तो नहीं बांध सकते है। इससे काम नहीं होगा। आप लोगों को निश्चिंतता से नहीं होना है, सब गड़बड़ हो जायेगा। हे भगवान! काम नहीं हो रहा है, ऐसा बोलते रहो, तभी काम कर पाओगे। इसके बाद भी वैयक्तिक रूप से कर्म का उदय हो तो वह किसी भी प्रकार से उस कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकता। उसके कारण यह कार्य रुकेगा नहीं पर जो आवश्यक है तो उसके बिना वह कार्य नहीं हो पायेगा। बारात आ रही थी पर रास्ते में ही मुड़ गये, सबकुछ मुड़ गया। उन्होंने अपने रंग में सबको रंग लिया, हाथ रंगने से क्या होता है। ऐसा कर अपने समय का सही उपयोग करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। है

विशेष- समय और धारणा के अपव्यय का नाम "प्रज्ञापराध" है।

सिलवानी से दोपहर में विहार — रात्रिविश्राम - सिंदुरी

NOTES

DATE

21-1-17 "आओं ओढ़े सहनशीलता का कम्बल" प्रातः 9.45

सियरशऊ, यहाँ से आना और जाना एक-दो बार हुआ है। यहाँ से काफी लोग बाहर जाकर बस गये हैं फिर भी अपनी जन्मस्थली को सुरक्षित रखकर काम कर रहे हैं। यहाँ से नागपुर, सिलवानी आदि स्थानों पर गये फिर भी जुड़े हैं। जहाँ से हमें दृष्टि मिली है, धार्मिक संस्कार मिले हैं, उसे हमेशा-हमेशा सुरक्षित रखा जाता है। इसी के माध्यम से भविष्य की जो भी योजनायें हों, उन्हें सम्पन्न किया जाता है। इसे कोई भी नकार नहीं सकता।

जो कोई भी स्त्रोत अपने मूल से जुड़ा होता है, वह कभी सूख नहीं सकता। जिसका संबंध नीचे से जुड़ा होता है मौसम-काल के परिवर्तन होने पर भी उसका प्रभाव नहीं पड़ता। गहराई से सम्बंध जुड़ा होना जरूरी है। एक-आध वर्षा हो जाये तो पुनः बहने लगता है। संसारी प्राणी की भी यही दशा है, सूखने जैसा लगता है किन्तु संस्कारों के कारण पुनः हरियाली आ जाती है। जीवन में कभी भी कषायों को कम नहीं मानना चाहिये वे पतन का कारण हैं न ही कष्टों से हार मानना चाहिये। किसान लोग महनती होते हैं, वे कभी हार नहीं मानते। वे कठिन परिश्रम करते हैं।

यहाँ का जो उत्पादन होता है, उसे नगरों तक पहुँचाया जाता है। नगर में तो हैंड का पानी ही प्रयोग होता है। उसी में से निकाला जाता है किन्तु गाँवों में ऐसा नहीं है, यहाँ तो मूल स्त्रोत सदैव चालु रहता है। जो कुछ भी उत्पादन करता है वह नगर में भेज देता है। आप लोग सोचते होंगे (नगरवासी) हम सब कुछ पैसे के बल से ले लेंगे। पैसा फेंककर सब खरीद लेंगे। यह अभिमान छोड़ दें। जमाना बदल गया है।

NOTES DATE

मेहनत करके उत्पादन करता है। गाँवों की आस्था-निष्ठा देखो। प्रतिकूलता में भी सहनशीलता को ओढ़े रहते हैं। आप लोग अच्छे-अच्छे पहनाव (वस्त्र) लादे रहते हैं फिर भी उन्हें जाकर देख लो, जाड़ा तो लगता ही नहीं। साहस-सहनशीलता का कम्बल ओढ़े रहते हैं।

संतों की तरह रहते हैं। ऐसा ही जीवन बना रहना चाहिये। जब कभी भी शहरों से कष्ट लगने लगे तो गाँव की ओर चले आना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मैं

दोपहर 1.30 पर विहार कर टड़ा में प्रवेश 4.45 पर।

२२-1-17 "सात्विक कर्म है खेती" "टड़ा" प्रातः-9.15

जब हम प्रथम चातुर्मास हेतु बुन्देलखण्ड के कुण्डलपुर में विराजमान थे उस समय लोगों के मुख से "टड़ा" ग्राम सुनने में आता था। और कुछ नहीं यहते दमोह कहते थे फिर टड़ा-केसली-गौरझामर आता था। अब इस टड़ा का मुहूर्त टला नहीं अटल रहा। यहाँ का पंचकल्याणक बहुत ही प्रतीक्षा के बाद आ पाया है। लगभग २० वर्ष हो गये अर्थात 19 नहीं २० नहीं अब काम २1 ही होना चाहिये।

बहुत बड़ी तपस्या हो गयी आप लोगों की, इसमें कोई संदेह नहीं है। बाद में अभी हमने पूछा क्यों-कैसा है? लोगों ने कहा-बहुत ही अच्छा काम है। हमारे पूर्वजों ने किसी के ऊपर भी भरोसा नहीं रखा, बहुत ही अच्छा काम किया है। भूतकाल में भी ठोस काम किया, वर्तमान में भी ठोस किया है अब भविष्य में भी ठोस ही काम हो। लक्ष्मी का सदुपयोग करना सीखो। यहाँ के पूर्वजों ने उस चंचला लक्ष्मी को अचल बनाया। मंदिरों से जमीन लगी है तो इधर

बुंदेलखंड में ही लगी है। 250 एकड़ जमीन अचल सम्पदा यहाँ ही लगी है। हमने सोचा अचल सम्पदा रखकर भी मांग रहे हैं। सोना तो ऐसी सम्पत्ति जो गड़ा ही रह जाता है पर यह सम्पदा प्रकृति के साथ खुब देती है। जितनी मेहनत करो इससे उतना ही ले सकते हो।

जितना आवश्यक उतना मिलता भी है। मन्दिर के लिये यह दिया है, इतना महत्व समझो। उन्होंने पुरा का पुरा लगाया अब आप मेहनत न करो तो इसमें उनका कोई दोष नहीं है। आप अपनी नाक बचाओ। दोष आपका ही रहेगा। अन्यत्र भी है पर यहां जितनी जमीन नही है, आप काम में लेओ। बोर में भी साढ़े तीन इंच पानी निकल आया। संकल्प लेलो तो ऊपर से भी आयेगा, नीचे से भी आयेगा। गुनो हमारा आशिर्वाद बाद में काम करेगा पहले अपनी कुवत लगना जरुरी है, सही दिशा में पुरुषार्थ जरुरी है।

वहीं जाइयो जहां हमेशा-हमेशा व्यक्ति जाग्रत रहता है- सोता नहीं। स्वप्न भले ही सुप्त अवस्था में आता हो पर साकार तो जाग्रत अवस्था में ही होता है। यह सब मेहनत करने/श्रम करने से ही होता है, पसीना बहाने से आता है, आंखो से पानी बहाने से नहीं आता। अब लोगो के सामने कहीयो नहीं की 250 एकड़ जमीन है। मोदी जी भी कहने लगे अब नोटबन्दी के बाद दुसरा नम्बर जमीनों का है।

जो जमीन होती है उसके योग्य मेहनत भी चाहिये। बनिया खेती नहीं कर सकता तो वह किसान से कहता है आप ही इसमें खेती करें, आपस में बांट लेंगे। यह बिल्कुल सही है जो परिश्रम, आस्था, सादगी, शाकाहार का जो समर्थन करता

NOTES DATE

है उसी के फल से वह खेती फलती है। सबसे सात्विक काम है खेती करना। अन्य मांसाहार आदि हिंसा के काम वह आती ही नहीं है। सब जगह ताला लगा सकते हैं, किन्तु खेत में नहीं। रात को सेठ जी ताला-कूंची देखते रहते हैं, इधर खड़े हैं कोई आ तो जाओ। चलाचल सम्पत्ती में आता है। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव इन चारों का योग जब बनता है तब कार्य होता है।

टड़ा के पास यह इतना बड़ा क्षेत्र है इसे बढ़ाओ-बताओ नहीं। घटाया तो क्या होगा और बढ़ाया तो आप ही लोगों का नाम होगा। काम करो और कहो नहीं की हमने काम किया। आज आप जो उन्होंने दिया उस पर चूना-पोती भी नहीं कर पा रहे हैं। अब बाहर निकालो। मोदी जी कहते हैं हम जमीन लेंगे नहीं अपितु जो उसका सही उपयोग कर रहा है उससे हम टेक्स भी नहीं लेंगे। मेहनत करोगे तभी सुभिक्ष होगा।

आज प्रथम दिन है, रविवार है, ज्यादा समय नहीं है। आज तो आप लोगों के बोलने का दिन है। हमारा सान्निध्य तभी जब निवेदन में पूरा टड़ा एकजुट रहे। हम मांगते नहीं हैं फिर भी ना नहीं कहते। सुनो! हम निमन्त्रण से जाते नहीं। हमारे साथ बुलव्वा-चलव्वा नहीं होता फिर भी हम शामिल हो जाते हैं। सिलवानी में सब लोग आये थे। बुलव्वा/निमन्त्रण नहीं था फिर भी आ गये। धीरे-धीरे मार्ग बन गया।

कुंकुम-पत्रिका तो बाँट रहे हो पर सोच-समझ के बाँटियो। यहाँ से सागर-भोपाल ही नहीं बाहर भी लोग पहुंच गये हैं। राष्ट्र के भीतर रहते-रहते ही

NOTES

DATE

महाराष्ट्र में भी पहुँच गये। जैसे- झण्डा होता है, वह इसी ढंग से रहता है। झण्डा लहराता रहता है पर उसका डंडा सदैव स्थायी रहता है। हम तो किसान हैं और वहाँ पर बड़ी- बड़ी दुकान ही नहीं शोरूम खोले हैं।

ऊपर वाला भी तभी देता है, जब कुछ हो तो। आप लोगों को अब कर्तव्य का पालन करना है। एक ही कमेटी होनी चाहिये। मतभेद हो पर मन में भेद कभी नहीं होना चाहिये। कीड़ी की चाल से चल रहे हो। पहले इस चौबीसी जिनालय की बात 250 एकड़ में बनाने की आयी हमने कहा गाँव से बाहर कौन जायेगा सभी जिनालय एक जगह ही रहे तो क्षेत्र की वंदना जैसा आनंद आ जायेगा।

फिर आर. सी. सी. काम के लिये हमने मना किया पत्थर का ही होना चाहिये। धीरे- धीरे सब लोग तैयार हो गये। उस समय जब रहली - बिना बारहा से इधर आये थे, एक बड़ा विधान रचाया था। उसी का फल की अब यह महा विधान का आयोजन होने जा रहा है। कहावत है- "बंद मुट्ठी लाख की- खुल गयी तो खाक की।" जनता आयेगी, मतलब बारात आयेगी। बस मुट्ठी बांध लो। एकता के सामने सब कार्य हो जाते हैं। उस जनता की व्यवस्था कैसे करना है समझ लो।

सागर वाले - नागपुर वाले भी आये हैं। नाक की बात है। राजस्थान वाले भी आये हैं। अभी क्या देख रहे हो? जब महोत्सव शुरु हो तब आइयो। यहाँ अलग ही माहौल देखने को मिलेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

NOTES DATE

23-1-17 "श्वान द्वारा शीतली प्राणायाम" प्रातः 9.15

वर्षाकाल प्रारम्भ होने के पूर्व में एक नक्षत्र होता है जो 15 दिन के लिये होता है। वह ऐसा वातावरण तैयार कर देता है, वर्षाकाल तो अभी प्रारम्भ हुआ नहीं और ग्रीष्मकाल अपनी तपन से कुछ आराम दे रहा है। उसका नाम आद्रा नक्षत्र है। आद्रा शब्द द्रवण से बना जिसका मतलब है ठण्डक - पानी की सूचना देने आता है। द्रवित का अर्थ बहना है। वर्षा नहीं भी हो तो भी शीतलता मिल जाती है। हम पानी की बात तो करते हैं किन्तु हवा में जो पानी होता है, उसका भी उपयोग करना चाहिये।

पानी - पानी चिल्लाने से पहले हे प्राणी! तू सोच हवा में जो पानी है उसका सेवन तो कर लो। आपने श्वान को देखा होगा। श्वान तेजी से भागता है तो उसे गर्मी लगने लगती है। आप सुन रहे हैं - 'हव'। मैं इसलिये बुदबुदाता हूँ ताकि आप विशेष सावधान हो जायें। वह श्वान विशेष आयाम प्रारम्भ करता है। अपनी जीभ को बाहर निकालकर श्वास लेना शुरू करता है। इससे उसकी वह श्वांस ठण्डी होकर भीतर चली जाती है। प्राणायाम की भाषा में कहें तो शीतली प्राणायाम करता है। ठण्डी पट्टी करता चला जाता है अपने ही आयाम से।

गर्मी में ठण्डी पट्टी और सर्दी में गरम पट्टी करता है। अभी सर्दी का समय चल रहा है। वर्षा (सावठ) हो या न हो कई बार सूर्यनारायण 10 बजे तक भी नहीं आते तो उस स्थिति में ऊपर से वे जल-कण (ओस) इस तरह से आते हैं जो सावठ का काम करते हैं। वे जल कण फसल के लिये भी लाभकारी।

होते हैं। ओस के कणों को अमृत से भी ज्यादा गुणकारी बताया है। आप हमेशा-हमेशा चिल्लाते रहते हैं, हमें ये नहीं मिला-हमें ये नहीं मिला। जो मिला है उसे पहचानें, मांगने से कभी नहीं मिलता। यह सब मौसम के अनुसार होता है।

अपने कर्म के अनुसार ही मिलता है। परिणामों में सदैव मृदुता रखें। शान्त परिणामी के सामने हमारे परिणाम भी शान्त हो जाते हैं जबकी क्षुब्ध परिणामी के सामने क्षुब्ध हो जाता है। मनुष्य के पास यह गुण विद्यमान है। वह चाहे तो जीवन के आदि से अन्त तक इनका उपयोग कर सकता है। निराकुलता से जीवन का एक-एक क्षण गुजारता चला जाता है। ग्रामीण परम्परा में यह देखने को मिलता है।

कुछ लोग सर्दी में आग तपते रहते है जब की कुछ मन्दिर में जाकर अभिषेक-पूजन-पाठ इत्यादि करते है। ऐसे भाव रखो तो उसका फल अपने आप ही मिलता चला जाता है। उपादान आपमें है, निमित्त के माध्यम से उसे जागृत कर लेता है। कुशलता के माध्यम से बिना खरीदे ही युं ही मिलता चला जाता है। भाव बढ़ाना चाहिये जिससे अल्प समय में ही काम हो जायेगा। ओस की जल-कणों को और कुत्ते द्वारा जीभ से श्वांस लेने को याद रखेंगे।

अभी आप लोग धूप की मांग कर रहे थे। हमें यहाँ बैठा दिया आप सब लोग भी एक कोने में बन गये क्यों की इधर धूप है। उपयोग करने से ये बातें (उदाहरण) अपने आप ही दिमाग में आ जाती हैं। हवा अकेली कभी भी नहीं रहती, उसके साथ जल-कण भी रहते हैं। इसी प्रकार मनुष्य के जीवन में मात्र कष्ट ही हो ऐसा कभी नहीं होता। ज्यादा कष्टवालों की ओर

NOTES DATE

देखेंगे तो आपको अपना कष्ट कम लगने लगेगा। भगवान को याद किया करो। ऐसा नहीं करना की हे भगवन्! आपकी कृपा (आहार) उन पर तो बरस गयी अब हमारे ऊपर भी बरसनी चाहिये, अपितु ऐसी भावना करें की जिसे भी ज्यादा कष्ट है, उन पर बरसनी चाहिये।

आप लोगो को कहना चाहिये कि हे भगवन्! हमारे हिस्से का भी उन्हें दे दो। बड़े जो होते हैं वे कहते हैं कि हमारे हिस्से का भी छोटे को ही दे दें। दूसरों के कष्ट का ध्यान करने से अपने कष्ट भूल जाते हैं। इसी का नाम संयम है। कष्ट-सहिष्णुता परिषह-विजय में कारण होती है। भगवान यहीं से मुक्त हुये, उन्हें देखने से कष्ट-सहिष्णु बनते हैं। परिषह विजयी बनते हैं। यह दूसरा दिन हो गया। स्वरूप का उपयोग पूर्ण जागृति के साथ लेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैन

25-1-17 "आओ करें मन शुद्धि का उपक्रम" प्रातः 9.15

अभी आप लोग पूजा कर रहे थे। बोलने के साथ साथ भिन्न-भिन्न थाल में अष्ट द्रव्य सजाकर लाये उसे चढ़ा भी रहे थे। आपको इन सभी के साथ भावों का भी ध्यान रखना चाहिये। आप लोग कहेंगे की हम तो भावों के साथ ही कर रहे थे। अच्छी बात है। स्वामी समन्तभद्र आचार्य कहते हैं कि भाव ही मुख्य है बाकी सब तो उसके साथ जुड़ जाते हैं।

हमारे भाव ही चैतन्य होते हैं बाकी जो चढ़ाया वह तो आलम्बन है। पूजन जब भी करते हैं, तो किसी न किसी द्रव्य की सहायता लेकर की जाती है। इससे क्या सीखा? सीखना तो भावों से है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में बताया कि पूजन

प्रभु की / गुरु की किस प्रकार करें। उसमें किसी सेठ- साहूकार ने प्रसिद्धी नहीं पायी। आचार्य समन्तभद्र देव ने एक मेंढक का नाम लिया। मेंढक जो तिर्यञ्च है, जलचर प्राणी है। कूप- नदी- सरोवर में रहने वाला वह प्राणी है।

उसको कैसे याद किया तो कहते हैं, उसे सुनने में आया कि राजगृही में भगवान का समोशरण लगा है। सभी लोग पूजन करने जा रहे हैं। उसे जातिस्मरण हो आया कि पूर्व में मेरी क्या दशा थी। मैं भी प्रभु की पूजन करने जाऊंगा। वह सोचता है मेरे पास तो कोई हाथी- घोडा आदि नहीं है केवल पांव है इन्हीं के सहारे पहुंच जाऊंगा। खाली हाथ नहीं गया। वहीं से एक फूल मुख में दबा लिया और फुदकता हुआ समोशरण की ओर जा रहा है।

भाव यही है कि मुझे भी अपना कल्याण करना है। समवशरण में जाकर मैं भी प्रभू की पूजा करूंगा। पूर्व पर्याय से ये संस्कार इसके भीतर जाग्रत हो गये। वर्तमान पर्याय के साथ- साथ पूर्व पर्याय के संस्कार भी असर डालते हैं। थोड़ी सी गलती के कारण वह मेंढक पर्याय में आ गया। भावों का खेल तो देखो, उसी के अनुसार भविष्य का निर्धारण होता है। आयु कर्म का बंध कब होता है, पता नहीं चलता। इसलिये हमें भावों को पवित्र बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

जैसे तन (शरीर) को जल के स्नान से पवित्र करते हैं, उसी प्रकार मन का स्नान तो पवित्र भावों से ही होता है। उसमें जल या अन्य द्रव्य काम नहीं करेंगे। भावों से ही अपने मन को उज्ज्वल बना सकते हैं। इसलिये आप चौके में तनशुद्धि- वचन शुद्धि- मन शुद्धि कहते हैं। उसके बोलने पर हम आहार

ले ही ले यह कोई नियम नहीं है। भीतर कैसे भाव है यह भी देखना होता है।

ऊपर भाव अलग होता है और भीतर भाव अलग होता है। क्यों ठीक कह रहा हूं ना मैं ? इन भावों का प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव होता है। कैमरे द्वारा फोटो में ये पकड़ में नहीं आते हैं। भले ही फोटो में न आये किन्तु स्वयं जानता है कि देखो मेरा इसमें पूरा समर्थन नहीं है। जल्दी करके जो इन्हें सही कर लेता है वही नम्बर ले लेता है।

हम स्नानादि कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, अष्ट द्रव्य लेकर प्रभु के सामने खड़े होते हैं, इसलिये ही ये सब रखा है कि हमारे भाव भी पवित्र हो जाये। जब पूजन करते हैं तब मौन रखते हैं, इधर-उधर देखते भी नहीं। इस प्रकार मन-वचन-काय कृत-कारित-अनुमोदना से पूजन आदि सम्पन्न करते हैं। यह प्रतिदिन का कार्यक्रम है। बच्चों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। साथ आते हैं-बैठ जाते हैं। देखते रहते हैं कैसे पूजन करते हैं। गंधोदक भी लगाते हैं। आदर-विनय के साथ वह भी लगाता है। इससे जीवन प्रशिक्षित हो जाता है। कालान्तर में अपने भाव को लगाता है।

यह मन शुद्धि का उपक्रम संक्षेप से बताया। तीसरा वह मेंढक राजा श्रेणिक के हाथी के पांव के नीचे आ जाता है। श्रेणिक समवशरण में पहुंचा ही नहीं वह मेंढक देव बना और इससे पूर्व ही आकर बैठ गया। राजा श्रेणिक जिन्होंने 60 हजार प्रश्न पूछे प्रथम प्रश्न यही पूछा की ये देव कैसा है इसका चिन्ह, विमान आदि अलग ही है। सुनरे हो! चूप मन्डूक मत बनो मण्डूक बनो। वह मेंढक तो तर गया, आप लोगों का क्या होगा (इस कथा को सुनते-सुनते ही हमारा भी कल्याण हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय ! बोलो

25-1-17 "बुलाओ मत- स्वयं आ जाओ" प्रातः 9:15

"अब सौंप दिया इस जीवन को भगवान तुम्हारे हाथों में..." पूजन में गाया।

आप लोग संसार के हाथों में है और भगवान के हाथों मे कहते हैं। समझ में नहीं आता। संसार प्रभु के हाथों में होता तो कभी का मुक्त कर दिये होते। यह संसारी प्राणी कहता कुछ है और करता कुछ है। संसार को चढ़ाते तो कुछ बात बनती। आदत को सुधारना जरूरी है। बिमार तो पड़ा है पर चाहेगा तभी तो होगा। दवाई दे दो- दवाई दे दो, चिल्लाने से नहीं होगा। दवाई बाद मे देंगे पहले रोग के कारण है उसे दूर फेंक दो।

मोह का नाम ही संसार है, आप अपने आप को मोही मानते है या नहीं। मोही है तो निर्मोही होकर आये है या नहीं। ज्ञानसागर जी क्या कहते थे, वे भी यही कहते थे कि मोह को दूर करो। किन्तु Habit में आ गया है, कैसे छोड़ेगे। ये सब बातें तो हो गयी किन्तु सही बात तो यह है कि हम संसार के हाथ में क्यों आ गये। हमने आज तक अपने को प्रभु के हाथों में सौंपा ही नहीं। बल्कि आँख बंद कर मोह के हाथ में सौंप दिया।

इतना होने के बाद भी कह रहे है कि हम इस मोह के कारण ही बचे हुये है। मोह के हाथ में रहोगे तो ऐसे ही रहोगे। कुछ परिवर्तन से काम नहीं होगा पूरे परिवर्तन से ही काम होगा। हम Lift लगा देंगे आपको उसके सहारे पहुँचा देंगे। "दूसरे को मत बुलाओ, स्वयं इधर आ जाओ।" (नसीराबाद वालों से) उन्होंने (गुरुजी) कभी भी मुझे नहीं कहा कि ये मेरी नगरी है।

NOTES DATE

गुरुजी ने कभी एकान्त में भी नहीं कहा फिर आप लोग कैसे पब्लिकसीटी कर रहे हो। हमारे भगवान है पर भगवान ने कभी किसी से नहीं कहा कि मैं सिलवानी का हूँ या टड़ा का हूँ।

कल आप लोग खुशी मना रहे थे पर भगवान ने नहीं कहा कि मैं आ गया हूँ। उनके स्वभाव में और अपने स्वभाव में क्या अन्तर है? देखो और पहचानो। दूसरे के सामने जाकर यह इंसान रोता है। भगवान के सामने जरूर रोये तो कुछ जरूर पाता है। सही दुःख आपको महसूस ही नहीं हो रहा है। वो समझते है जब यह दुख को दुख ही नहीं मानता तो सुख क्या दिखायें। इसप्रकार भगवान किसी को अपने हाथ लेते नहीं, हाँ जो आना चाहे तो उसे बता देते है कि ये मार्ग है, आप स्वयं आ जाओ।

यह ऐसा मार्ग है जिसमें कोई मरम्मत की जरूरत नहीं है। यह अखण्ड मार्ग है। मोक्षमार्ग ऐसा ही मार्ग है जब चाहे - जहाँ चाहे शुरु कर सकते हैं, हाँ रात के 12 बजे भी शुरु कर सकते है। कुछ भजन ऐसे ही हैं जो ऊपर - ऊपर ही बने हुये है। अपनी ही बात को पुष्ट करने में लगे हैं। बाहर आते है तो बात ठण्डी हो जाती है। हम बार - बार निवेदन करवाते ही नहीं। भगवान भी कभी निवेदन नहीं करवाते है।

धीरे - धीरे आयेंगे। कोई बात नहीं, हमारे पीछे भी बहुत सारे भगवान बनने वाले है, उनसे पूछ कर आ जाना। इससे स्पष्ट है कि महाराज नसीराबाद के होते तो एक - आध बार तो कह देते की ये मेरी नगरी है। हमारी दिक्षा से आपको क्या

दिक्कत है। जब उन्होंने कभी पुनः आकर नहीं कहा तो आप क्यों कह रहे हो। इतना अवश्य है कि आप मोह को कम करेंगे तो महाराज (गुरुजी) प्रसन्न होंगे।

अभी तक उस मोह को कितना कम किया? कहने की जरूरत नहीं है। हमें दिख रहा है। भीतर से कम करो तब बात बनेगी। दुकानदार वही होता है जो जागृत रहता है, अन्यथा वही खाता (बहीखाता) हो जायेगा। जो गुरुजी ने कहा था उसे याद करो। जो लोग यहाँ नहीं आ पाये हैं, उन्हें भी जाकर बता देना।

हमें याद है नसीराबाद में बड़ी-बड़ी बिल्डिंग (भवन) में रह रहे हो, रहो। वहाँ मिलट्री भी है या नहीं। है अब तो ज्यादा हो गयी। वह मिलट्री कभी भी आप के मकान को खाली करा सकती है। नसीराबाद का स्वभाव साधु के स्वभाव की तरह है। सदैव ध्यान में रहता है। सभी भवन लीज पर मिले हुये हैं, कभी भी आदेश मिल सकता है खाली करने का। आप सोच लो फिर आपका क्या होगा।

टडा आ जाओ अथवा कहीं भी चले जाओ, कोई पूछता नहीं क्यों की सर्वत्र यही स्थिति है। इसलिये आप लोगों को मोह कम करने से ही संसार कम होगा इस बात का ध्यान सदैव रखना चाहिये। कम करोगे तभी संसार कम होगा अन्यथा वह कभी भी कम होने वाला नहीं है। सभी का मोह कम होवे इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

चिंतन - "सर्दी में यदि कमरा पुरा पैक करके रहते हैं, तो इससे प्राणवायु की कमी हो जाती है, जो आयु कर्म की उदीरणा में कारण होती है।"

NOTES DATE

26-1-17 "भोजन द्वारा भोग से योग तक की यात्रा" प्रातः 9:15

- अभी आप लोगों ने पूजन सुना और किया। जब हम शब्दों के बारे में सोचते हैं तो अपनी-अपनी सोच होती है। तृष्णा के साथ यदि भोजन लिया जाता है तो बंध होता है जो अनन्तकाल तक भटका देता है इसके अतिरिक्त वही भोजन जब आगम के अनुसार लिया जाता है तो अनंतकाल की भटकन को समाप्त कर देता है। आपको कौनसा चाहिये? भोजन तो दोनों तरफ है पर आपको कौनसा लेना है? — — — — — — — — — — — —

— — — — शरीर एक वाहन अथवा दिपक की तरह है जो कुछ न कुछ तेल चाहता है। प्रकाश पाने के लिये तेल डालते हैं तो कोई बाधा नहीं है पर तेल डालकर यदि सो जाते हैं तो वह मात्र बन्ध का ही कारण होगा। इसी प्रकार भोजन लेकर उसे तपस्या में कारण बनाते हैं तो वह गुण का काम कर जाता है। मुनि महाराज के पास एक गुण होता है- भोजन करने का। यदि भोजन नहीं करे तो मुनि ही नहीं बन पायेगा। इतना अवश्य है कि वह आगम के अनुसार ही भोजन करेगा जो श्रावक द्वारा दिया जा रहा है, वही लेगा। — — — — — — — — — — — — —

— — श्रावक क्यों दे रहा है? वह इसलिये कि हम इन जैसी तपस्या नहीं कर पा रहे लेकिन इनकी उस तपस्या में कुछ सहयोग करके ही उसका हिस्सा प्राप्त कर लें। वे भी परम्परा से उस मुक्ति को प्राप्त करेंगे, इन्हें सीधे मिलेगी। दृष्टि के भेद से ये भेद होता है। मोक्षमार्ग में क्या कल्याणकारी है, इसे जानना आवश्यक है हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं जान पाते हैं। हमें चाहिये जिन्होंने इसकी गवेषणा की है, यह मार्ग दिया है उनके दिये मार्ग पर आगे बढ़े। इसके लिये श्रद्धान होना जरूरी है। इसको लेना चाहते हैं तो पहले रस लेना जरूरी है। जैसे गन्ने का रस

NOTES DATE

मशीन से निकालते हैं किन्तु मशीन को रस नहीं आता जब उसी रस को आदिनाथ भगवान को दिया तो क्या हुआ। वह तीज भी अक्षय तृतीया हो गयी। आज ही के दिन मुक्ति को प्राप्त किया कैसे - गन्ने का रस लेने से। आपके घर आये और आपने रस दे दिया। भगवान ने भी आहार संज्ञा की शांति हेतु एवं कर्मो की निर्जरा करने के लिये एक बार लिया और फिर एक वर्ष तक लग गये ध्यान में।

सोचने की बात है उस समय अन्य लोगों को भी दीर्घ संहनन होगा पर उन्हें वही भोजन कर्म बंध में कारण हुआ। मोक्षमार्ग में विवेक का होना बहुत जरूरी है। इसी विवेक के माध्यम से वह कर्म काटने का साधन बना लेता है, पर सचेत रहे। साधन को साधन के रूप में ही स्वीकार करें साध्य न बनायें। भोगभूमी में भी आहार होता है उत्तम - मध्यम - जघन्य अलग - अलग भोगभूमी में अलग - अलग व्यवस्था है किन्तु वह कर्म बन्ध का ही कारण होता है।

वही यहाँ कर्मभूमि में मुनि महाराज भी आहार लेते है पर वह योग साधना के लिये होता है। वे भोग के लिये लेते है और ये योग के लिये लेते है। उसी योग साधना के द्वारा मुक्ति को प्राप्त करता है। इस प्रकार प्रतिदिन पूजा करते हैं, उस पूजा में कुछ न कुछ मांगते है (एक चम्मच जल चढ़ाकर जन्म - जरा - मृत्यु का नाश चाहते है फिर रह ही क्या गया? सब तो मांग लिया। एक जगह दुखा रोग का नाश चाहते है, पर यहाँ बड़े - बड़े लोग बैठे है जो दिन में चार बार खाते है। जो दिन में चार बार खाता है उसका रोग भी उतना ही बड़ा है, जो एक - दो बार खाता है उसका उतना बड़ा नहीं है। बड़ो का रोग भी बड़ा ही होता है, छोटों का रोग

होता होता है।

इस प्रकार इन द्रव्यों का उपयोग औषध के रूप में करता है। ऐसे भले ही मोदक नहीं लेता हो, किन्तु औषध मिली तो लेता है। उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान करने के लिये ही इस शरीर को चलाने के लिये वह लेता है। इससे निकट- भव्य जो होता है वह पार हो जाता है।

ये भी पार है और वो भी पार है किन्तु दोनों में अन्तर है। इस पार संसार है और उस पार अपरम्पार है। उस अपरम्पार को ही पाना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। धुं

27-1-16 "कब करें पुरुषार्थ" — प्रातः 9.15

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में अनेक प्रकार के निमित्त बताते हैं। उनमें से एक यह भी है, दूसरे की ऋद्धी - सिद्धि देखकर के कम ऋद्धी - सिद्धी है उससे तुलना करता है। वह सोचता है ये कैसा पक्षपात है? मैं भी स्वर्ग में ये भी स्वर्ग में, मैं जहाँ से आया ये भी वहीं से आया है। ऐसा सोच - विचार कर रहा है तो ज्ञात हुआ कि इसके लिये वैभव ज्यादा और मेरे लिये कम क्यों मिले।

ये भावों को हमेशा संभालता था, मैं भाव कभी संभालता नहीं था। इसलिये सम्यग्दृष्टि के साथ इससे मेरे वैभव में कमी पड़ गयी। इस बात को उस देव ने स्वीकार कर लिया। उसे जाति-स्मरण हो आया। कभी-कभी अपने से बड़े के प्रति स्पर्धा को सही भावों के साथ समझे तो सम्यग्दर्शन का कारण हो जाता है, गलत भाव रहेगा तो कभी भी सम्यग्दर्शन का कारण नहीं होता। जनता में ये गड़बड़ी है कि इसके कारण ऐसा हुआ। प्रत्येक को अपने

NOTES DATE

किये कर्म का ही फल मिलता है।

दूध में पानी मिलाते है - सब मिलाते है। 4-5 किलो दूध है तो एक- आध लोटा पानी खप जायेगा किन्तु एक लोटा दूध हो और 4-5 किलो पानी तो फिर यही कहा जाता है इन्होंने पानी में दूध मिलाया। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान में जो किया इतना प्रभाव नहीं डालता - पूर्व में जो किया हुआ है वह प्रभाव डालता है। वर्तमान का भी पर विशेष नहीं।

इसलिये सदैव यह ध्यान रखना चाहिये। इसने पूर्व में ऐसा कर्म किया इसीलिये ऐसा वैभव इसे प्राप्त हो रहा है किन्तु वह अभिमान न करें। अभिमान करेगा तो जो मिला है वह भी चला जायेगा और सम्यग्दर्शन भी नष्ट हो सकता है। जो भी वैभव मिला है वह परिणामों पर ही आधारित है। वर्तमान के परिणामो को संभालते हुये अतीत के परिणामों से जो कुछ मिला है उसमें संतोष धारण करना है।

ऐसा करते रहना बहुत बड़ी बात है। तुफान जब चलता है तो परिणाम भी वैसे ही हो जाते है। हमारा ज्ञान वर्तमान में तुफान के सामने दीपक की भाँति है, उसे बुझना ही है। वह तब नही बुझेगा जब कमरे के भीतर हो जहाँ हवा भी है फिर भी दिपक जलता रहेगा। जब कर्म का उदय कम हो तब उस दीपक को देख सकते है, तब कुछ कर सकते है। करने का अवसर आया है तो इधर- उधर देखने लग जाओ तो व्यर्थ ही चला जायेगा। काल/अवसर मत खोवो - चेत सयाने। चुक जाने पर फिर पश्चाताप करता है। सम्यग्दृष्टी पश्चाताप का अनुभव नहीं करता है। वह ताप का अनुभव भी करता है तो यही विचार करता है कि मैंने जो

NOTES DATE

किया है उसी का परिणाम है, यह प्रत्येक समय अनुभव करता हुआ आगे बढ़ता है। बहुत अल्प समय है। देव असंख्यात है, मनुष्य संख्यात है। देवों की सागरोपम आयु होती है जब की मनुष्य की अल्प आयु होती है उसमें भी अकालमरण है देवों का अकाल मरण नहीं होता, यहाँ पर पल-पल अकाल-मरण के साधन मिलते हैं।

यहाँ के तेवर अलग ही है।

तेवर बुंदेलखण्डी शब्द है। मिजाज भी ऐसा है। अपने तेवर को भी व्यवस्थित रखना चाहिये। यद्वा-तद्वा करेंगे तो सब अंधकारमय हो जाता है, कुशलता यही है कि हवा के रुख को देखकर ही प्रयास करना चाहिये। कल वहाँ विद्यालय में प्रवचन हो गया आज तो मौसम ने अपना अलग ही मिजाज कर लिया सूर्य देव ही नहीं आये। आगये। ठीक हो गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

28-1-17 "कैसे करें आत्म हीरे की पहचान" प्रात: 9.15

राजा-महाराजा होते हैं वे कभी भी व्यापारी नहीं होते हैं। व्यापारी जो होते उन्हें भी ठीक-ठाक कर देते हैं। व्यापारी-व्यापारी होता है, महाराजा-महाराजा होता है। पहले व्यापारी दुकान का काम तो करते थे पर उनके संकेत के अनुसार ही काम करते थे। सुनते हैं एक बार एक व्यापारी एक नगरी में आया। सुनने को आया राजा को तो सोचा कई लोग आते हैं, सब लोग अपनी कला का - विद्या कौशल का प्रदर्शन राजा के सामने करना चाहते हैं।

उस व्यापारी ने संकेत वाहक से कहा यह व्यापारी ऐसा नहीं है। आप परख लो। इसीलिये दूर से आपके पास

NOTES

DATE

आये हैं। इसी तरह का संकेत राजा के पास संकेतवाहक ने जाकर दे दिया। राजा ने कहा- बुलाओ।

प्राथमिक वार्तालाप करने के बाद दोनों बैठ गये। राजा ने कहा अपने यहाँ बहुत से व्यापारी आते रहते हैं, हीरे की परख कैसे करते हैं हमें भी अल्प समय में बता देवें। क्यों की लोग जो आते हैं वे 10 में एक भी ठीक ढाक नहीं होता है। उस व्यापारी ने कहा आप मत निकालो हम ही अपना निकाल लेते हैं, आप ही स्वयं उसमें पहचान लेंगे।

उसने अपने पास से एक नग नहीं जैसे आप लोग अर्घ्य चढ़ाने के लिये निकालते हैं वैसे मुट्ठी भरकर निकालकर रख दिया। इसमें से एक निकालना है। उसमें जितने थे सब एक से बढ़कर एक नग थे। हीरे कभी अपना मूल्य नहीं बताता। हीरे के नाम से संसार में सब बिक जाता है। हीरा कभी ना कहे- परख हमारो मोल। एक ही हीरे में खरीदने वाला भी मालामाल और बेचने वाला भी मालामाल हो जाता है क्यों की वह कहता है हमारा मूल्य तो अनमोल है।

अब सुनो ग्राहक कैसे आते है। एक चौकी पर सब रख दिया। सभी नग पर एक-एक ग्राहक आकर बैठ गये किन्तु एक नग ऐसा जिस पर दो ईभी ग्राहक नहीं बैठा। राजा ने कहा - हम तो सबको एक से बढ़कर एक समझ रहे थे बीच में जो एक नग है सर्वप्रथम उसी को उठायें। हाँ महाराज बैठ जाना अलग वस्तु है, किसी के कहने पर पहनना अलग है और स्वयं परखकर उसको पहनने का अनुभव अलग ही है। एक - दूसरे को प्रभावित कर रहे थे। व्यापारी कहता है महाराज

आप भी परख कर सकते हैं। ये बता दो इस नग के ऊपर नजर क्यों नहीं जा रही है। धीरे-धीरे वह राजा की बात को दबाते हुये कहता है, अपनी बात से सभी आपको प्रभावित करेंगे। यदि वे असलियत बता देंगे तो कहीं के नहीं रहेंगे।

इसी तरह दरबार में भी बड़े-बड़े अनमोल रत्न रखते हैं, उनका अलग स्थान रहता है, इसलिये मैं आया हूँ। मैं इसके आगे परख नहीं कर सकता हूँ। महाराज ये एक-एक नग पर मक्खी बैठी है वह हीरे के कारण नहीं बैठी है। मिट्टी को ही तराशकर हीरे का रूप दे दिया है। आप लोग हँस रहे हैं। बीच वाले नग पर मक्खी क्यों नहीं बैठी - सोचो तो। मक्खी और चींटी जल्दी ही पकड़ लेती है।

मिट्टी को तराशकर यह बनाया दक्षिण में कल्लुशक्कर कहते हैं, कल्लु मतलब पत्थर एवं शक्कर मतलब शक्कर होती ही है। बच्चे भी शक्कर से अधिक इसे ही पसंद करते हैं। इसमें चमक होती है। उस मक्खी की दृष्टि में चमक नहीं उसकी गंध एवं रस है। बुद्ध लोगों की यही स्थिति होती है, युं ही खरीदते रहते हैं, पर सही हीरे की परख होना अलग ही है। वह अनमोल होता है वह किसी इन्द्रिय का विषय नहीं होता। आँखों के द्वारा अच्छा लगना मात्र हीरे की सही पहिचान नहीं है। मन कहता है भीतर से की ये ही हीरा है। मनगम्य यह आन्तरिक परख है।

अब उसने बिच वाले को उठाया। मक्खी तो मीठे के कारण आती है पहुलओं के कारण नहीं आती। जो हीरा है वह भी पहुलओं वाला होता है, वह अन्यत्र से नहीं जयपुर से ही जयपुर में भी सब्जीमंडी में नहीं जौहरी बाजार में ही किसी उच्च व्यापारी

NOTES DATE

के यहाँ पाया जायेगा। एक ही नग के लिये पुरा बंडल दे दिया तो उसके सामने कुछ भी नहीं है।

इसी तरह सम्यग्दृष्टि होता है, वह आत्म तत्व की ओर ही नजर रखता है। उसे वह हीरा रूपी आत्म तत्व ही दृष्टि में दिखता रहता है। रत्नत्रय होते हैं। एक रत्न में ही मालामाल तो तीन रत्न में तो मालामाल होगा ही। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र की कभी भी किमत बता नहीं सकते है।

अब आप हीरे की डली एवं मिश्री की डली को अपने पास रखेन्गे। जब कभी भी परख करते रहीयो। मक्खी भी कितनी होशियार है, मिश्री पर ही बैठती है, आप मक्खी की तरह नहीं बनियो, हीरे की परख करीयो, जिससे अपना कल्याण कर सको।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

29-1-17 "आओ मानें बात जिनवाणी की" प्रात: 9.15

आप लोग जब तक बच्चा नादान रहता है तब तक खाने-पीने की चीज इच्छादि जो रहती है उसकी माता का ध्यान रखते है, यह सबको ज्ञात है। बच्चों को भी पीड़ा रहती है कि हमें जो चाहे, जितना चाहे, जब चाहे तब क्यों नहीं देते हैं, कैसे माता-पिता है। माँ जानती है जो चाहेंगो जितना चाहेंगो वो खायेंगो तो बिमार पड़ जायेंगो।

उसी प्रकार जिनवाणी माता कहती है, जिसकी इच्छा होती है उसे तुम कम करो। वह सांसारिक चीजों की बात है, उसमें तुम गाफिल नहीं होना। बच्चों को दे ही नहीं पायेंगो। आप लोग जिनवाणी की बात सुनते तो है, पर कोई भी स्वीकार नहीं कर पाता है, इसीलिये संसार के सभी लोग

भटक रहे हैं। अतः कभी भी अतिमात्रा की किसी वस्तु का सेवन या अति आवेश में नहीं आना यह पाठ जिनवाणी हमें सिखाती है। इतना-इतना, ये-ये करना ऐसा मानने वाला ही श्रावक कहलाता है।

अनंतकाल के संसार को हटाना है तो इसी प्रकार करना पड़ेगा। शुरुआत में अच्छा नहीं लगता किन्तु बाद में वही अच्छा लगता है। रोगी को डाक्टर साहब अच्छे नहीं लगते पर जब वे रोग की चिकित्सा कर आरोग्य दिला देते हैं तो ठीक मानने लगता है। समझदार रोगी ही चिकित्सा लेता है। आप लोग तो समझदारों में ही आते हैं। समझदार कब बनोगे जब विश्वास करोगे। विश्वास होने पर ही रोग से छुटा जा सकता है।

वैद्य जी महाराज जैसा कहेंगे उसी पर विश्वास करेंगे। उसी प्रकार मोह है-लोभ है इन्हें ज्यादा न करियो। धन-दौलत से द्वेष बढ़ता है, नरकादि खोटी गति का भी बंध होता है। इसी तरह देव-शास्त्र-गुरु की बातों पर विश्वास करके सही श्रावक इन सब बातों पर श्रद्धान करता है। (जब माँ का अवसान हो जाता है, बालक भी अब बड़ा हो जाता है उसके उपरान्त वह सोचता है मैं माँगता था तो माँ देती नहीं थी। अब अपने बच्चों को भी वह सीखाता है) हम सभी का यही कर्तव्य है।

हमें सदैव जिनवाणी माँ की बात मान लेना चाहिये। जो पूर्ण मान लेता है उसका पूरा रोग दूर हो जाता है, जो थोड़ा मानता है उसका रोग भी थोड़ा ही दूर होता है। आप ही सोच लो। आपको अपना रोग कितना दूर करना है, पूर्ण अथवा थोड़ा।

अहिंसा परमो धर्म की जय! ॐ

NOTES DATE

30-1-17 "आओं करायें आरक्षण" प्रातः 9.15

सभी कर्मों के बारे में कुछ न कुछ पहचान अवश्य होती है, किन्तु आयु कर्म के बारे में कोई ठिकाना नहीं है, जिसके द्वारा भविष्य का निर्धारण होता है। अभी इन्हें इस भव में आयु कर्म बंध करना है। कौनसी ? जैसी पसन्द करना है। किन्तु ऐसा नहीं है। ग्रन्थों में आयु कर्म को रहस्य कहा है। अन्तराय कर्म को भी उसी में रखा है लेकिन इसे रहस्य इसलिये कहा कि कब उदय में आ जाये पता नहीं लगता, कब बंध हो जाये इसका भी पता नहीं लगता।

जैसे नरक आयु कभी नहीं चाहिये और देवायु हमेशा-हमेशा मांगता रहता है। यह अपने हाथ की बात नहीं, इच्छा की भी बात नहीं है। आयु कर्म का बंध तो करना ही है, ऐसी स्थिति में क्या करोगे। थोड़ा सा संकेत भर हो आये, तो आचार्य कहते हैं जिसने नरक - तिर्यञ्च आयु का बंध कर लिया तो पक्का है अब संयम का कोई लेन-देन नहीं रहेगा। संयम के क्षेत्र में जिसने कदम बढ़ा दिया तो उसे मात्र देवायु का ही बंध होगा। यूं कहें देवायु का बंध करने हेतु संयम की तरफ कदम बढ़ाना आवश्यक है। यह लॉटरी की तरह है।

संयम में दृढ़ रहना चाहिये, संयम छोड़ना नहीं चाहिये। आपको देवायु का ही बंध होगा। यदि संयम को शून्य कर छोड़ दिया तो देवायु का बंध नहीं होगा। इसी प्रकार यदि दूसरी नरकादि आयु का बंध कर लिया तो संयम ले ही नहीं सकता है। इसलिये यदि देवायु का बंध करना है तो आज ही आरक्षण करालो। जैसे अभी यहाँ कलशों का आबंटन हो रहा है। आप लोग अपनी हैसियत के अनुसार यह कर रखते हैं। एक बार सोच

NOTES DATE

सो की, ले लो सब हो जायेगा तो फिर हो ही जाता है।
लक्ष्य प्राप्ति के साधन में परिणामों का बहुत महत्व है। घरिया परिणाम हो गये तो वो भी गया।

आप लोग अब होशियार हो जइये, सावधान हो जइये। हम नहीं जाना चाहते आयु कर्म कहता है, आपको जाना ही पड़ेगा। भाई-बहन, माता-पिता, मित्र सभी अलग जा रहे है पर आपने टिकिट खरीदा है तो आपको ही जाना होगा। उसी अनुसार डब्बे में बैठना पड़ेगा। रोओगे तो भी सुनने वाला कोई नहीं। दो शब्द कहे थे २०० शब्द हो गये। संयम में समय मत गिनो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

31-1-17 " आँगन तो बुहारो " प्रातः 9.15

आप लोगों को ज्ञात होगा, ज्ञात इसलिये कह रहा हूँ। प्रायःकरके आज यह पुरानी बात हो गयी। वही सूर्य, वही चन्द्रमा, वही धरती, वही देश और वही गाँव है किन्तु सूर्य कब तपता है, कब उगता है और कब डूब जाता है आपको पता ही नहीं। यह सब पहले के लोगों को घड़ी का रूप था, आज विज्ञान आ गया है। पहले सूर्य-नक्षत्र-तारागण इत्यादि घड़ी का रूप था। अब नाड़ी पर घड़ी बाँध रखी है। घड़ी चलती रहती है नाड़ी कब रुक जाती पता ही नहीं चलता।

जो व्यक्ति सूर्य के उदय-तपन-अस्ताचल का महत्व नहीं जानता उसके लिये यह उपदेश कार्यकारी नहीं होगा। पहले सूर्योदय से पूर्व उठने को कहा जाता था और आज कहते हैं हमें सूर्य-चन्द्रमा की कोई आवश्यकता ही नहीं है। हम तो अपने मन के अनुसार काम करेंगे। ध्यान रखो आपका

NOTES DATE

आपके मन के अधिन नहीं वह प्रकृति के अधिन है। आप प्राणवायु सात समुद्र पार से भी नहीं ला सकते वह प्रकृति पर ही निर्भर है। आज आपने उस संजीवनी को भूला दी।

समय पास हो रहा है, आपने प्रमाद में उन घड़ियों को निकाला। इसलिये जो तत्त्व मिलना था समाप्त हो गया है। सूर्य के उगते और डूबते दोनों समय एक आभामण्डल होता है आज उससे वंचित हो गये हैं। दिन डूबते समय अंधों में व्यस्त रहते हैं। अंधों में हम तो थोड़े में खायेंगे। आप भोजन को खायेंगे या भोजन आपको खायेगा ये तो वही बता देगा।

महाराज! हमारा बच्चा बिमार सा रहता है। बिमार सा क्यों बोल रहे हो, बिमार ही रहता है ऐसा क्यों नहीं कह रहे। वह थाली में ही देखता रहता है अर्थात खाता ही देखता रहता है, समझ में आया? स्वभाविक जीवन समाप्त हो गया है। जिसके साथ जीना है उसे आत्मसात् करके नहीं चल रहे। ऐसी स्थिति में दशा ऐसी ही होगी। प्रातःकाल की जो सूर्य किरणों का बल बताया अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं हो सकता है।

ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं उस समय को। ब्रह्म स्वरूप मतलब आत्मस्वरूप, स्वतः ही आत्मा में मन लग जाय ऐसा समय है वह। जो व्यक्ति उस समय बैठ जाये तो सहज ही आत्मा के पास पहुँचेगा। कुछ भी करना नहीं है। मात्र 'ॐ' का चिंतन या ओंकार की जाप करो पक्का है कुछ ही दिनों में इसका प्रभाव मिलेगा। इसका संवेदन करोगे तब दूसरा संवेदन अपने-आप कम हो जायेगा। आप देखते होंगे कि

NOTES

DATE

कानों में बाहर की जो आवाज आ रही है उसे बंद कर देते हैं तो भीतर से जो आवाज आती है उसे सुनने की क्षमता आ जाती है। सबके भीतर उस कर्म का क्षयोपशम होता है।

कानों में अंगली डालकर आवाज करो, चीरे से भी करेंगे तो बहुत तेज सुनाई देती है, क्यों की एकाग्रता आ जाती है। यही अपनी आत्मा का संगीत है। इस संगीत से वंचित होकर आज छोटे-छोटे बच्चे के गले में भी यह डब्बी लटका दी है। दुनिया गले में लटका दी पर स्वयं का पता नहीं। हम इसका कभी भी समर्थन नहीं करेंगे। आपने कहा कुछ उपदेश दे दो।

हम वही कहेंगे जो आपके हित में है। दूर करना चाहो तो झाड़ लगाना शुरु कर दो। नगर-पालिका की तरह सफाई का काम शुरु कर दो। ये लोग तो युँ ही सफाई भी और कचरा भी डाल देते हैं। अभी एक चित्र बताया था किसी ने मोदी जी से भी ऊपर उनके हाथ में झाड़ बतायी। ऐसे तिरछी करके सफाई करेंगे। करोड़पती भी अपनी दुकान के आंगन में क्या करता है? बोलो ना।

वीतरागों के नाथ आ रहे हैं। आपने तिथी घोषित कर दी है। अब अपने आंगन में बुहारी लगा लो। अंतरंग के आंगन में दूसरे के द्वारा सफाई नहीं होती। आज तक जितने भी तीर्थंकर हुये हैं अपने ही हाथ से सफाई की तब वहाँ तक पहुंचे हैं। आप लोगों के पास तो समय रहता नहीं हमारे पास तो बिल्कुल है ही नहीं। समय के मामले में मैं बहुत कंजुस हूँ, आप लोग फिर भी उदार हैं, धन्य है ऐसे उदारमन

अहिंसा परमो धर्म की जय

1-2-17 "नाम नहीं- सिद्धान्त देखो" प्रातः 9.15

— आप लोग जानते है कि जब तक निमन्त्रण न दें, तब तक जाना उचित नहीं माना जाता है। (कैसली निवेदन पर) आगे की तो सुनो! ये आप लोगो के यहाँ चलता है, हमारे यहाँ ऐसा नहीं चलता है। हम निमन्त्रण से तो जाते ही नहीं। गृहस्थों में निमन्त्रण से जाते हैं। उनके यहाँ भी गमी हो जाये तो निमन्त्रण की जरूरत नहीं होती। — —

अभी हमारे लिये जल्दी हो गयी। माइक लगायी निवेदन किया ही नहीं हमने शुरु कर दिया। यह उचित नहीं माना जाता, कुछ तो आप लोग कहते कि आशिर्वचन देने की कृपा करें। हमने सोचा सामने वाला आकर बैठ गया - सुनतेही तो आया है। पूछताछ नहीं करो - चालु करो। यहाँ आसपास में गाँव कितने है यह सोचना कठीन है। रोड अलग-अलग होते हुये भी यहाँ गाँव ज्यादा है। गाँव के लिये रोड की जरूरत नहीं, पगडंडीयाँ भी होती है किन्तु उन पगडंडी से भटक भी सकते हैं। — —

बहुत होशियारी से चला जाता है। हम बिना बारहा से सीधे निकले न महाराजपुर गये न ही देवरी गये सीधे ही रसौना आ गये। वहाँ से भी कैसली या पठा नहीं, सीधे पगडंडी से सहजपुर आ गये, उसके उपरान्त तेंदुखेड़ा आ गये। कैसली-पठा वाले उम्मीद लगा रखे थे कि हमारे यहाँ आयेंगे। इसलिये आप आये हैं। एक ही नारा नहीं - हमारे यहाँ पधारो। नारा सार्वजनिक होना चाहिये। धार्मिक नारा होना चाहिये। अहिंसा धर्म के अथवा वितरागता का नारा होना चाहिये। महावीर-महावीर या आदिनाथ-आदिनाथ

भी ज्यादा नहीं, लोग समझ नहीं पायेंगे। नारे अहिंसा वाचक होने चाहिये।

अहिंसा धर्म मतलब हिंसा नहीं होना चाहिये। यह नारा हो गया। पढ़े-लिखे होने से कुछ नहीं हो सकता। हिंसा धर्म नहीं हो सकता। अहिंसा को समझे बिना हिंसा छोड़ेंगे नहीं। पढ़े-लिखे होने से एवं ऐसे नारे लगाने से कुछ नहीं होता, हिंसा छोड़ना जरूरी है। इसमें तत्त्व अपने आप ही आ जाता है।

हिंसा मतलब केवल मारना ही नहीं झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह में भी हिंसा होती है। आपके यहां चार ही को मानते हैं पांचवें को तो हिंसा मानते ही नहीं है, बाकि परिग्रह का तो सम्मान करते हैं। ध्यान रखो परिग्रह का स्वागत नहीं परिग्रह का त्याग करने से स्वागत होता है। यदि परिग्रह बढ़ाना चाह रहे हो तो पाप बढ़ाना चाह रहे हो, ये पांच पाप है।

बेटा जल्दी-जल्दी कमाओ। दादाजी से भी ज्यादा कमाओ। दादाजी जितनी उम्र होगी तब तो कमायेगा। ये सीखा रहे हैं। हम उस परिग्रह को नीति-न्याय एवं तरीके से अपनायेंगे तो सही माना जाता है अन्यथा नहीं। आवश्यक हो तो ही बढ़ाओ, अनावश्यक जो होगा वह तो दुःखदायी होता है। किसी ने कहा - भिखारी के सामने 500 का नोट दे दिया। वह कहता है - हम नहीं लेते। क्यों त्याग कर दिया क्या? नहीं, सरकार ने बंद कर दिया है। इकट्ठा हो रहा है तो बंद कर दिया है। जैसे शराब

NOTES DATE

में इकट्ठा हो जाता है तो बाइपास होता है। केसली से जाने में भी एवं शरीर में भी बाइपास होता है, उसी प्रकार 500 का नोट बंद कर बाइपास चालु कर दो- ऐसा सरकार ने सोचा। जिसके द्वारा अपने को पीड़ा होती थी/खतरा था बाधा होती थी उसका दुसरा रास्ता ये है। वह इकट्ठा करें तो ठीक नहीं होगा।

इसलिये भावों में ज्यादा हिंसा होने लगे, ज्यादा इकट्ठा करना पड़े तो उसे अलग कर दो पहले के लोग ऐसा ही करते थे। जितना आवश्यक है, मौसम - समय - प्रसंग के अनुसार जितना जरूरत है उतना ही रखो। धर्म क्या होता है, इसे समझना है। जैनियों को समझना है।

नाम की अपेक्षा सिद्धान्त के अनुसार चला करो। किसी को मित्र बनाना चाहते हो तो नाम की अपेक्षा अपने सिद्धान्त पर चलो। एक भाव पर चलो तो दुकानदार कहीं भी रहे दूर-दूर से भी आ जायेंगे। चाहे गरीब हो या अमीर हो, छोटा हो या बड़ा हो, कोई भी आ जाये एक ही भाव रखो, एक ही माल रखो तो ये सिद्धान्त पर चला तब हुआ। लोग कहेंगे आप वहाँ जाओ उनका ये नम्बर है वहाँ से ले आओ, एक ही दाम पर मिलेगा।

सामने वाला कहता है आपका क्या भाव है। आप लेना चाहते है तो हम देना चाहते है। हमारा तो एक ही भाव है। एकीभाव स्तोत्र भी है। बाजार में 4-5 भाव बताकर के कुछ लोग नीचे से ऊपर एवं ऊपर से नीचे आते है (ग्राहक - दुकानदार की अपेक्षा)

मांगने से भाव बदलते है तो वहाँ तो बहुत गड़बड़ होगा।

इसी प्रकार हमारे यहाँ अहिंसा है। हिंसा का अभाव होना अहिंसा है। इसी अहिंसा के आधार पर सब जगह अच्छा काम होगा। समय बहुत ज्यादा हो गया। आज ही मेला चालु हो गया ऐसा लगता है। आप लोग पगडंडी से आये या हाइवे से। आप गाड़ी से आये हमारे पास भी गाड़ियाँ है।

11 नं. की गाड़ी नहीं हमारे पास तो एक नं. की गाड़ी है। दोनों पैर कभी भी एक साथ नहीं चलते। एक जमाओ एक उठाओ। गाड़ी से आते है इसलिये समझ में नहीं आता।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

2-2-17 "महत्वपूर्ण है तीर-साधना" प्रातः 9.15

जब कभी भी आप कार्य नहीं कर पाते, कार्य करने की बहुत इच्छा होती है तो उस समय एक बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण होती है। हम कार्य कर रहे है किन्तु हमारी दृष्टि में बहुत सारे कार्य होते हैं, उनमें से जिसको करना है समय का अनुबंध लेकर पूर्ण करने का इरादा करना चाहिये।

अभी ब्रह्मचारी जी ने हमारे सामने माइक रखा। वे सोच रहे होंगे की महाराज अच्छा कहेंगे। हम अच्छा क्यों कहेंगे। उन्होंने सामने रखा पर निशाने पर नहीं रखा। हमें बोलना है बैठकर फोटो नहीं निकालना। जिस समय निशाना लगाया जाता है, बाल मात्र भी अन्तर हो तो निशाना नहीं माना जाता

जब कार्य नहीं होता है तो कहते हैं निशाना चूक गया। यह इरादा करने की बात है, सब अपना कार्य इरादे से ही करते है। जब इरादे से करते हो तो निशाना चुकना नहीं चाहिये।

सिद्धान्त ग्रन्थों मे इसे ऋजु गति कहा। ऋजु का मतलब सीधा। आप लोगो ने धनुष भी देखा होगा और बाण (तीर) भी देखा होगा। धनुष पर तीर कहाँ रखा जाता है, क्या खेंचना है उसे ही ध्यान नहीं रखा तो फिर निशाना क्या लगेगा? तीर को नहीं खेंचा तथा न ही उसे छोड़ा। उसे डोर पर रखा और खेंचा कान तक खेंचा जाता है। सामने देखो - निशाना साधो।

कान तक खेंचों तभी उसे वेग मिलेगा, गति मिलेगी। सामने से जो कमान है उसे भी आगे बढ़ाया जाता है। ये क्षत्रियों का काम है, बनियों का काम नहीं। बनिया दो तरह से निशाना साधता है। एक तो पलड़े की ओर तथा दुसरा कांटे को हाथ से दबाता रहता है। क्षत्रिय और बनिया मे अन्तर है। जब अनुपात से निशाना साधता है तो सावधानी की यह जरूरत की वह दृष्टि को वहीं पर लगाये रखता है।

कौनसी आँख से निशाना लगाना है तो दूसरी आँख को गौण कर देता है। दोनों आँखो से एक साथ निशाना नहीं साधा जाता है। कार्य बहुत है, कठिन भी है। एक - एक कार्य किया जाता है तो सब हो जाते हैं। कहते हैं न "एके साधे सब सधे - सब साधे सब जाय" तहा ग्रन्थका यह इतिहास है। इतने सारे भगवान लाकर सुला दिया। रखकर

देते तो वे आपको सोने नहीं देते। अब जाकर खड़े हो गये हैं। मंत्री जी भी अभी कह रहे थे।

— — — — तीर साधना बहुत महत्त्वपूर्ण है। तीर का मतलब किनारा भी होता है। नारे लगाने वालों को किनारे लगाना बहुत कठिन होता है। अब नारे लगाने की जरूरत नहीं, कुछ ऐसा काम करो जनता आपके नारे लगायेगी। समय आपका हो गया। आप दिशा को भी देखें और बोध को भी देखो। बोध होगा तो ही दिशा काम में आयेगी। दिशा-बोध आपकी दृष्टि में रहे तो आप सफल होंगे।

— — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय।

3-2-17 — "चिराग नहीं, आग जलाओ" — प्रातः 9.15

अंधेरा होता है तो प्रकाश की मांग हो जाती है और प्रकाश होता है तो कौनसी मांग करेंगे। अभी पूजन में कहा ना- "मेरा सारा तम दूर करो।" तम दूर हो गया दीपक के माध्यम से, अब क्या दूर करना चाहोगे? प्रकाश हो गया, अब क्या दूर करना चाहोगे। एक मांग तो 12 घण्टे से कर रहे थे वो भग गया और प्रकाश आ गया। अब भानु ऊपर आ गया उसे देखते रहो।

— — — — पुनः तम को छोड़कर वह निकल गया। आपने छोड़ दिया क्या? उनके अभाव में ऐसा होता है, उनके सद्भाव में क्या होता है, यह भी प्रश्न तो आयेगा। अर्थ यह है कि जिसकी आवश्यकता जितने समय है उसका उतने समय मूल्य होता है, उसके बाद उसका कोई मूल्य नहीं है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। साधन तो साधन होता है वह साध्य नहीं है, हाँ उस साधन से साध्य तक पहुँचा जाता है।

NOTES DATE

"चिराग नहीं आग जलाऊँ तातें, कर्म दग्ध हो।" कर्मों को दग्ध करना है तो क्या करना है? दिपक से नहीं आग से दूर करना है। अभी तक दिपक जलाया।

हम लोगों को अपना इष्ट साध्य जो कर्मों को दहन करना है उसके लिये दिपक भी है और आग भी है। दोनों एक जैसे हैं किन्तु उपयोग में भिन्न-भिन्न हैं। अब सोचना आपको है कि कितना-कितना उपयोग करना है। जितना उपयोग करना था कर लिया तो आगे क्या उपयोग करना है।

पहले आग लगा देते हैं फिर बैठकर देखते रहते हैं। सूर्य प्रकाश एँज होता है। उसी को आरती दिखाते रहोगे तो कहीं तो कहीं बाल्य तो होना ही पड़ेगा। आपकी प्रार्थना पर रुकेगा नहीं। वह सूर्य कहता है मेरा तो काम था वो हो गया। अब जो मंजिल प्राप्त करना चाहता है, वह उस प्रकाश में अपना काम कर लेगा।

वह सूर्य प्रातः उगकर आता है और 12 घण्टे बाद चला जाता है। फिर आप और प्रार्थना कर सकते हैं कि आप जल्दी-जल्दी आ जाना जी। अन्य जितने भी वाहन होते हैं और ट्रेन में अन्तर है। अन्यवाहन में सो सकते हैं पर ट्रेन कभी सोती नहीं। आप गये हैं ट्रेन में? हाँ, महाराज सोते ही आते हैं और सोते ही जाते हैं। वह ट्रेन 365 घण्टे 12 महिने वर्षाऋतु में भी निरन्तर चलती रहती है। उसको चलाने वाले भी 8-8 घण्टे की अपना कर्तव्य करते रहते हैं, ताकि आप सही समय पर अपने गंतव्य पर पहुँच जायें।

इसी तरह से अनादिकाल से मोक्षमार्ग

NOTES DATE

चलाने वाले भी ऐसे ही काम कर रहे हैं। जो यात्री इस मोक्षमार्ग पर चलना चाहते हैं, उनको ले लेते हैं और जो अपनी मंजील पा लेते हैं वे उतरते रहते हैं। आप उन्हें धन्यवाद- धन्यवाद कहते हैं।

हम अपने कर्तव्य के प्रति कितने जागरूक है हमें इससे पाठ लेना चाहिये। प्रकाश प्राप्त होने के बाद हमें क्या करना है, इस पर भी जागरूक रहना चाहिये। प्रकाश मिलने के बाद भी हम सोये रहते है। वह प्रकाश कहता है- हमने तो अपना काम कर दिया।

इसी प्रकार कुछ लोग आ रहे है - कुछ जाने की तैयारी में भी है। जाने के बाद क्या करेंगे। यह उपयोग पर निर्भर है। भले ही कीड़ी की चाल से चलें, प्रकाश पाने के बाद यही मात्र कर्तव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	11/11/2016	पकड़ो मत	इकबाल मैदान, भोपाल	1
2.	12/11/2016	विधान नहीं संविधान रचो	भानपुर, भोपाल	3
3.	13/11/2016	आओं माँजे दृष्टि	भानपुर, भोपाल	4
4.	14/11/2016	गन्ना नहीं करेला	भानपुर, भोपाल	8
5.	15/11/2016	संगत हो वितराग की	भानपुर, भोपाल	9
6.	16/11/2016	मैं नहीं हम को देखें	भानपुर, भोपाल	11
7.	17/11/2016	करो पुरुषार्थ ऊपर उठने का	भानपुर, भोपाल	13
8.	18/11/2016	पकाओ संयम रूपी अग्नि में	भानपुर, भोपाल	15
9.	19/11/2016	श्री फल की सुनों	भानपुर, भोपाल	17
10.	20/11/2016	आत्मा सोती नहीं	भानपुर, भोपाल	19
11.	22/11/2016	कांटे से निकालो कांटे को	भानपुर, भोपाल	21
12.	23/11/2016	कैसे लगायें सही स्टेशन पर मन को	भानपुर, भोपाल	24
13.	24/11/2016	आओ सीखें सही प्रबन्धन	भानपुर, भोपाल	27
14.	25/11/2016	दूर ही रहना सिद्धि से	भानपुर, भोपाल	31
15.	26/11/2016	चलों बनायें गन्धोदक	भानपुर, भोपाल	32
16.	27/11/2016	रखें समय का ध्यान	भानपुर, भोपाल	33
17.	28/11/2016	मन की बात	भानपुर, भोपाल	34
18.	29/11/2016	छोड़ो तो सही - जरूर मिलेगा	भानपुर, भोपाल	37
19.	30/11/2016	देव असंख्यात फिर भी व्यवस्थित	भानपुर, भोपाल	39
20.	6/12/2016	प्राथमिकता तय करें	भानपुर, भोपाल	41
21.	8/12/2016	सत्य स्वरूपी है आत्मा = सांची	सांची	43
22.	9/12/2016	चिरस्थायी विधान है मंदिर निर्माण	विदिशा	44
23.	10/12/2016	साधु है बहता पानी	अहमदपुर	46
24.	11/12/2016	प्रकृति बिन मांगे देती	गढ़ी	47
25.	11/12/2016	कम समय में काम बड़ा	गढ़ी	49
26.	12/12/2016	धार्मिक माहौल त्रैकालिक हो	गैरतगंज	50
27.	12/12/2016	ज्वर मापक यंत्र है - अर्थ	गैरतगंज	52
28.	13/12/2016	असावधानी से बचायें सावधानी		54
29.	14/12/2016	शिक्षा देती प्रकृति	जमुनियाँ	57
30.	15/12/2016	बिन पानी सब सून	सिलवानी	58
31.	16/12/2016	वैभव में भव (संसार) मत देखो	सिलवानी	60
32.	17/12/2016	प्रयोजन पर आधारित हो योजना	सिलवानी	63
33.	18/12/2016	दूरबीन नहीं नजदीक बीन बनों	सिलवानी	64
34.	19/12/2016	मत ड़रो चोट से	सिलवानी	67
35.	20/12/2016	महत्व करंट का - वायर का नहीं	सिलवानी	69
36.	21/12/2016	कर्मरूपी सर्प से ड़रो	सिलवानी	72

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
37.	22/12/2016	पथ संयम बिना चलना नहीं	सिलवानी	75
38.	23/12/2016	समझनें में समझदारी है	सिलवानी	79
39.	24/12/2016	उतारो परिग्रह की पोट	सिलवानी	81
40.	26/12/2016	संसार भिन्नता का राज है कर्म	सिलवानी	84
41.	27/12/2016	अतिरेक बचाता है अकालमरण	सिलवानी	86
42.	28/12/2016	आकृति आत्मा की नहीं	सिलवानी	89
43.	29/12/2019	परिचय से दूर रखती - निरीह वृत्ति	सिलवानी	92
44.	30/12/2016	भरा दिमाग रहमान का	सिलवानी	95
45.	31/12/2016	मान्यता पर आधारित होता दर्द	सिलवानी	100
46.	01/01/2017	आओ सीखें जैन (भारतीय) केमेस्ट्री	सिलवानी	104
47.	02/01/2017	तय तो करो अपना कार्यक्रम - अपना पाठ्यक्रम	सिलवानी	109
48.	03/01/2017	प्रयोग का मतलब सक्रिय सम्यग्दर्शन	सिलवानी	112
49.	04/01/2017	भोजन क्यों करें	सिलवानी	117
50.	05/01/2017	विश्वास करें कर्म-सिद्धांत पर	सिलवानी	120
51.	06/01/2017	दलदल नहीं घट बनाओं मिट्टी से	सिलवानी	123
52.	07/01/2017	आओ दूर करें बिमारी	सिलवानी	126
53.	08/01/2017	कुछ तो सीखो डॉट से	सिलवानी	129
54.	09/01/2017	मिला अवसर मत चूको	सिलवानी	132
55.	10/01/2017	रिश्ता बनाना सीखो	सिलवानी	134
56.	12/01/2017	गुणों की आराधना का नाम गणतंत्री	सिलवानी	136
57.	19/01/2017	महत्व मनोयोग का	सिलवानी	138
58.	20/01/2017	दुर्लभ धर्म ध्यान का करें सदुपयोग	सिलवानी	139
59.	21/01/2017	आओ ओढ़े सहनशीलता का कम्बल	सियरमऊ	142
60.	22/01/2017	सात्विक कर्म है खेती	टड़ा	143
61.	23/01/2017	खान द्वारा शीतली प्राणायाम	टड़ा	147
62.	24/01/2017	आओ करें मन शुद्धि का उपक्रम	टड़ा	149
63.	25/01/2017	बुलाओ मत - स्वयं आ जाओ	टड़ा	152
64.	26/01/2017	भोजन द्वारा भोग से योग तक की यात्रा	टड़ा	155
65.	27/01/2017	कब करें पुरुषार्थ	टड़ा	157
66.	28/01/2017	कैसे करें आत्म हीरे की पहचान	टड़ा	159
67.	29/01/2017	आओं मानें बात जिनवाणी की	टड़ा	162
68.	30/01/2017	आओं करायें आरक्षण	टड़ा	164
69.	31/01/2017	आंगन तो बुहारो	टड़ा	165
70.	01/02/2017	नाम नहीं - सिद्धान्त देखो	टड़ा	168
71.	02/02/2017	महत्वपूर्ण है तीर-साधना	टड़ा	171
72.	03/02/2017	चिराग नहीं, आग जलाओ	टड़ा	173